स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना

उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश

(व्यक्तित्व विकास एवं कॅरियर मार्गदर्शन हेतु स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों के लिए दृष्टि-पथ)

प्रार्थना

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ||

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपद:
शत्रुबुध्दिविनाशाय दीपजोतिर्नामोस्तुते

ॐ असतो मा सद्मय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय ॥

स्मरणीय बातें -

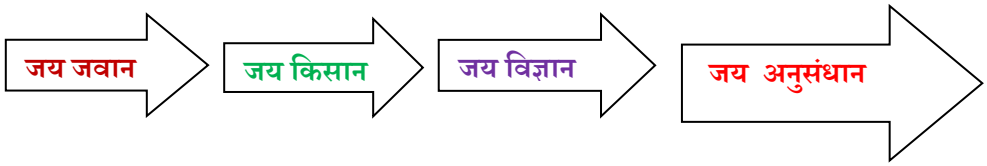

पञ्च प्रण :

(1) भारत को विकसित देश बनाना है।

(2) जीवन से गुलामी का अंश मिटाना है।

(3) हमें अपनी विरासत पर गर्व हो।

(4) एकता और एकजुटता पर जोर।

(5) नागरिकता के पालन पर जोर।

जुलाई

आषाढ़ : धर्म, ईश्वर, परलोक सम्बन्धी धारणाएं कहाँ से आई ? मनुष्य, ईश्वर-ईश्वर करता क्यों घूमता फिरता है ? सभी देशों में, सभी समाजों में, मनुष्य क्यों पूर्ण आदर्श का अन्वेषण करता फिरता है ? इसलिए कि वह भाव उसके भीतर ही विद्यमान है। वह है उसके हृदय की धडक़न, जिसे वह नहीं जानता। वह सोचता है कि बाहर की कोई वस्तु यह ध्वनि कर रही है। वास्तविकता यह है कि उसका आत्मस्वरूप ईश्वर ही उसको अनुसंधान करने को, अपनी उपलब्धि करने को, प्रेरित कर रहा है। यहाँ वहाँ मन्दिर में, गिरजाघर में, विभिन्न स्थानों में, अनेक उपायों से अन्वेषण करने के बाद अन्त में उसने जहाँ से आरम्भ किया था, वहीं अर्थात अपनी आत्मा में ही वह एक चक्कर पूरा करके वापस आता है और देखता है कि जिसकी खोज वह समस्त जगत में कर रहा था, जिसके लिए वह मन्दिरों और गिरजाघरों में जा-जा कातर प्रार्थनाएं किया, आँसू बहाये, जिसको वह सुदूर आकाश में मेघ राशि के पीछे छिपा हुआ अव्यक्त और रहस्यमय समझता रहा , वह उसके निकट ही था। वह था -प्राणों का प्राण , हमारा शरीर, हमारी आत्मा। तुम ही मैं और मैं ही तुम हूं। इसी को आत्मबोध करो। यही मनुष्य जीवन का सार है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : विद्यार्थियों का ट्रेनिंग प्लेसमेंट सेल में उनकी रुचि और पूर्वार्द्ध के मूल्यांकन के आधार पर रोजगार हेतु पंजीयन कराया जाये। स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों की उत्तीर्ण होने के बाद ट्रेकिंग करनी है, अत: उनका ई-मेल आईडी और मोबाइल नम्बर सुरक्षित रखा जाये।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रमुख बिंदु

(उच्चतर शिक्षा के संदर्भ में)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का दृष्टिपथ : राष्ट्रीय शिक्षा नीति को आरंभ करने का मुख्य उद्देश्य भारत को एक ज्ञान महाशक्ति बनाना है। जिससे कि समाज में बदलाव आ सकें। इस नीति के माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध करवाई जाएगी। इसके अलावा इस योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को संवैधानिक मूल्यों, राष्ट्र सर्वोपरि के भाव पर जोर दिया जाएगा। इस नीति से विद्यार्थियों के अंतरमन में भारतीय होने का स्वाभिमान जागृत होगा। इसके अलावा विद्यार्थी ज्ञान, कौशल आदि प्राप्त कर सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रावधान: राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2022 के अंतर्गत केवल उतना ही पाठ्यक्रम रखा जाना प्रस्तावित जितना अनिवार्य है । इसी के साथ क्रिटिकल थिंकिंग पर ज्यादा ध्यान दिया जाएगा। इस नीति के अंतर्गत टेक्नोलॉजी के माध्यम से जैसे कि टी.वी. चैनल, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री, एप आदि से भी पढ़ाई को बढ़ावा दिया जाएगा। समग्र और बहु-विषयक शिक्षा के लिए आई.आई.टी., आई.आई.एम. आदि के तर्ज पर, मेरू (MERU) नामक मॉडल से सार्वजनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाएगी। श्रेणीबद्ध मान्यता की एक पारदर्शी प्रणाली के माध्यम से, महाविद्यालयों को ग्रेडेड, स्वायत्तता देने के लिए चरणबद्ध प्रणाली स्थापित की जाएगी।

प्रवेश और आधारभूत सुविधाएँ : (i) भारत में वहनीय लागत पर उच्चतर शिक्षा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा दिया जाएगा। (ii) विद्यार्थियों को विभिन्न उपायों के माध्यम से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के अन्य विद्यार्थियों की योग्यता को प्रोत्साहित किया जाएगा। (iii) वर्ष 2025 तक, उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से 50% विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान किया जाएगा। (iv) शास्त्रीय, आदिवासी और लुप्तप्राय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास किये जाएंगे। (v) शिक्षा के विभिन्न आयामों को सार्थक बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के सभी प्रकार के प्रयोग व एकीकरण को समर्थन दिया जाएगा। (vi) उच्चतर शिक्षा की ई-शिक्षा की आश्यकताओं पर ध्यान देने के लिए मंत्रालय में डिजिटल बुनियादी ढांचे डिजिटल सामग्री और क्षमता निर्माण की व्यवस्था करने के लिए एक इकाई की स्थापना की जाएगी। (vii) 2030 राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से उच्चतर शिक्षा संस्थानों को बड़े एवं बहु विषयक विश्वविद्यालय ,विद्यालय आदि में स्थानांतरित किया जाएगा। (ix) इस नीति के माध्यम से सार्वजनिक एवं निजी दोनों संस्थानों का विकास किया जाएगा। (x) संस्थानों को अपने कार्यक्रमों की सीटें, पहुंच और सकल नामांकन अनुपात बढ़ाने एवं जीवनपर्यंत सीखने के अवसरों को मुहैया कराने हेतु मुक्त दूरस्थ शिक्षा और ऑनलाइन कोर्स को संचालित करने का अवसर होगा, बशर्ते उन्हें ऐसा करने के लिए मान्यता प्राप्त हो।

स्नातक उपाधि : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में स्नातक उपाधि 3 और 4 वर्ष की अवधि की होगी, जिसमें उपयुक्त प्रमाण-पत्र के साथ निकास के कई विकल्प होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत ग्रेजुएशन की पढ़ाई को अब 4 और 3 साल के टाइम पीरियड में बांटा गया है। जिसमें अब "मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट" की सुविधा दी गयी है। इसके तहत अगर कोई विद्यार्थी ग्रेजुएशन की डिग्री की पढ़ाई बीच में अधूरी छोड़कर जाता है या किसी कारणवश अपनी पढ़ाई पूरी नहीं पाता तो उसे एक साल में सर्टिफिकेट कोर्स, दो साल में डिप्लोमा, और 3 साल में बैचलर्स की डिग्री मिलेगी। वहीं अगर कोई 4 साल की पढ़ाई पूरी करता है तो उसे बैचलर्स के साथ रिसर्च का अवसर भी दिया जाएगा।

अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट (ABC) : नीति के तहत विद्यार्थियों को अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट की सुविधा प्राप्त हो सकेगी। अब से सभी विद्यार्थिओं के अंक, रिपोर्ट, डाक्यूमेंट्स आदि ऑनलाइन या डिजिटली सुरक्षित रखे जाएंगे। पढ़ाई के दौरान सेमेस्टर में क्रेडिट्स मिलेंगे जिसके अंतर्गत कोई भी विद्यार्थी जो किसी कारणवश अपने सेमेस्टर पूरे नहीं कर पाता है तो वो अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए इस अकादमिक बैंक में अपने क्रेडिट्स का प्रयोग करके पढ़ाई बाद (एक निश्चित अवधि) में पूरी कर सकता है। इस बैंक में जमा क्रेडिट का उपयोग वो दूसरे संस्थान में जाने के लिए भी प्रयोग कर सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति महत्वपूर्ण तथ्य: पूर्व की शिक्षा नीतियों में जहां विद्यार्थियों को रटने पर जोर दिया जाता था, अब व्यावहारिक ज्ञान को महत्व दिया जाएगा। वर्तमान शिक्षा नीति विद्यार्थियों को कम उम्र से वैज्ञानिक स्वभाव विकसित करने में मदद करेगी। इस नीति का उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता को वैश्विक मानकों के अनुरूप स्थापित करना है।अब विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए अपने परिसरों को स्थापित करना आसान होगा। विदेश जाने में असमर्थ विद्यार्थियों को भी वैश्विक प्रदर्शन प्राप्त करने में मदद मिलेगी। भारतीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा देगा। भारत में 22 संवैधानिक रूप से मान्य भाषाएं हैं जिन्हें सीखने का अवसर प्राप्त होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति समाज के सभी वर्गों के बीच मतभेदों को दूर करेगी। सरकारी एवं निजी संस्थानों में भी विद्यार्थियों को उनकी संबंधित क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाएगा। वोकेशनल ट्रेनिंग को महत्व देते हुए 2025 तक वोकेशनल पढ़ाई करने वालों का प्रतिशत 50% तक लाने का लक्ष्य रखा है जो अभी तक 5 प्रतिशत से भी कम है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं का ज्ञान रखने वाले शिक्षकों की भर्ती की जाएगी, ताकि अपनी भाषा में विद्यार्थी बिना किसी समस्या के पढ़ सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थियों की शिक्षा के साथ उन्हें शुरूआती कक्षाओं से ही संगीत, नृत्य,योग , मूर्तिकला आदि अन्य कलाओं में भी पारंगत किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में लाइव डैशबोर्ड: राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सफलता को मॉनिटर करने के लिए एक लाइव डैशबोर्ड का आरंभ किया जाएगा। इस डैशबोर्ड के माध्यम से इस पॉलिसी के कार्यान्वयन प्रक्रिया की निगरानी की जाएगी। इस योजना के माध्यम से महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के नीतिगत बदलाव को लागू करने पर जोर दिया जाएगा। शिक्षा मंत्रालय द्वारा 181 कार्यों की पहचान की गई है। जिनको शिक्षा नीति के अंतर्गत पूरा किया जाना है। इन कार्यों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में सब्जेक्ट ऑप्शन, रीजनल लैंग्वेज बेस्ड एजुकेशन, यूनिवर्सिटी डिग्री में प्रवेश एवं निकासी की सुविधा, क्रेडिट बैंक सिस्टम आदि शामिल है। मध्यप्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गोवा सरकार द्वारा एक टास्क फोर्स का भी गठन किया गया है। जो नेशनल एजुकेशन पालिसी के कार्यान्वयन और संबंधित चुनौतियों का अध्ययन करेगी। इसके अलावा शिक्षा मंत्रालय द्वारा मासिक एवं त्रैमासिक आधार पर एक डैशबोर्ड की निगरानी की जाएगी एवं प्रत्येक कार्य की एक समय सीमा तय की जाएगी। जिसकी जानकारी राज्य की एजेंसियों को दी जाएगी। मंत्रालय द्वारा एक इंप्लीमेंटेशन एंड रिव्यू कमिटी का गठन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत किया जाएगा। इसको हायर एजुकेशन डिपार्टमेंट के अधिकारियों द्वारा संचालित किया जाएगा। इस कमेटी के माध्यम से इस पॉलिसी की सफलता का मूल्यांकन किया जाएगा। इसके अलावा क्रेडिट बैंक प्रणाली एवं आईआईटी को बहु विषयक संस्थान में परिवर्तित करने के लिए एक और टास्क फोर्स का गठन किया जाएगा। यदि इस योजना के कार्यान्वयन में विलंब किया जाएगा तो संबंधित राज्य एवं जिला स्तर के अधिकारियों को जवाब देना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश के विकास के लिए एवं बेरोजगारी दर को घटाने के लिए उच्चतर शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा का तात्पर्य है मनुष्य की सभी क्षमताएँ जैसे कि समाजिक, शारीरिक, भावनात्मक, नैतिक आदि को एकत्रित करके विकसित करना। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी में विद्यार्थियों को समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा प्रदान करने का भी प्रावधान रखा गया है। जिससे कि बच्चों का संपूर्ण विकास हो सके। इसके लिए लचीले पाठ्यक्रम को विकसित किया जाएगा। **नई शिक्षा नीति के लाभ-** नेशनल एजुकेशन पालिसी को लागू करने के लिए जीडीपी का 6% हिस्सा खर्च किया जाएगा । पढ़ाई में संस्कृत और भारत की अन्य प्राचीन भाषाएं पढ़ने का विकल्प रखा जाएगा। विद्यार्थी अगर चाहे तो यह भाषाएं पढ़ सकते हैं ?। पढ़ाई को आसान बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल भी किया जाएगा। एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज को मैन सिलेबस में रखा जाएगा।

आचार्य शंकर वाणी :

भजगोविन्दं भजगोविन्दं,गोविन्दं भजमूढ़मते ।
नामस्मरणादन्यमुपायं,नहि पश्यामो भवतरणे ॥

श्रीमद्भगवतगीता

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे ।
साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥

हे महाबाहो! सम्पूर्ण कर्मों की सिद्धि के ये पाँच हेतु कर्मों का अंत करने के लिए उपाय बतलाने वाले सांख्य-शास्त्र में कहे गए हैं, उनको तू मुझसे भलीभाँति जान ॥

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥

इस विषय में अर्थात कर्मों की सिद्धि में अधिष्ठान (जिसके आश्रय कर्म किए जाएँ, उसका नाम अधिष्ठान है) और कर्ता तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के करण एवं नाना प्रकार की अलग-अलग चेष्टाएँ और वैसे ही पाँचवाँ हेतु दैव है ॥

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः॥

मनुष्य मन, वाणी और शरीर से शास्त्रानुकूल अथवा विपरीत जो कुछ भी कर्म करता है- उसके ये पाँचों कारण हैं ॥

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥

परन्तु ऐसा होने पर भी जो मनुष्य अशुद्ध बुद्धि होने के कारण उस विषय में यानी कर्मों के होने में केवल शुद्ध स्वरूप आत्मा को कर्ता समझता है, वह मलीन बुद्धि वाला अज्ञानी यथार्थ नहीं समझता ॥

यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥

जिस पुरुष के अन्तःकरण में 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा भाव नहीं है तथा जिसकी बुद्धि सांसारिक पदार्थों में और कर्मों में लिपायमान नहीं होती, वह पुरुष इन सब लोकों को मारकर भी वास्तव में न तो मरता है और न पाप से बँधता है ॥

रामचरितमानस

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥

फिर प्रभु ने हनुमान्‌जी को बुला लिया। भगवान् ने कहा, तुम लंका जाओ । जानकी को सब समाचार सुनाओ और उनका कुशल समाचार लेकर तुम चले आओ ॥

सब बिधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जीत्यो दससीसा ॥
अबिचल राजु बिभीषन पायो । सुनि कपि बचन हरष उर छायो ॥

हनुमान्‌जी ने कहा, हे माता ! कोसलपति श्री रामजी सब प्रकार से सकुशल हैं । उन्होंने संग्राम में दस सिर वाले रावण को जीत लिया है और विभीषण ने अचल राज्य प्राप्त किया है । हनुमान के वचन सुनकर सीताजी के हृदय में हर्ष छा गया ॥

सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत ।
सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥

जानकीजी ने कहा, हे पुत्र! समस्त सद्गुण तुम्हारे हृदय में बसें, हे हनुमान्! शेष सहित कोसलपति प्रभु सदा तुझ पर प्रसन्न रहें॥

सुनि संदेसु भानुकुलभूषन । बोलि लिए जुबराज बिभीषन ॥
मारुतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥

सूर्य कुलभूषण श्री रामजी ने संदेश सुनकर युवराज अंगद और विभीषण को बुला लिया और कहा,पवनपुत्र हनुमान् के साथ जाओ और जानकी को आदर के साथ ले आओ ॥

बरषहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गगन निसान।
गावहिं किंनर सुरबधू नाचहिं चढ़ीं बिमान॥

देवता हर्षित होकर फूल बरसाने लगे। आकाश में डंके बजने लगे। किन्नर गाने लगे। विमानों पर चढ़ी अप्सराएँ नाचने लगीं॥ जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार। ब्रह्मा जी द्वारा स्तुति -

जय राम सदा सुख धाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे॥
भव बारन दारन सिंह प्रभो। गुन सागर नागर नाथ बिभो॥
तन काम अनेक अनूप छबी। गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी॥
जसु पावन रावन नाग महा। खगनाथ जथा करि कोप गहा॥
जन रंजन भंजन सोक भयं। गत क्रोध सदा प्रभु बोधमयं॥
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार बिभंजन ग्यानघनं॥
अज ब्यापकमेकमनादि सदा। करुनाकर राम नमामि मुदा॥
रघुबंस बिभूषन दूषन हा। कृत भूप बिभीषन दीन रहा॥
गुन ध्यान निधान अमान अजं। नित राम नमामि बिभुं बिरजं॥
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुसलं॥
बिनु कारन दीन दयाल हितं। छबि धाम नमामि रमा सहितं॥
भव तारन कारन काज परं। मन संभव दारुन दोष हरं॥
सर चाप मनोहर त्रोन धरं। जलजारुन लोचन भूपबरं॥
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं। मद मार मुधा ममता समनं॥
अनवद्य अखंड न गोचर गो। सब रूप सदा सब होइ न गो॥
इति बेद बदंति न दंतकथा। रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा॥
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंति तनानन सादर ए॥
धिग जीवन देव सरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे॥
अब दीनदयाल दया करिऐ। मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ॥
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ। दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ॥
खल खंडन मंडन रम्य छमा। पद पंकज सेवित संभु उमा॥
नृप नायक दे बरदानमिदं। चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं॥

बोधवाक्य: ''बीमार अवस्था में सोचते समय यह ध्यान में आया कि सामान्यत: चरित्र जिस प्रकार लिखे जाते हैं, उसी प्रकार मेरी क्षुद्रता तथा प्रमादों पर पर्दा डालकर यदि कोई मेरा चरित्र लिखेगा तो वह पूर्णरूपेण असत्य होगा। जो कोई मेरा चरित्र लिखना चाहता है उसे सम्पूर्ण सत्य लिखना चाहिए। लेखक को ऐसा लिखने में कितना भी संकोच हुआ तो भी सम्पूर्ण सत्य पर प्रकाश डालने वाला चरित्र ही अन्ततोगत्वा पाठकों के लिए हितप्रद सिद्ध होगा।''- टॉलस्टॉय

बोधकथा:

मेरा ईश्वर बड़ा दयालु है

एक राजा का विशाल फलों का बगीचा था, उसमें तरह-तरह के फल होते थे और उस बगीचे की देख-रेख एक किसान अपने परिवार के साथ करता था। वह किसान हर दिन बगीचे के ताज़े फल लेकर राजा के राजमहल में जाता था। एक दिन किसान ने देखा पेड़ों में नारियल, अमरुद, बेर और अंगूर पक कर तैयार हो रहे हैं, किसान सोचने लगा आज कौन-सा फल महाराज को अर्पित करूँ। फिर उसे लगा अँगूर करना चाहिये, क्योंकि वो तैयार हैं। इसलिये उसने अंगूरों की टोकरी भर ली और राजा को देने चल पड़ा !

किसान राजमहल में पहुचा, राजा किसी दूसरे ख्याल में खोया हुआ था और नाराज भी लग रहा था। किसान रोज की तरह मीठे रसीले अंगूरों की टोकरी राजा के सामने रख दी और थोड़ी दूर बैठ गया। अब राजा उसी ख्यालों-ख्यालों में टोकरी में से अंगूर उठाता एक खाता और एक खींच कर किसान के माथे पे निशाना साधकर फेंक देता। राजा का अंगूर जब भी किसान के माथे या शरीर पर लगता था तो किसान कहता था, 'ईश्वर बड़ा दयालु है।' राजा फिर और जोर से अंगूर फेकता था, किसान फिर वही कहता था,'ईश्वर बड़ा दयालु है।'

थोड़ी देर बाद राजा को एहसास हुआ कि वो क्या कर रहा है और प्रत्युत्तर क्या आ रहा है, वो सम्भल कर बैठा। उसने किसान से कहा, 'मैं तुझे बार-बार अंगूर मार रहा हूँ और ये अंगूर तुम्हें लग भी रहे हैं, फिर भी तुम यह बार-बार क्यों कह रहे हो कि 'ईश्वर बड़ा दयालु है।' किसान ने नम्रता से बोला, महाराज ! बागान में आज नारियल, बेर और अमरुद भी तैयार थे, पर मुझे भान हुआ, क्यों न आज आपके

लिये अंगूर ले चलूं। लाने को मैं अमरुद और बेर भी ला सकता था, पर मैं अंगूर लाया। यदि अंगूर की जगह नारियल, बेर या बड़े बड़े अमरुद रखे होते तो आज मेरा हाल क्या होता ? इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि 'मेरा ईश्वर बड़ा दयालु है !!'

मासिक गीत / गान:

यह कल-कल छल-छल बहती, क्या कहती गंगा धारा ?
युग-युग से बहता आता, यह पुण्य प्रवाह हमारा ॥
हम इसके लघुतम जल कण, बनते मिटते हैं क्षण-क्षण।
अपना अस्तित्व मिटाकर, तन मन धन करते अर्पण।
बढते जाने का शुभ प्रण, प्राणों से हमको प्यारा ॥
इस धारा में घुल मिलकर, वीरों की राख बही है।
इस धारा में कितने ही, ऋषियों ने शरण ग्रही है।
इस धारा की गोदी में, खेला इतिहास हमारा ॥
यह अविरल तप का फल है, यह राष्ट्रप्रवाह प्रबल है।
शुभ संस्कृति का परिचायक, भारत माँ का आँचल है।
ढह जायेंगे गिरि पर्वत, काँपे भूमंडल सारा ॥

----------00----------

अगस्त

श्रावण : भारत त्योहारों का देश है। भारत में पूरे वर्ष त्यौहार आते-जाते रहते हैं। जिसमें से एक उत्सव रक्षाबंधन भी है। रक्षाबंधन श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रक्षाबंधन दो शब्दों के मेल से बना है रक्षा + बंधन अर्थात वह बंधन जो रक्षा के लिए बांधा जाए। इस दिन बहन अपने भाई को कलाई पर राखी बांधकर दीर्घायु की कामना करती है और भाई रक्षा का वचन देता है।

एक समय की बात है देवासुर संग्राम में इंद्र देवताओं की ओर से नेतृत्व कर रहे थे। देवासुर संग्राम में देवताओं की पराजय को देखते हुए इंद्राणी ने इंद्र के हाथ पर विजय सूत्र बांधा और यह कामना की इस युद्ध में देवताओं की विजय हो। अंततोगत्वा देवताओं की विजय हुई। रक्षाबंधन स्पष्टतः रक्षा के लिए वचन अथवा बंधन का पर्व है। इस बंधन के कारण आत्मरक्षा तथा शरणागत की रक्षा करना रक्षा सूत्र पहनने/ धारण वाले की जिम्मेदारी हो जाती है। पूर्व समय में ब्राह्मण अपने यजमानों के हाथ/कलाई पर कलावा बांधकर उनसे अपनी रक्षा अपने आश्रम , यज्ञ आदि की रक्षा का प्रण करवाते थे। यजमान उन्हें सुरक्षा और निर्भयता का भरोसा दिलाते थे –" येन बद्धो बलिराजा दानवेंद्रो महाबलाः तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल।"

एक दूसरा प्रसंग आता है कि जब श्रीकृष्ण शिशुपाल का चक्र सुदर्शन से वध कर रहे थे, तब उनकी तर्जनी उंगली में चोट आई , जिसके कारण उनकी उंगली से कुछ रक्त की बूंदे गिरने लगीं। इस दृश्य को द्रोपदी ने देखकर बिना देर किये कृष्ण की उंगली को अपनी साड़ी के पल्लू से बांधा और रक्त की धारा को रोका। इस पर श्रीकृष्ण ने हमेशा द्रौपदी की रक्षा का व्रत लिया। जब दुशासन द्रौपदी का चीरहरण कर रहा था तब श्रीकृष्ण उनकी सहायता करते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : रोजगार और स्वरोजगार की दृष्टि से पिछले वर्षों में विद्यार्थी द्वारा लिए गए प्रशिक्षण को अद्यतन कराया जाये। विद्यार्थियों को रिज्युम बनाने का अभ्यास कराया जाये। गत वर्ष विद्यार्थियों द्वारा लगाये गए वृक्षों की देखभाल के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

स्वरोजगार एक क्रांतिकारी संकल्पना

वैश्वीकरण के इस युग में स्वरोजगार एक क्रन्तिकारी संकल्पना है और इसे समझना इसके संसाधनों को जानना अति आवश्यक होता जा रहा है। कई युवा लोग जिनके पास शानदार व्यापारिक विचार होते हैं लेकिन व्यवसाय योजना लिखने या उत्पाद या सेवा शुरू करने में उन्हें कठिनाइयाँ होती हैं। किसी व्यवसाय के लिए धन जुटाना भी मुश्किल हो सकता है, खासकर यदि भावी स्व-नियोजित व्यक्ति के पास कोई क्रेडिट रिकॉर्ड नहीं है या उसके पास सीमित कार्य अनुभव है।

1. **स्व-रोजगार चुनने का कारण** : (i) अपने कौशल और विशेषज्ञता को बेचने की इच्छा (ii) एक विचार को साबित करने की इच्छा (iii) यदि आप चुनौती पसंद करते हैं। (iv) आय का दूसरा स्रोत उत्पन्न करना चाहते हैं।
2. **लाभ:** (i) स्वतंत्रता (ii) स्वयं का स्वामित्व (iii) अधिक धन कमाना (iv) रुचि और समय के अनुसार काम करना।
3. **आवश्यक गुण:** (i) रिस्क उठाने की इच्छा (ii) अनिश्चितता की स्वीकृति (iii) नेटवर्क की सहज प्रवृति होना (iv) स्व-अनुशासन (v) कड़ी मेहनत के लिए प्रतिबद्धता (vi) जुनून (vii) ऊर्जा (viii) रचनात्मकता
4. **स्व-रोजगार के बारे में सोचने से पहले कुछ प्रश्न:** (i) क्या मैं जोखिम लेने वाला हो सकता हूं ? (ii) मैं अनिश्चितता का जवाब कैसे दूं ? (iii) क्या मुझे अवसर का पता है ? (iv) मैं कितनी मेहनत कर सकता हूं ? (v) क्या मैं एक यथार्थवादी हूँ ? (vi) क्या मैं उपभोक्ता की नजर से देख सकता हूं ? (vii) मैं कितना संगठित हूँ ? (viii) क्या मैं आगे की योजना बना सकता हूँ ? (ix) क्या मैं नेटवर्किंग कर पाऊंगा ? क्या मैं कंप्यूटर साक्षर हूँ ? (x) क्या मुझे व्यावसायिक जागरूकता है ? (xi) क्या मैं प्रतिबद्ध हूं ? (xii) क्या मैं स्व-प्रेरित हूं ? (xii) व्यावसायिकता का मेरे लिए क्या मतलब है ?।
5. **काम के सामान्य क्षेत्र** : (i) सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) (ii) दृश्य कला (iii) स्वास्थ्य और व्यायाम (iv) संचार (v) माध्यम (vi) प्रदर्शन कला (vii) व्यापार और कानून।
6. **व्यवसाय के प्रकार** : (i) व्यापारी (ii) भागीदारी (iii) लिमिटेड कंपनियां (iv) फ्रेंचाइजी (v) सहकारी समितिया (vi) एक व्यवसाय खरीदना (vii) चिकित्सा और कानूनी चिकित्सक (viii) स्वतंत्र उद्यम (ix) सामाजिक और दान।
7. **व्यवसाय की सफलता:** (i) व्यापार की योजना (ii) स्वरोजगार कौशल(iii) विचार / अवसर साध्यता (iv) बाजार (v) वित्तीय
8. **स्व-रोजगार से सम्बधित कुछ खास बातें** : (i) स्व-नियोजित,उद्यमी,व्यवसाय के स्वामी, शब्द ऐसे किसी व्यक्ति की पहचान करते हैं जो व्यवसाय, अनुबंध या फ्रीलांस गतिविधि के रूप में अपनी कमाई करता है (ii) स्व-नियोजित व्यक्ति वह है, जिसके पास अकेले या काम करने वाले लोगों के साथ या बिना भुगतान कर्मचारियों के साथ नौकरी या गतिविधि है (iii) स्व-रोजगार-निर्माण और माल और सेवाओं के उत्पादन के लिए नए विचारों और तरीकों को लागू करता है।
9. **स्व-रोजगार स्थापित करने हेतु आवश्यक संसाधन :** (i) वैकल्पिक कार्य स्थान (ii) कच्चे माल के लिए स्थानीय बाजार का उपयोग (iii) साहसी पूंजी की आवश्यकता(iv) बैंकिंग और वित्तीय (v) सेवा सदस्यों की जानकारी (vi)उद्यमिता बीमा स्रोत (vii) तकनीकी घटक।
10. **बौद्धिक संसाधन :**(i) ये वे संसाधन हैं जो अमूर्त हैं, लेकिन अक्सर भौतिक संसाधनों से अधिक महत्वपूर्ण नहीं होते। (ii) बौद्धिक संसाधनों के उदाहरणों में शामिल हैं: किसी चीज़ या जानकारी को करने का एक निश्चित तरीका जैसे प्रोप्राइटरी ज्ञान, जो आपके लिए सबसे अच्छा काम करता है। (iii) सिस्टम और प्रक्रिया (iv) ग्राहक ज्ञान (v) आपकी कंपनी का ब्रांड (vi) कॉपीराइट और पेटेंट (vii) ग्राहक डेटाबेस (viii) सेवा-आधारित व्यवसाय के रूप में, बौद्धिक संपदा चीजों को प्राप्त करने और उन्हें अपने तरीके से करने के लिए बहुत अधिक निर्भर है।
11. **मानव संसाधन:** (i) जो लोग उत्पाद या सेवा बनाते हैं (ii) ट्रक ड्राइवर जो उत्पादों को वितरित करते हैं (iii) ग्राहक सेवा एजेंट प्रबंधक जो उत्पादन की देखरेख करते हैं (iv) बिक्री से जुड़े लोग।
12. **वित्तीय संसाधन:** (i) नकद (ii) व्यापार रेखाएँ और ऋण रेखाएँ उद्यम पूंजी (iii) अनुदान और ऋण (iv) कर्मचारियों के लिए स्टॉक विकल्प।
13. **अन्य संसाधन :** (i) प्रौद्योगिकी: मशीनरी, फोटोकॉपियर, अन्य उपकरण कंप्यूटर। (ii) व्यक्ति: व्यावसायिक कौशल, विशेषज्ञ कर्मचारी, ऑपरेटर (iv) बाहरी संसाधन: आपूर्तिकर्ता और उत्पाद / सेवाएँ कंपनी के बाहर (v)अन्य: जैसे, वितरण, वित्तीय, कानूनी,पदोन्नति / विपणन, पेशेवर (vi) सदस्यता: सदस्यता और लाइसेंस।
14. **बिक्री और विपणन:** (i) अपने ग्राहक को जानो (ii) अपने व्यवसाय को बढ़ावा देना (iii) अपने उत्पाद का विज्ञापन करें (iv) अनुबंधों के लिए टेंडरिंग (v) एम-कॉमर्स और ई-कॉमर्स।

15. **वित्त का प्रबंध करना**: (i) व्यक्तिगत वित्त (ii) नकदी प्रवाह (iii) मुनाफे (iv) ओवरहेड्स (v)क्रेडिट/जमा (vi) चालान-प्रक्रिया (vii) बैंक खाते (viii) कर लगाना (ix) वैट के लिए पंजीकरण (x) बुक कीपिंग एंड अकाउंटिंग (xi) ऋण (xii) लोगों को रोजगार (xiii) नौकरी के प्रस्ताव और नौकरी अनुबंध (xiv)बीमा (xv) पेंशन (xvi) विवाद।
16. **निधि :** (i) व्यवसाय शुरू करने के लिए आपको कितने पैसे की आवश्यकता होगी ? (ii) किन संसाधनों और उपकरणों की आवश्यकता होगी ? (iii) क्या आईटी सुविधाएं आवश्यक होंगी ? (iv) आप कहां आधारित होंगे और इसकी लागत क्या होगी ? (v) धन के कौन से स्रोत आप पहले लक्षित करेंगे ? (vi) व्यवसाय शुरू करने के दौरान आप कैसे अपना समर्थन करेंगे ?

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी :

काते कान्ता धनगतचिन्ता,वातुल किं तव नास्ति नियन्ता।
त्रिजगति सज्जन संगतिरैका,भवति भवार्णवतरणे नौका॥

श्रीमद्भगवतगीता

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः॥

ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय - ये तीनों प्रकार की कर्म-प्रेरणा हैं और कर्ता , करण तथा क्रिया ये तीनों प्रकार का कर्म-संग्रह है॥

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने यथावच्छणु तान्यपि॥

गुणों की संख्या करने वाले शास्त्र में ज्ञान और कर्म तथा कर्ता गुणों के भेद से तीन-तीन प्रकार के ही कहे गए हैं, उनको भी तू मुझसे भलीभाँति सुन॥

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्॥

जिस ज्ञान से मनुष्य पृथक-पृथक सब भूतों में एक अविनाशी परमात्मभाव को विभाग रहित समभाव से स्थित देखता है, उस ज्ञान को तू सात्त्विक जान॥

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्॥

किन्तु जो ज्ञान अर्थात जिस ज्ञान के द्वारा मनुष्य सम्पूर्ण भूतों में भिन्न-भिन्न प्रकार के नाना भावों को अलग-अलग जानता है, उस ज्ञान को तू राजस जान॥

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवदल्पंच तत्तामसमुदाहृतम्॥

जो ज्ञान एक कार्यरूप शरीर में ही सम्पूर्ण के सदृश आसक्त है तथा जो बिना युक्तिवाला, तात्त्विक अर्थ से रहित और तुच्छ है- वह तामस कहा गया है॥

रामचरितमानस

अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस।
सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस॥

छोटे भाई लक्ष्मणजी और जानकी जी सहित परम कुशल प्रभु श्रीकोसलाधीश की शोभा देखकर देवराज इंद्र मन में हर्षित होकर स्तुति करने लगे॥

जय राम सोभा धाम। दायक प्रनत बिश्राम॥
धृत त्रोन बर सर चाप। भुजदंड प्रबल प्रताप॥
जय दूषनारि खरारि। मर्दन निसाचर धारि॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भए देव सकल नाथ॥
जय हरन धरनी भार। महिमा उदार अपार॥
जय रावनारि कृपाल। किए जातुधान बिहाल॥
लंकेस अति बल गर्ब। किए बस्य सुर गंधर्ब॥

मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पं सब कें लाग ।।
परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फलु पापिष्ट ।।
अब सुनहु दीन दयाल। राजीव नयन बिसाल ।।
मोहि रहा अति अभिमान। नहिं कोउ मोहि समान ।।
अब देखि प्रभु पद कंज। गत मान प्रद दुख पुंज ।।
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव। अब्यक्त जेहि श्रुति गाव ।।
मोहि भाव कोसल भूप। श्रीराम सगुन सरूप ।।
बैदेहि अनुज समेत। मम हृदयँ करहु निकेत ।।
मोहि जानिऐ निज दास। दे भक्ति रमानिवास ।।
दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ।।
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुजतनु अतुलितबलं।
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं ।।

बोधवाक्य: " रक्षाबंधन के पवित्र पर्व पर, मन में निश्चय करें कि, स्नेह की सच्ची अनुभूति लेकर कंधे से कंधा मिलाकर अपने वास्तविक बंधुत्व का भाव उत्पन्न कर शुद्ध पवित्र एकात्मक जीवन उत्पन्न करेंगे। यही रक्षाबंधन के पुण्य पर्व पर अपने लिए आह्वान तथा संदेश है।"- एम् एस गोलवलकर 'श्री गुरुजी'

बोधकथा:

संकल्प शक्ति

घनश्याम दास बिड़ला मैट्रिक पास करने के बाद मुम्बई आये, जहां उनके परिवार की सोने-चांदी की दुकान थी। अभिभावक यही सोचते थे कि घनश्याम अपना खानदानी धन्धा सँभालेंगे, लेकिन उनकी रुचि कुछ अलग तरह के काम में थी। तभी उन्होंने देखा कि कोलकाता से जूट मुम्बई में भेजा जाता है, जिसे व्यापारी यहाँ के बाजार में बेचते हैं। उन्होंने कोलकाता के व्यापारी से सम्पर्क किया। व्यापारी ने उनके द्वारा भेजे कुछ रुपयों के एवज में पूरा सामान भेज दिया। एक सप्ताह बीत गया। व्यापारी को पैसा नहीं गया। वह घबराने लगा। इधर घनश्याम दास ने देखा जूट का दाम बढ़ने वाला है। उन्होंने माल नहीं बेचा। कुछ दिन प्रतीक्षा करने की सोची। तब तक कोलकाता के व्यापारी की सूचना आयी कि पैसा भेज दें। घनश्याम दास के पास पैसा आया नहीं था। फिर भी दूसरे से कर्ज लेकर भेज दिया। जब व्यापारी को यह ज्ञात हुआ कि माल अभी तक बिका नहीं, फिर भी घनश्याम दास ने पैसा भेज दिया, वह अभिभूत हो गया। अब क्या कहना था ? घनश्याम आदेश देते और सामान हाजिर। घनश्याम की विश्वसनीयता के गुण ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया । धन्य थी उनकी संकल्प शक्ति।

मासिक गीत/गान:

धन्य धन्य है देश हमारा

झूम -झूम के कहें बहारें, धन्य-धन्य है देश हमारा,
ध्वज अपना ऊंचा लहराये, तिरंगा है दुनिया में न्यारा।

केसरिया की बात न पूछो, कितने गुण को यह है कहता,
ऊर्जा ज्ञान चेतना जागृत, सबको है नवजीवन देता।
त्याग और बलिदान भी इसमें, सद् आदर्श का है ये नारा,

श्वेत रंग माँ शारदा देवी, हंसों की अद्भुत सुंदरता,
बुद्धि ज्ञान विवेक प्रदाता, विश्व उसी से प्रगति है करता।
शांति से है मिलजुल कर रहना, यह संदेश है कितना प्यारा,

धर्म चक्र मानव की शक्ति, जीवन दिशा करे निर्धारित,
सब समान हैं इस दुनिया में, शिक्षा न्याय करे संधारित।

मान बढ़ायें विश्व में ध्वज का, विश्व गुरू का है यह नारा

याद करें हम उन वीरों को, जिन्होंने आजादी दिलवायी,
आज हम अपने वैभव देखें, पर उनने गोली थीं खायी।
शपथ हैं लेते उन वीरों की, होगा सारा विश्व हमारा,

----------00----------

सितम्बर

भाद्रपद: भारतीय चिति चेतना का संवाहक साहित्य होना चाहिए। उसके लिए दो माध्यम हैं, एक प्रकाशित होने वाली सामग्री और दूसरा वैचारिक संवाद। सामग्री के लिए तो विषय वस्तु देकर भी और लेखकों के स्वतंत्र लेखों आदि से भरपाई की जा सकती है। किंतु वैचारिक संवाद वह भी सकारात्मक, थोड़ा-सा दुरूह कार्य है। दुरूह दो कारणों से, एक तो संवाद में गंभीर विचार-मंथन करने वालों की अभिव्यक्ति हो, दूसरा सुधी पाठकों की पूरी शृंखला बौद्धिक चेतना के धनिकों तथा विद्वान कलमों की हो। पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की 'अशोक के फूल' की ये पंक्तियाँ विचारणीय हैं- "धारा रुद्ध न होने पाए। कौन जानता है, भविष्य में उसी धारा में कौन कृति बालक पैदा होकर संसार को नई रोशनी दे जो उसी धारा के प्रवाह में आवाह्न करते हुए धारा की तीक्ष्णता को बनाए रखने का प्रयत्न करता है।"

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : विद्यार्थी को उसकी रोजगार स्वरोजगार और शासकीय अर्ध शासकीय संस्थानों में कार्य करने की रुचि के आधार पर प्रोत्साहित किया जाए। प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने का अभ्यास कराया जाये।

राजभाषा हिन्दी : बाधाएँ, चुनौतियाँ और निदान

महादेवी वर्मा ने कहा है- 'आसेतु हिमाचल फैला हमारा यह राष्ट्र जीवन एक ही भावधारा से जुड़ा है। मत-परिवर्तन या उपासना पद्धति की भिन्नता से राष्ट्रीय भावधारा में व्यवधान नहीं आता हैं। मुसलमान, ईसाई कहीं बाहर से नहीं आए हैं। ये सब हमारे समाज के अविछिन्न अंग हैं, काल-प्रवाह के अनन्त वेग है। किन्हीं कारणों से मतान्तरित हो गए है। जैसे अनन्त स्रोतस्विनी नदियाँ महासागर में मिलकर एकरुप हो जाती है, उसी प्रकार राष्ट्र सिन्धु में इन नाना विध मत-मतान्तरों को भी समाहित हो जाना है। किसी विचार या धर्म के लिए यह आवश्यक है कि वह जिस देश में रहे उस देश की मिट्टी से एकरूप और एक रस होकर जिए। धर्म की भिन्नता से संस्कृति नहीं बदलती है,अपितु राष्ट्र के सांस्कृतिक विकास में विभिन्न सम्प्रदायों का येागदान होता है। धर्म भिन्नता के नाम पर अलग संस्कृति और अलग इतिहास की बात करना भ्रामक और अर्थहीन है। मुझे लगता है यही वास्तविक समाधान है।'

21वीं सदी में भी हमारी बौद्धिक बहस की टांग उन्नीसवीं सदी में फांसी है। यह बेवजह नहीं हैं, हम वर्तमान समय में एक ऐसे बैचारिक धुंधलके में हैं, जिसमें भविष्य-चिंता के साथ अतीत की परंपराओं का भी असंतुलन दिखाना स्वाभाविक है। आचार्य विनोबा कहते हैं, "मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और आसाम से केरल गाँव-गाँव में जाकर भूदान-ग्रामदान का क्रांतिपूर्ण संदेश जनता तक न पहुँचा सकता। यदि मैं मराठी भाषा का सहारा लेता तो महाराष्ट्र के बाहर कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा को लेकर चलता तो कुछ प्रान्तों में काम चलता परन्तु गाँव-गाँव में जाकर क्रांति की बात अंग्रेजी के द्वारा नहीं हो सकती थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि हिन्दी का मुझ पर बड़ा उपकार है। इसने मेरी बड़ी सेवा की है। मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

हॉलैंड के विद्वान आलफांस का कहना कितना सटीक है- "भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती है। उन भाषाओं के बीच में अंग्रेजी कैसे सम्पर्क भाषा बन सकती है ? क्या दिल्ली से हैदराबाद का रास्ता लंदन से होकर गुजरता है ? अंग्रेजी अलगाव पैदा करती है-जनता और नेता के बीच, राजा और प्रजा के बीच। अंग्रेजी हटेगी तो उत्तर भारत के लोग भी दक्षिण की भाषा सीखेंगे। हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान लेना है, प्रादेशिक भाषाओं का स्थान नहीं। 'हिन्दी बढ़ेगी तो अन्य भारतीय भाषाएँ घटेगी या हटेगी', यह ठीक नहीं है।"

भारत में आजादी के पहले हिन्दी कभी भी राजभाषा के रूप में समादृत नहीं हुई, जैसे वैदिक काल में संस्कृत, बौद्ध काल में पालि, मुगलकाल में फारसी और अंग्रेजों के समय अंग्रेजी सत्ता या शासन की भाषा थी। आजादी के बाद पहली बार देश में हिन्दी को जो राजभाषा का दर्जा मिला। हिन्दी जब संविधान सभा में राजभाषा के रूप में स्वीकृत हो गई तब संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने मार्मिक शब्दों में अपना उद्गार प्रकट करते हुए कहा- 'मैं दक्षिण भारत के विषय में एक शब्द कहना चाहता हूँ 1917 में जब महात्मा गांधी चम्पारन में थे और मुझे उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, तब उन्होंने दक्षिण में हिन्दी प्रचार का कार्य आरम्भ करने का विचार किया और उनके कहने पर स्वामी सत्यदेव और गांधीजी के प्रिय पुत्र देवदास गांधी ने वहाँ जाकर यह कार्य आरम्भ किया। बाद में 1918 में हिन्दी

साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन में इस प्रचार कार्य को सम्मेलन का मुख्य कार्य स्वीकार किया गया और वहाँ कार्य चलता रहा। मेरा सौभाग्य है कि मैं गत 32 वर्षों में इस कार्य से सम्बद्ध रहा हूँ- यद्यपि मैं यह घनिष्ट संबंध का दावा नहीं कर सकता। मैं दक्षिण में एक सिरे से दूसरे सिरे को गया और मेरे हृदय में बहुत प्रसन्नता हुई कि दक्षिण के लोगों ने भाषा के संबंध में महामा गांधी के अनुरोध के अनुसार कैसा अच्छा कार्य किया है। मैं जानता हूँ कि उन्हें कितनी ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ा किन्तु उन्हें इस मामले में जो जोश था वह बहुत सराहनीय था। यह कार्य चलता रहा है और दक्षिण के लोगों ने इसे अपनाया है। आज मैं कह नहीं सकता कि वे इस हिन्दी कार्य के लिए कितने लाख व्यय कर रहे हैं, और मुझे याद नहीं कि प्रतिवर्ष कितने परीक्षार्थी परीक्षाओं में बैठते हैं। इसका अर्थ यह है कि इस भाषा को दक्षिण के बहुत से लोगों ने अखिल भारतीय भाषा मान लिया है।'

हिन्दी भारत में सबसे विशाल जनसमूह की बोलचाल की भाषा हैं हिन्दी भारत की एक सम्पर्क भाषा है, जिसे हमारे देश के ओर-छोर तक कम ज्यादा काफी कुछ समझा जाता है। संवैधानिक दृष्टि से, हिन्दी हमारे संघीय गणतंत्र की संवैधानिक राजभाषा है, किन्तु आज संविधान की उद्घोषणा के पचहत्तर वर्ष बाद भी सहयोगी राजभाषा-अंग्रेजी के प्रयोग की अवधि अनंतकाल के लिए आरक्षित लगती है। पढ़ने-पढ़ाने में भी हिन्दी पिछड़ती जा रही है। आने वाली पीढ़ियों के बीच एक ओर अंग्रेजी का अभिजात वर्चस्व बढ़ रहा है, दूसरी ओर प्रादेशिक भाषाओं का ममत्व और अंधाधुंध हिन्दी विरोध। राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा और संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी का भविष्य अंधे गलियारों में भटक रहा है। हिन्दी के लिए राजपथ कभी से बहुत पीछे छूट गया है, किन्तु हिन्दी का जनपथ और जनमानस में विपन्नता और हताशा का काल चक्र बदल रहा है। लगता है भारत-भारती के प्रश्न का उत्तर राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020, "हम कौन थे, क्या हो गए, और क्या होंगे अभी?" देगी।

देना इसलिए भी चाहिए कि "संसार के सभी स्वाधीन देश अपना काम अपनी-अपनी भाषाओं में करते हैं, लेकिन आजादी के 75 साल बाद भी हमारा अधिकांश कामकाज अंग्रेजी में हो रहा है। दूसरे देशों के लोग जब हमें अंग्रेजी में काम करते हुए देखते हैं तो उन्हें आश्चर्य होता है और वे बरबस यह पूछ बैठते हैं कि क्या भारत की अपनी कोई भाषा नहीं है ? ऐसे क्षण हमारे लिए लज्जाजनक होते हैं। देश में राष्ट्रीय स्वाभिमान रखने वाले व्यक्तियों की कमी नहीं है, किन्तु उनमें अकेले ही इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वे जनसाधारण की मानसिकता में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकें। आज आवश्यकता है इस बात की कि ऐसे स्वाभिमानी व्यक्ति सम्मिलित रूप से जनसाधारण की मानसिकता को बदलने का प्रयास करें और उनमें राष्ट्रीय भावना, स्वदेशी भावना को जाग्रत करें, ताकि हम सब एक स्वर में यह कह सकें कि हम हिन्दी हैं, हिन्दुस्तानी हैं। रूस, चीन जर्मनी, जापान, फ्रांस,इटली आदि विकसित देशों से हम सबक लें सकते हैं कि अंग्रेजी के बिना भी प्रगति संभव है, बल्कि अपनी भाषा में हम विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में तीव्र गति से प्रगति कर सकते हैं।"

20 अक्टूबर, 1917 में गांधीजी ने स्पष्ट रूप से कहा कि केवल हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है। सन 1918 में जब गांधीजी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए, उन्होंने बड़ी दृढ़ता के साथ कहा कि जब तक हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर तथा प्रांतीय भाषाओं को जनजीवन में उनका उचित स्थान प्रदान किया जाता, तब तक स्वराज्य की सारी बातें व्यर्थ हैं।

वे आगे कहते हैं "आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है, जिसका एक-एक दल एक-एक प्रांतीय भाषा और उसकी साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा ही नष्ट हो जायेगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रांतीय बोलियाँ जिनमें सुंदर साहित्य सृष्टि हुई है, अपने अपने घर में (प्रांत में) रानी बनकर रहे, प्राप्त के जन-गण की हार्दिक चिंता की प्रकाश भूमिस्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।"

इसी तरह 1918 में गांधीजी ने इंदौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन में कहा था: "भाषा माता के समान है। माता पर हमारा जो प्रेम होना चाहिए, वह लोगों में नहीं है। शिक्षित वर्ग अंग्रेजी के मोह में पंस गया है और अपनी राष्ट्रीय मातृभाषा से उसे असंतोष हो गया है। पहली माता से (अर्थात अंग्रेजी से) जो दूध मिलता है, उसमें जहर और पानी मिला हुआ है और दूसरी माता से (अर्थात हिन्दी से) शुद्ध दूध मिलता है। बिना इस शुद्ध दूध के हमारी उन्नति होनी असंभव है। पर जो अन्धा है, वह देख नहीं सकता और गुलाम नहीं जानता कि अपनी बेड़ियाँ किस तरह तोड़े। पचास वर्षों से हम अंग्रेजी के मोह फंसे हैं। हमारी प्रजा अज्ञान में डूबी रही....हमें ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष में राजकीय सभाओं में, कांग्रेस में, प्रांतीय सभाओं आदि में अंग्रेजी का व्यवहार बिल्कुल त्याग दें। अंग्रेजी सर्वव्यापक भाषा है पर यदि अंग्रेज सर्वव्यापक न रहेंगे, तो अंग्रेजी भी सर्वव्यापक न रहेगी। अब हमें अपनी मातृभाषा को नष्ट करके उसका खून नहीं करना चाहिए। आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का गोरव प्रदान करें।"

16 जून, 1920 के यंग इंडिया में गांधीजी ने दक्षिण वालों के संबंध में लिखा था- "आज अंग्रेजी पर प्रभुत्व करने के लिए वे जितनी मेहनत करते हैं, उसका आठवाँ हिस्सा भी हिन्दी सीखने में करें तो बाकी हिन्दुस्तान के जो दरवाजे आज उनके लिए बन्द हैं, वे खुल जाएं और वे इस तरह हमारे हो जाएँ जैसे पहले कभी नहीं थे। कोई भी दक्षिण भारतीय यह न सोचे कि हिन्दी सीखना जरा भी मुश्किल है। अगर रोज के मनोरंजन में से थोड़ा समय निकाला जाए, तो साधारण आदमी एक साल में हिन्दी सीख सकता है। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि प्रत्येक बालक अद्भुत सरलता से हिन्दी सीख लेता है।"

1916 में लखनऊ में भाषा और लिपि के संबंध में एक सभ हुई, जिसमें लोकमान्य तिलक ने देवनागरी लिपि और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाए जाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया, किन्तु उन्होंने अपना भाषण अंग्रेजी में दिया -"यद्यपि मैं हिन्दी भाषा में बोल नहीं सकता और यह बात मैंने सम्मेलन उद्योगियों से प्रकट भी कर दी थी, फिर भी उन लोगों ने जब आग्रह किया कि अवश्य ही मैं यहाँ आकर राष्ट्रभाषा के विषय में अपने कुछ विचार प्रकट करूँ तो मैंने उस आज्ञा को शिरोधार्य किया।"

सूरीनाम, ट्रिनिडाड, गयाना जैसे देशों की जनसंख्या का लगभग आधा भाग भारतीय मूल के लोगों का है । इनके पूर्वज आज से 250 साल पूर्व मजदूर के रूप में उन देशों में गए थे। आज वे वहाँ के मालिक हैं। आज भी इन भारतवंशियों के अन्दर जिस भारतीयता के दर्शन होते हैं , हिन्दी के प्रति प्रेम दिखता है और संस्कृति को जिस तरह वे अपने सीने से चिपकाए हुए हैं , वह आज भारत में भी नहीं है।

हिन्दी के एक समर्पित विदेशी विद्वान डा. कामिल बुल्के लिखते हैं - "सन् 1918 ई. में भारतीय स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति महात्मा गांधी इसी शर्त पर वाइसराय से मिलने के लिए राजी हुए कि वह हिन्दी में बातचीत करेंगे।" भारत की भावी राजभाषा के विषय में उन्होंने सुस्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि वह भारत के जन साधारण के लिए होगा तो हिन्दी ही संपर्क भाषा हो सकेगी। उन्होंने यह भी लिखा कि देश में जो एकता अंग्रेजी भाषा द्वारा दिखई जाती हे, वह उस वक्त तक ही चल सकती है, जब तक थोड़े से लोग शिक्षा पाते है। जब देश स्वतंत्र होगा और हर बच्चा शिक्षा पाएगा तो वह पढ़ाई विदेशी भाषा में नहीं, बल्कि देश की विभिन्न भाषाओं तमें होगी । उन अलग-अलग भाषाओं को बोलने वालों को मिलाने के लिए उन्होंने हिन्दी को चुना। देश के कुछ प्रदेशों मे एक और कुछ प्रदेशों में दो प्रतिशत लोग कुछ अंग्रेजी जानते हैं, अत: अंग्रेजी के ज्ञान के आधार पर देश की भावात्मक एकता अपूर्ण रहेगीं।अंग्रेजी भाषा प्रजातंत्रवादी भारत की राजभाषा रहने योग्य नहीं है।

" एक बार श्री काका साहब कालेलकर ने गांधीजी से कहा कि अपने जमाने में मराठी की उत्तम सेवा करने वाले महाराष्ट्रीय देशभक्त श्री विष्णु शास्त्री चिपलूणकर अंग्रेजी के बड़े भक्त थे। वे कहते थे- अंग्रेजी तो शेरनी का दूध है। गांधीजी ने तुरन्त कहा -"दुरुस्त है, शेरनी के बच्चे को ही शेरनी का दूध हजम होगा और लाभ करेगा। आदमी के लिए अपनी माता का दूध ही अच्छा है। हम अपने को शेर नहीं बनाना चाहते। हमारी संस्कृति की जो विरासत है वह हमें संस्कृत, हिन्दी, गुजराती आदि देशी भाषाओं के द्वारा ही मिल सकती है।"

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की शताब्दी मनाई जा रही है। उन्होंने सारा जीवन हिन्दी की सेवा में अर्पित कर दिया था। उनका कहना था-"राष्ट्रभाषा का कार्य राष्ट्र को एकता के सूत्र में बद्ध करने एवं भिन्न भिन्न प्रांतों के निवासियों के मिलने में सहायक होना है, इस दृष्टिकोण से हिन्दी में अपनी निजी विशेषताएँ हैं। हिन्दी अब किसी प्राप्त विशेष की भाषा नहीं, अब वह पूरे राष्ट्र की भाषा है।"

पौलेंड निवासी प्रो. मारिया स्टोफा ब्रिस्की ने उचित ही कहा है-" भाषा और भाव का संबंध एक अति महत्वपूर्ण समस्या है। जो भाषा भाव को सीधे हमारे मन की परम गहराइयों तक नहीं पहुंचा पाती है, उस भाषा के माध्यम से हम कभी अपनी अंतरात्मा को व्यक्त नहीं कर पाएँगे, चाहे इसके कितने भी अलग-अलग व्यक्तिगत अपवाद क्यों न हों। भाषा के माध्यम से एक समस्त संस्कृति व समाज दृष्टिगोचर होता है। अंग्रेजी भाषा के हमारे हम विदेशी लोग न भारतीय समाज को ठीक से जान सकते हैं, न उसकी संस्कृति को। भारत की आत्मा को पहचानने के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसी भाँति जर्मनी के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ.लोठार लुत्से का कहना है-" हिन्दी मध्य देश की भाषा के रूप में दुनिया की सेवा कर सकती है, किन्तु हिन्दी के साथ अंग्रेजी नहीं चल सकती है, किन्तु हिन्दी और अंग्रेजी से मामला गड़बड़ होने लगता है। हम विश्व हिन्दी का समर्थन करते हैं मगर यह भी कामना करते हैं कि हिन्दी वाले भी हिन्दी अपनाएँ।"

डॉ.सुनीतिकुमार चटर्जी मानते थे कि "हिन्दी समग्र भू-मंडल की तीसरी भाषा है, विश्व की मानव-संतान के पंचमांश की होनहार राष्ट्रभाषा है। हिन्दी की अभिव्यजंना-शक्ति अपूर्व है।" हमें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि हम हिन्दी को केवल व्यवहार मात्र या शासन की भाषा बनाना चाहते हैं। हमकों तो जैसे इंग्लैड की अंग्रेजी भाषा और फ्रांस की फ्रेंच भाषा है, उसी तरह की भारत की भारती हिन्दी को बनाना है। "अगर मेरे हाथ में तानाशाही सत्ता होती तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए दी जाने वाली हमारे लड़कों और लड़कियों को शिक्षा बंद कर दूँ और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरों से यह माध्यम तुरन्त बदलवा दूँ या उन्हें बर्खास्त करा दूँ। मैं पाठ्य पुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूँगा, वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे -पीछे अपने आप चली आएँगी। यह एक ऐसी बुराई है, जिसका तुरन्त इलाज होना चाहिए।"

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी :

जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः, काषायाम्बरबहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढः,उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः॥

श्रीमद्भगवतगीता

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम ।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥

जो कर्म शास्त्रविधि से नियत किया हुआ और कर्तापन के अभिमान से रहित हो तथा फल न चाहने वाले पुरुष द्वारा बिना राग द्वेष के किया गया हो- वह सात्त्विक कहा जाता है ॥

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्कारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥

परन्तु जो कर्म बहुत परिश्रम से युक्त होता है तथा भोगों को चाहने वाले पुरुष द्वारा या अहंकारयुक्त पुरुष द्वारा किया जाता है, वह कर्म राजस कहा गया है ॥

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् ।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥

जो कर्म परिणाम, हानि, हिंसा और सामर्थ्य को न विचारकर केवल अज्ञान से आरंभ किया जाता है, वह तामस कहा जाता है ॥

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्धयसिद्धयोर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ॥

जो कर्ता संगरहित, अहंकार के वचन न बोलने वाला, धैर्य और उत्साह से युक्त तथा कार्य के सिद्ध होने और न होने में हर्ष -शोकादि विकारों से रहित है- वह सात्त्विक कहा जाता है ॥

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः॥

जो कर्ता आसक्ति से युक्त कर्मों के फल को चाहने वाला और लोभी है तथा दूसरों को कष्ट देने के स्वभाववाला, अशुद्धाचारी और हर्ष-शोक से लिप्त है वह राजस कहा गया है ॥

रामचरितमानस

सुन सुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे ।।
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना । सकल जिआउ सुरेस सुजाना ।।

हे देवराज! सुनो, हमारे वानर-भालू, जिन्हें निशाचरों ने मार डाला है, पृथ्वी पर पड़े हैं । इन्होंने मेरे हित के लिए अपने प्राण त्याग दिए। हे सुजान देवराज! इन सबको जिला दो ।।

सुधा बरषि कपि भालु जियाए । हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए ।।
सुधाबृष्टि भै दुहु दल ऊपर । जिए भालु कपि नहिं रजनीचर ।।

इंद्र ने अमृत बरसाकर वानर-भालुओं को जिला दिया । सब हर्षित होकर उठे और प्रभु के पास आए । अमृत की वर्षा दोनों ही दलों पर हुई। पर रीछ-वानर ही जीवित हुए, राक्षस नहीं ।।

परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि ।
पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि ।।

और परम प्रेम से दोनों हाथ जोड़कर, कमल के समान नेत्रों में जल भरकर, पुलकित शरीर और गद्‌गद् वाणी से त्रिपुरारी शिवजी विनती करने लगे ।।

मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक ।।
मोह महा घन पटल प्रभंजन। संसय बिपिन अनल सुर रंजन ।।
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर। भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ।।
काम क्रोध मद गज पंचानन। बसहु निरंतर जन मन कानन ।।
बिषय मनोरथ पुंज कुंज बन। प्रबल तुषार उदार पार मन ।।
भव बारिधि मंदर परमं दर। बारय तारय संसृति दुस्तर ।।
स्याम गात राजीव बिलोचन। दीन बंधु प्रनतारति मोचन ।।
अनुज जानकी सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर ।।
मुनि रंजन महि मंडल मंडन। तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन ।।

नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार।।

बोधवाक्य: ‘‘करोड़ों लोगों को अंग्रेजी शिक्षण देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। हम स्वराज्य की बात भी पराई भाषा में करते हैं, यह कैसी बड़ी दरिद्रता है।.. जब तक हमारी मातृभाषा में हमारे सारे विचार प्रकट करने की शक्ति नहीं आ जाती और जब तक वैज्ञानिक विषय मातृभाषा में नहीं समझाये जा सकते, तब तक राष्ट्र को नया ज्ञान नहीं हो सकेगा।’’- महात्मा गाँधी

बोधकथा:

काम के पीछे उद्देश्य क्या है ?

महान रसायन शास्त्री आचार्य नागार्जुन को एक ऐसे नवयुवक की तलाश थी जो उनकी प्रयोगशाला में उनके साथ मिलकर रसायन तैयार कर सके। उन्होंने विज्ञप्ति निकाली। दो नवयुवक उनसे मिलने आये। प्रथम नवयुवक को रसायन बनाकर लाने को कहा, फिर दूसरा युवक आया उसे भी यही आदेश दिया। प्रथम नवयुवक दो दिन बाद रसायन लेकर आ गया। नागार्जुन ने पूछा- 'तुम्हें इस काम में कोई कष्ट तो नहीं हुआ?' युवक ने कहा- 'मान्यवर बहुत कष्ट उठाना पड़ा। पिता को उदर कष्ट था, माँ ज्वर से पीड़ित थीं। छोटा भाई पैर पीड़ा से परेशान था कि गाँव में आग लग गई, पर मैंने किसी पर भी कोई ध्यान नहीं दिया। एकनिष्ठ रसायन बनाने में तल्लीन रहा।' नागार्जुन ने ध्यान से सुना। कुछ भी नहीं कहा। युवक सोच रहा था मेरा चुनाव तो निश्चित ही है, क्योंकि अभी तक दूसरा युवक लौटा ही नहीं था।

इसी बीच दूसरा युवक उदास लौटा। नागार्जुन ने पूछा - 'क्यों क्या बात है? रसायन कहाँ गया?' दूसरे नवयुवक ने कहा- मुझे दो दिन का समय चाहिए। मैं रसायन बना ही न सका, क्योंकि जैसे ही बनाने जा रहा था कि एक बूढ़ा रोगी दिखायी पड़ा, जो बीमारी से कराह रहा था। मैं उसको अपने घर ले गया और सेवा करने लगा। अब वह ठीक हो गया, तो मुझे ध्यान आया कि मैंने रसायन तो बनाया ही नहीं। इसीलिए क्षमा याचना के लिए चला आया। कृपया दो दिन का समय दीजिए।

नागार्जुन मुस्कराये और कहा-'कल से तुम काम पर आ जाना'। पहला युवक सोच ही नहीं पा रहा था कि उसे क्यों नहीं चुना गया। नागार्जुन ने पहले युवक से कहा-'तुम जाओ तुम्हारे लिए मेरे पास स्थान नहीं है, क्योंकि तुम काम तो कर सकते हो, लेकिन यह नहीं जान सकते कि काम के पीछे उद्देश्य क्या है ?' वस्तुतः रसायन का काम रोग निवारण है, जिसमें रोगी के प्रति संवेदना नहीं उसका रसायन कारगर नहीं हो सकता। पहला युवक निराश लौट गया।

मासिक गीत / गान :

समर शेष है, उस स्वराज को सत्य बनाना होगा
जिसका है ये न्यास उसे सत्वर पहुँचाना होगा
धारा के मग में अनेक जो पर्वत खडे हुए हैं
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज जो अड़े हुए हैं
कह दो उनसे झुके अगर तो जग में यश पाएंगे
अड़े रहे अगर तो ऐरावत पत्तों से बह जाऐंगे।।
समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो
पथरीली ऊँची जमीन है ? तो उसको तोडेंगे
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे
समर शेष है, अहंकार इनका हरना बाकी है
वृक को दंतहीन, अहि को निर्विष करना बाकी है।।

----------00----------

अक्टूबर

आश्विन: वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता के अनुसार केवल नदी -तीर्थ ही प्रमुख तीर्थ माने जाते हैं। जिन तटों पर यज्ञ हुए जहां ऋषियों ने तप किया अथवा जहां कोई विशिष्ट घटना घटी या युद्ध में असत्य पर सत्य की जीत हुई, वे सभी स्थल तीर्थ माने गए। लोक संस्कृति में नदियों , पर्वतों, वृक्षों, लताओं और पुष्पों से लेकर सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, ग्रीष्म, वर्षा , वंसत आदि ऋतुओं का जिस प्रकार लोक जीवन में महत्व रहा है, उसी तरह नदियों ने भी अपना स्थान बनाया है। इतना ही नहीं नदियां लोक जीवन के अन्तर्द्वद्वों, संघर्षो हर्ष, विषाद की साक्षी रहीं हैं। जल और नदी को शक्ति के रूप में देखने की भावना हमें वैदिक काल से ही मिलती है। (आप:) जल के लिए ऋग्वेद में स्वतंत्र रूप से चार सूक्त आए हैं। नदियों को माता, युवती, वर देने वाली और यज्ञ में उपस्थित रहने वाली देवियां माना गया है। माता के रूप में 'आप:' अग्नि को उत्पन्न करती है। यही 'आप:' वे माताएं हैं जो हमें सुसंस्कृत बनाती हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : छोटे- छोटे समूह बनाकर विद्यार्थियों की समूह चर्चा करायी जाये। सामान्य ज्ञान की दृष्टि से मध्यप्रदेश के भौगोलिक परिचय पर भ्रमण और चर्चा कराई जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

SWOT

SWOT विश्लेषण - किसी संगठन के मजबूत और कमजोर पहलुओं की पहचान उसके वातावरण में तत्वों की जांच करके की जाती है, जबकि पर्यावरणीय अवसरों और खतरों को उसके पर्यावरण के बाहर के तत्वों की जांच करके निर्धारित किया जाता है। इस अर्थ में SWOT विश्लेषण एक रणनीतिक योजना उपकरण है ,जिसका उपयोग किसी संगठन की ताकत, कमजोरियों, अवसरों और खतरों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह ऐसी जानकारी प्रदान करता है जो संगठन के संसाधनों और क्षमताओं को उस प्रतिस्पर्धी माहौल से मिलाने में सहायक होती है जिसमें वह संचालित होता है।

SWOT एनालिसिस: यह दो स्तर से होता है - (1) **आंतरिक विश्लेषण**: (i) ताकत (ii) कमज़ोरी (2) **बाहरी विश्लेषण:** (i) अवसर (ii) चुनौतियाँ।

ताकत (Strength**):** ये ऐसे कारक हैं जिनके पूरा होने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना है-(i) यूजीसी समर्थित कॉलेज। (ii) छात्र नामांकन अनुपात में निरंतर वृद्धि।(iii) कॉलेजों में यूजी और पीजी डिग्री पाठ्यक्रम चलाने की क्षमता है क्योंकि संकाय सदस्य अनुभवी और योग्य हैं।(iv) उच्च शिक्षा विभिन्न योजनाओं और नीतियों के माध्यम से सरकार द्वारा अत्यधिक सब्सिडी और वित्त पोषित है(v) योग्य और प्रतिबद्ध शिक्षण संकाय, युवा और उत्साही कर्मचारी, उच्च शिक्षा के लिए प्रयास प्रमुख ताकत है ।(vi) छात्र कल्याण छात्रवृत्ति। (vii) आर्थिक सहायता।

कमज़ोरी (Weakness**):** ये ऐसे कारक हैं जिनका संस्थान के उद्देश्यों को प्राप्त करने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना है-(i) अधिकांश कॉलेजों के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित और आधुनिक सुविधाओं का अभाव और प्रत्येक विभाग के लिए स्वतंत्र कंप्यूटिंग सुविधाओं का अभाव। (ii) नवीनतम श्रव्य दृश्य सुविधाओं का अभाव।(iii) शिक्षक व्यक्तिपरक ज्ञान के साथ अच्छे होते हैं लेकिन तकनीकी और व्यावहारिक विशेषज्ञता की कमी होती है, इसलिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ।(iv) संसाधनों के इष्टतम उपयोग और खराब संचार कौशल के बारे में जागरूकता की कमी ।(v) निगमों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) के साथ उद्योगों के साथ संपर्क और संपर्क की कमी। (vi) परामर्श में सुधार के लिए बाहरी वातावरण और संस्थान के बीच संपर्क का अभाव

अवसर-(OPPERTUNITIES**)** (i) बाहरी कारक जिनसे संस्थानों के उद्देश्यों को प्राप्त करने या उससे अधिक होने पर आशावादी प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। (i) लक्ष्य जिन पर पहले विचार नहीं किया गया था (iii) सरकारी कार्यों में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग और इंटरनेट सुविधा और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का विकास। (iv) यूजीसी से अनुदान सहायता। (v) आपसी लाभ के लिए विभिन्न स्तरों पर संस्थाओं की नेटवर्किंग, संसाधनों का बंटवारा, प्रमुख परियोजनाएं शुरू करना।

चुनौती- (THREATS)- (i) बाहरी कारक और परिस्थितियाँ जिनका संस्थान के लक्ष्यों को प्राप्त करने पर या उद्देश्य को निरर्थक या अप्राप्य बनाने पर निराशावादी प्रभाव पड़ने की संभावना है। (ii) अधिक संख्या में कॉलेज खोलना और उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षाविदों की अनुपलब्धता। (iii) तेजी से नवाचारों के कारण औसत इनपुट गुणवत्ता और तेजी से तकनीकी परिवर्तन। (iv) अन्य देश में संस्थानों की गुणवत्ता के मामले में बेंचमार्क की कमी के कारण उच्च शिक्षा के घटते मानकों के भीतर से खतरा।

प्रदर्शन समस्या: कहा जाता है कि ज्ञान ही शक्ति है। लेकिन जो चीज ज्ञान को और अधिक शक्तिशाली बनाती है, वही आप उसके साथ करते हैं। छात्रों में इस अवधारणा की कमी प्रतीत होती है; हालाँकि, यह वास्तव में उनकी गलती नहीं है। पिछली भारतीय शिक्षा प्रणाली को केवल परीक्षा की तैयारी और पास करने के लिए अध्ययन करने के लिए, एक छात्र के दिमाग को मानसिक रूप से तैयार करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसने उनमें से कई को यह मानने के लिए बाध्य किया है कि पाठ्येतर गतिविधियाँ महत्वपूर्ण नहीं हैं और अच्छे ग्रेड प्राप्त करना ही सब कुछ है। समस्या यह है कि कॉलेजों के पास अपने छात्रों को यह बताने वाला कोई नहीं है कि यह सच नहीं है। यह कार्य आमतौर पर परामर्शदाताओं द्वारा किया जाता है। लेकिन रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि बड़ी चिंता एक कैरियर परामर्श प्रकोष्ठ की कमी है जो परामर्शदाताओं को छात्रों का मार्गदर्शन करने में सक्षम बनाती है।

कॉलेजों में कैरियर मार्गदर्शन सेल प्लेसमेंट और उद्यमिता के संबंध में प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं क्योंकि कैरियर मार्गदर्शन सार्वजनिक नीति के लिए कोई मामला नहीं है, कैरियर मार्गदर्शन प्रभावी ढंग से वितरित नहीं किया गया है, कैरियर मार्गदर्शन संसाधन नहीं है और रणनीतिक नेतृत्व बराबर नहीं है। उपलब्ध सेवाओं के प्रकारों और उन्हें वितरित करने के तरीकों में अधिक विविधता सुनिश्चित करने के लिए करियर मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है, जिसमें स्टाफिंग संरचनाओं में अधिक विविधता, स्वयं सहायता तकनीकों का व्यापक उपयोग और उपयोग के लिए एक अधिक एकीकृत दृष्टिकोण शामिल है।

कैरियर मार्गदर्शन व्यवसायी कैरियर स्व-प्रबंधन कौशल, बेहतर कैरियर जानकारी, और अधिक विविध सेवा वितरण के विकास के समर्थन में प्रारंभिक और आगे की शिक्षा और प्रशिक्षण योग्यता की प्रकृति को आकार देने में असमर्थ हैं।

समस्या निष्कर्ष: (i) कैंपस में प्लेसमेंट प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या कम है। (ii) छात्र तकनीकी रूप से फिट नहीं थे और भर्ती अभियान में प्रदर्शन करने में असमर्थ थे (iii) उद्यमशीलता के प्रयासों में विश्वास की कमी थी और बाजार का ज्ञान नहीं था। (iv) मेधावी छात्रों पर अधिक ध्यान दें और औसत छात्रों की उपेक्षा करें जिन्हें अधिक मार्गदर्शन की आवश्यकता है। (v) मैंने पाया कि, डिग्री कोर्स पूरा करने के बाद, छात्र सैद्धांतिक भाग से अच्छी तरह वाकिफ थे, लेकिन नौकरी के बाजार में आवश्यक कौशल के साथ गंभीर रूप से कमी थी, उदाहरण के लिए- (a) संचार कौशल (b) तकनीकी कौशल(c) साक्षात्कार कौशल(d) नौकरी उन्मुख प्रशिक्षण(e) उद्यमी कौशल [टीम के खिलाड़ी, समय प्रबंधन, संघर्ष समाधान आदि।

ईएमबी कारक: (i) पर्यावरणीय कारक(ii) प्रेरक कारक (iii) व्यवहार कारक। इस उपकरण का उपयोग सीधे प्रशिक्षण आवश्यकताओं और अन्य गैर-प्रशिक्षण कारकों से जुड़े प्रदर्शन कारकों को अलग करने के लिए किया जाता है, जिन पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है। कारक उस वातावरण में योगदान करते हैं जिसमें वे प्रदर्शन कर रहे हैं, जिसमें सफल प्रदर्शन के लिए आवश्यक सभी उपकरण, सामग्री और रसद समर्थन शामिल हैं। व्यक्तियों को उच्च स्तर पर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया जाता है, अगर उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार कुछ करने के लिए पुरस्कृत किया जाता है। उच्च स्तर पर कार्यों को करने के लिए व्यक्ति के पास आवश्यक व्यवहार (ज्ञान और कौशल) होता है, उन्हें करने की आवश्यकता होती है। संगठन में EMB कारकों को संकलित किया जाता है।

प्रशिक्षण कारक: (i) सही साधनों का अभाव(ii) अनुमति या अधिकार का अभाव (iii) संसाधनों की कमी (iv) अंतिम आउटपुट के बारे में समझ की कमी (3) **Motivational Factors** [Non-training factors] (i) अधिक करने की सजा (ii) कम काम करने के लिए कोई सजा नहीं (iii) काम के तहत पुरस्कृत होना (iv) नेक काम का इनाम न मिलना (v) पर्याप्त जवाबदेही नहीं

Behavioural Factors/ Training factors: (i) वे नहीं जानते कि कैसे करना है (ii) कार्य करना कठिन लगता है (iii) सुनिश्चित नहीं है कि काम सही किया गया है या नहीं (iv) कार्य करने और पूरा करने में धीमा

छात्रों के लिए ईएमबी कारक: (1) **वातावरणीय कारक:**[गैर-प्रशिक्षण कारक](i) उचित बुनियादी ढांचे का अभाव (ii) उपकरणों के नियमित रखरखाव का अभाव (iii) नौकरी के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल की कमी (iv) छात्रों के लिए बाजार कौशल और आवश्यकताओं के बारे में समझ की कमी (2) **प्रेरक कारक:**[गैर-प्रशिक्षण कारक] (i) प्रेरणा परीक्षा उत्तीर्ण करने तक ही सीमित है (ii) उत्कृष्ट छात्रों के लिए पुरस्कार और मान्यता (iii) आत्मनिर्भर और आत्मनिर्भर बनना (3) **व्यवहार कारक:** प्रशिक्षण कारक- (i) व्यावहारिक ज्ञान की कमी के कारण कार्य करने में असमर्थ (ii) मार्गदर्शन और सलाह का अभाव (iii) अनुभव और प्रशिक्षण पर हाथ की कमी (iv). नेतृत्व और प्रशासनिक क्षमता।

उत्तरदायित्व निर्धारण : करियर मार्गदर्शन के लिए परामर्श लक्ष्य पर फोकस: (i) संस्थागत ढांचा -निर्देशक,प्रभारी अधिकारी कैरियर मार्गदर्शन,प्रशिक्षण और नियुक्ति अधिकारी,संकाय शामिल,कार्यालय सहायक,लेखा और लेखा परीक्षा अनुभाग,शिक्षक अभिभावक।

(ii) प्रशासन-प्रबंधन, संकायों का प्रशिक्षण, काउंसिलिंग, सलाह।

कुंजी संकेत : आर = जिम्मेदारी (जरूरी नहीं कि अधिकार), ए = अनुमोदन (वीटो का अधिकार),एस = समर्थन (संसाधनों की ओर),I = सूचित करें (कार्रवाई से पहले परामर्श किया जाना है लेकिन वीटो के अधिकार के बिना)

कारण और प्रभाव विश्लेषण

मछली चित्र : एक मछली के चित्र के माध्यम से दर्शाया जा सकता है कि किस तरह शिक्षक विद्यार्थिओं को स्वरोजगार और रोजगार के लिए तैयार करने में पिछड़ रहे हैं।

प्रतिक्रिया : प्रदर्शन रिपोर्ट और प्रदर्शन समस्या: प्रदर्शन समस्या: शिक्षक,छात्र-छात्राओं को जॉब प्लेसमेंट व उद्यमिता कार्य के लिए तैयार करने में पिछड़ रहे हैं

समस्या के लक्षण : (i) संचार कौशल (ii) तकनीकी कौशल (iii) बाजार की जरूरत के बारे में अनभिज्ञता (iv) पेशेवर कौशल की कमी (v) नौकरी उन्मुख प्रशिक्षण (vi) उद्यमी कौशल [टीम के खिलाड़ी, समय प्रबंधन, संघर्ष समाधान आदि]

समस्या के कारण: (i) प्रशिक्षण की कमी।(ii) निधियों के उचित निवेश और कौशल सुधार के लिए समय का अभाव (iii) अभ्यास और अनुभव की कमी (iv) शिक्षकों में स्वयं को बेहतर बनाने के लिए प्रेरणा की कमी (v) उद्यमिता कौशल के लिए कोई उचित प्रदर्शन नहीं (vi) छात्र शिक्षकों के बीच भावनात्मक बंधन का अभाव (vii) शिक्षण के ऑनलाइन तरीकों से पूरी तरह अवगत नहीं हैं (viii) आभासी शिक्षण उपकरणों से परिचित नहीं हैं।

प्राथमिकता सूची:(1) समस्या : शिक्षक छात्र-छात्राओं को जॉब प्लेसमेंट व उद्यमिता कार्य के लिए तैयार करने में पिछड़ रहे हैं। **(2) प्रशिक्षण निहितार्थ : (i)** ऑनलाइन शिक्षण विधियों और उपकरणों के साथ परिचितता में सुधार करें **(ii)** बेहतर आत्मविश्वास और संचार कौशल **(iii)** केवल व्यक्तिपरक के बजाय विषयों के बारे में बेहतर व्यावहारिक ज्ञान **(iv)** नौकरी बाजार के लोगों के साथ उनके अनुभव से सीखने के लिए एक्सपोजर **(3)** अन्य निहितार्थ:(i) ऐड ऑन और सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किए जाने हैं (ii) प्लेसमेंट जीतने के लिए प्रोत्साहन और पुरस्कार (iii) आत्म सुधार और कौशल वृद्धि की ओर प्रेरणा (iv) टीम निर्माण कौशल में वृद्धि (v) कॉर्पोरेट में अल्पकालिक प्रशिक्षण (vi) स्व-परीक्षा के लिए अध्ययन सामग्री और स्रोत (vii) बाजार की मांग के अनुसार प्लेसमेंट मेलों के कार्यक्रम को संशोधित करें **(4)** वरीयता:01,02,03,04, ।

अनुशंसाएं

(a) प्रशिक्षण निहितार्थ:(i) ऑनलाइन शिक्षण विधियों और उपकरणों के साथ परिचितता में सुधार करें (iii) बेहतर आत्मविश्वास और संचार कौशल (iii) केवल व्यक्तिपरक के बजाय विषयों के बारे में बेहतर व्यावहारिक ज्ञान (iv) नौकरी बाजार के लोगों के साथ उनके अनुभव से सीखने के लिए एक्सपोजर।

(b) गैर-प्रशिक्षण निहितार्थ: (i) ऐड ऑन और सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किए जाने हैं (ii) प्लेसमेंट जीतने के लिए प्रोत्साहन और पुरस्कार (iii) स्व-परीक्षा के लिए अध्ययन सामग्री और स्रोत (iv) टीम निर्माण कौशल में वृद्धि (v) आत्म सुधार और कौशल वृद्धि की ओर प्रेरणा (vi) कॉर्पोरेट में अल्पकालिक प्रशिक्षण (vii) बाजार की मांग के अनुसार प्लेसमेंट मेलों के कार्यक्रम को संशोधित करें।

निकासी

(a) लक्ष्य निर्धारण:(i) प्रवेश पूर्व मार्गदर्शन और परामर्श (ii) छात्रों का स्व-मूल्यांकन (iii) संचार कौशल और सॉफ्ट कौशल का विकास(iv) अवसरों के बारे में मार्गदर्शन/जागरूकता (v) प्रतिस्पर्धी जागरूकता

(b) प्रशिक्षण की योजना: 1. प्रवेश पूर्व मार्गदर्शन और परामर्श और मार्गदर्शन पूर्व-प्रवेश स्तर पर विशेष रूप से मानवता समूह के अनुभाग में दिया जाना चाहिए। प्रवेश पूर्व मार्गदर्शन प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए होगा। स्टाफ की उपलब्धता के अनुसार महाविद्यालय स्तर पर एक पूर्व परामर्श एवं मार्गदर्शन समिति होनी चाहिए जिसमें सभी संकाय सदस्यों को शामिल किया जा सके। 2. छात्रों का स्व-मूल्यांकन और अंतर्निहित क्षमता के स्तर को ऊपर उठाना छात्रों को सहज बनाने और उनकी अंतर्निहित क्षमताओं को सामने लाने के लिए, छात्रों को शुरुआत में विभिन्न उपायों के माध्यम से परामर्श और मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। ट्यूटोरियल, प्रतियोगिताओं का आयोजन, समूह चर्चा, संवादात्मक सत्र, ई-लर्निंग, पुस्तकालय उपयोग आदि। यह वांछनीय है कि नए प्रवेशकों को पर्याप्त अवसर दिए जा सकते हैं अर्थात प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए ताकि वे अपने अवरोधों, यदि कोई हो, को दूर कर सकें। इस प्रक्रिया से उनके आत्मविश्वास का स्तर भी ऊंचा होता है।3. संचार कौशल और सॉफ्ट स्किल का विकास सभी समितियों के लिए यह अनिवार्य होगा कि छात्रों के सॉफ्ट स्किल को बढ़ाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। विभिन्न उपायों के माध्यम से छात्रों के संचार कौशल में सुधार के प्रयास भी किए जा सकते हैं। इस उद्देश्य के लिए जहां भी संभव हो, नजदीकी कॉलेजों/संस्थानों की भाषा प्रयोगशालाओं का उपयोग किया जा सकता है। यह वांछित है कि सभी वर्गों के छात्रों को समान वेटेज दिया जाए। यह अभ्यास छात्रों को किसी भी साक्षात्कार / समूह चर्चा और ऐसी अन्य चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त रूप से आश्वस्त करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए।4. उच्च शिक्षा/प्रतियोगी परीक्षाओं और नौकरियों के अवसरों के बारे में मार्गदर्शन/जागरूकता छात्रों को उनके भविष्य में उच्च शिक्षा की संभावनाओं के बारे में जागरूक किया जा सकता है। उन्हें बाजार/उद्योग में उनकी धारा/विषय में उपलब्ध नौकरी के अवसरों के बारे में जागरूक किया जा सकता है। चूंकि ह्यूमैनिटी ग्रुप में अधिक विषय हैं, इसलिए सामान्य विषयों के लिए ग्रुप कॉम्बिनेशन का गठन निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है ताकि उन्हें किसी

विशेष क्षेत्र / विषय आदि में उपलब्ध अवसरों की जानकारी मिल सके- (i) भाषाएँ (iii) सामाजिक विज्ञान (iii) व्यावहारिक उन्मुख विषय।

प्रशिक्षण की आवश्यकता: (i) स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना (एसवीसीजीएस) 2005-06 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई थी, यह योजना उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और स्कूली शिक्षा (उच्च माध्यमिक) के लिए शुरू की गई थी। (ii) IEHE संस्थान में हर साल छात्रों को सपनों की नौकरी हासिल करने या अपने सपनों के व्यवसाय की दिशा में प्रयास करने और काम करने का अवसर प्रदान किया जाता है, लेकिन दुर्भाग्य से उचित मार्गदर्शन और तैयारी की कमी के कारण अंतिम बाधा से कम हो जाता है ।

प्रशिक्षण का दृष्टिकोण : (i) तीनों स्तरों पर छात्र के समग्र व्यक्तित्व विकास पर काम करें (ii) यूजी और पीजी छात्रों के लिए परिसर मेला का निर्धारण (iii) मौजूदा रोजगार बाजार में आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशाला का आयोजन (iv) हायर सेकेंडरी और यूजी और पीजी स्तर से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को कैरियर मार्गदर्शन प्रदान करें (v) छात्रों के लिए प्रमाणन कार्यक्रम आयोजित करना (vi) एसवीसीजीएस में यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि सरकारी कॉलेजों के छात्र वर्तमान और भविष्य की जरूरतों का सामना करने के लिए उचित रूप से कुशल हैं। अक्सर विभिन्न प्रकार की स्थानीय और कॉर्पोरेट पहल विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को उत्पन्न करती हैं (vi) विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी जागरूकता भी दी जा सकती है। छात्रों को पुस्तकालय के उपयोग, ई-लर्निंग, वेबसाइट के उपयोग, ई-पत्रिकाओं आदि के बारे में जागरूक किया जा सकता है। इस तथ्य पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए कि सभी छात्रों को उनके भविष्य के पाठ्यक्रम को आकार देने के लिए डिग्री के बाद विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से अवगत कराया जाता है।

प्रशिक्षण विवरण: (i) लक्ष्य समूह (ii) कैरियर और प्लेसमेंट सेल के सदस्य- 1(iii) संयोजक 01(iv) ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफिसर - 01(v) कार्यालय सहायक: 1(vi) लेखा और लेखा परीक्षा विभाग - 1(vii) संकाय सदस्य-30 (प्रारंभिक चरण) कुल = 35

दिनवार अनुसूची: (i) प्रशिक्षण दिनांक-04-08-2022 (ii) उत्तरदायित्व परिचय और टीम निर्माण (iii) एसवीसीजीएस (सॉफ्ट स्किल ट्रेनर) (iv) मूल्यांकन और सीखने के उद्देश्य की आवश्यकता है (v) एसवीसीजीएस (टीएनए ट्रेनर) (vi) विज़ुअलाइज़ेशन और अभ्यास (vii) प्रशिक्षण [परामर्श कौशल, संचार कौशल, सुनने का कौशल, सक्रिय सुनने का कौशल, परामर्श कौशल] दिनांक-06-01-2021(viii) एसवीसीजीएस [सॉफ्ट स्किल ट्रेनर] (ix) अंतिम प्रशिक्षण और वैधता समारोह, आईआरक्यू [तत्काल प्रतिक्रिया प्रश्नकर्ता] और प्रतिक्रिया -07-01-2021 (x) एसवीसीजीएस [मुख्य अतिथि]

बजट: (i) 35 प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम की कुल लागत:क्रमांक-(i) भोजनालय और आवास रकम-30,000 (ii) प्रशिक्षण कक्ष / उपयोगिताएँ-(ओएचपी/एलसीडी सहित) 2200 X 10 -22,000 (iii) संसाधन व्यक्ति मानदेय (1000 X 5) 5000(iv) प्रशिक्षण किट (200 X 35)7000(v) पठन सामग्री (50 x 35)1750 (vi) वर्किंग लंच (75 X 35) 2625 (vii) हाई टी (15 X 18 X 2) 540 (viii) इंफ्रास्ट्रक्चर शुल्क- 4000(ix) आकस्मिक व्यय-5000(x) कुल रु.-77915 (xi) प्रति प्रतिभागी लागत-2226 .

कार्य योजना : (i) प्रवेश पूर्व मार्गदर्शन और परामर्श और मार्गदर्शन पूर्व-प्रवेश स्तर पर विशेष रूप से मानवता समूह के अनुभाग में दिया जाना चाहिए। प्रवेश पूर्व मार्गदर्शन प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए होगा। स्टाफ की उपलब्धता के अनुसार महाविद्यालय स्तर पर एक पूर्व परामर्श एवं मार्गदर्शन समिति होनी चाहिए जिसमें सभी संकाय सदस्यों को शामिल किया जा सके। (ii) छात्रों का स्व-मूल्यांकन और अंतर्निहित क्षमता के स्तर को ऊपर उठाना छात्रों को सहज बनाने और उनकी अंतर्निहित क्षमताओं को सामने लाने के लिए, छात्रों को शुरुआत में विभिन्न उपायों के माध्यम से परामर्श और मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। ट्यूटोरियल, प्रतियोगिताओं का आयोजन, समूह चर्चा, संवादात्मक सत्र, ई-लर्निंग, पुस्तकालय उपयोग आदि। यह वांछनीय है कि नए प्रवेशकों को पर्याप्त अवसर दिए जा सकते हैं अर्थात प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए ताकि वे अपने अवरोधों, यदि कोई हो, को दूर कर सकें। इस प्रक्रिया से उनके आत्मविश्वास का स्तर भी ऊंचा होता है (iii) संचार कौशल और सॉफ्ट स्किल का विकास सभी समितियों के लिए यह अनिवार्य होगा कि छात्रों के सॉफ्ट स्किल को बढ़ाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। विभिन्न उपायों के माध्यम से छात्रों के संचार कौशल में सुधार के प्रयास भी किए जा सकते हैं। इस उद्देश्य के लिए जहां भी संभव हो, नजदीकी कॉलेजों/संस्थानों की भाषा प्रयोगशालाओं का उपयोग किया जा सकता है। यह वांछित है कि सभी वर्गों के छात्रों को समान वेटेज दिया जाए। यह अभ्यास छात्रों को किसी भी साक्षात्कार / समूह चर्चा और ऐसी अन्य चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त रूप से आश्वस्त करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए (iv) उच्च शिक्षा/प्रतियोगी परीक्षाओं और नौकरियों के अवसरों के बारे में मार्गदर्शन/जागरूकता छात्रों को उनके भविष्य में उच्च शिक्षा की संभावनाओं के बारे में जागरूक किया जा सकता है। उन्हें बाजार/उद्योग में उनकी धारा/विषय में उपलब्ध नौकरी के अवसरों के बारे में जागरूक किया जा सकता है। चूंकि ह्यूमैनिटी

ग्रुप में अधिक विषय हैं, इसलिए सामान्य विषयों के लिए ग्रुप कॉम्बिनेशन का गठन निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है ताकि उन्हें किसी विशेष क्षेत्र / विषय आदि में उपलब्ध अवसरों की जानकारी मिल सके (1) भाषाएँ।(2) सामाजिक विज्ञान (3) व्यावहारिक उन्मुख विषय। विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी जागरूकता भी दी जा सकती है। छात्रों को पुस्तकालय के उपयोग, ई-लर्निंग, वेबसाइट के उपयोग, ई-पत्रिकाओं आदि के बारे में जागरूक किया जा सकता है। इस तथ्य पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए कि सभी छात्रों को उनके भविष्य के पाठ्यक्रम को आकार देने के लिए डिग्री के बाद विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से अवगत कराया जाता है।

विशिष्ट योजना: **(i) प्लेसमेंट के अवसर:-** सेल की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और यह आउटगोइंग कक्षाओं के छात्रों को सुविधा प्रदान करेगा। "कैरियर मार्गदर्शन, परामर्श और प्लेसमेंट प्रकोष्ठ" प्लेसमेंट/नौकरी कार्यक्रमों/परीक्षाओं/साक्षात्कार आदि के लिए परिसर की व्यवस्था करने के लिए कॉलेज में आने वाली कंपनियों/निजी फर्मों के अनुरोधों की जांच करेगा। कंपनियों/निजी फर्मों की वास्तविक प्रामाणिकता की जांच की जाएगी। प्राचार्य ताकि बाद में छात्रों का शोषण न हो सके। यह वांछनीय है कि जिन कंपनियों/निजी फर्मों ने आईएसओ 9000 प्रमाणित किया है या परिभाषित गुणवत्ता नीति और मानक संचालन प्रक्रियाओं के साथ किसी अन्य आंतरिक गुणवत्ता प्रणाली को लागू किया है, उन्हें ऐसे सभी कार्यक्रमों के लिए वरीयता दी जानी चाहिए। यह सलाह दी जाती है कि किसी भी कंपनी/निजी फर्म को अनुमति देने से पहले पदनाम, पेश किए जाने वाले पैकेज, अनुबंध की अवधि आदि के संबंध में प्लेसमेंट का विवरण भी मांगा जा सकता है और छात्रों को इन सब से अवगत कराया जा सकता है। कैम्पस प्लेसमेंट/नौकरी कार्यक्रमों की व्यवस्था नवंबर से पहले नहीं की जानी चाहिए ताकि नौकरियों के प्रयोजन के लिए किसी भी साक्षात्कार/परीक्षा आदि का सामना करने से पहले छात्रों को अपने कौशल या प्रदर्शन को उन्नत करने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हों।

(ii) **प्रतिपुष्टि :-** यह "कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रकोष्ठ" की जिम्मेदारी होगी कि नौकरी कार्यक्रम/कैंपस प्लेसमेंट में प्रस्तावित नौकरी/प्लेसमेंट का उचित रिकॉर्ड और विवरण रखा जाएगा। नौकरी/नियुक्ति प्रदान करने वाले छात्रों से नियमित फीडबैक भी लिया जा सकता है, ताकि भविष्य की योजना के लिए अच्छे या बुरे अनुभवों का ध्यान रखा जा सके; और इस वर्ष-वार प्लेसमेंट रिकॉर्ड को सत्र के अंत में सेल द्वारा कार्यालय में जमा करना होगा। जैसा कि पहले ही समझाया जा चुका है, ये दिशाएँ प्रकृति में सामान्य हैं। हालाँकि, "कैरियर मार्गदर्शन, परामर्श और प्लेसमेंट सेल" में छात्रों को बेहतर जानकारी प्रदान करने के लिए और गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं। ये सभी दिशानिर्देश प्रॉस्पेक्टस का हिस्सा होंगे, और समितियों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की नियमित रिपोर्ट "कैरियर मार्गदर्शन, परामर्श और प्लेसमेंट सेल" को रिपोर्ट की जाएगी।

डिजाइन का संक्षिप्त विवरण: क्लाइंट/संरक्षक यानी आईईएचई भोपाल के निदेशक के साथ "प्रशिक्षण योजना" सहित विश्लेषण के निष्कर्षों पर चर्चा करने के बाद संक्षेप का परिणाम नीचे दिया गया है - (i) क्रमांक: विवरण विवरण:(ii) ग्राहक के बारे में जानकारी: प्राधिकरण: उच्च शिक्षा के आईईएचई के निदेशक, मप्र सरकार। (iii) विभाग: उच्च शिक्षा, मप्र सरकार।

संदर्भ: (i) जिसमें प्रशिक्षण तैयार किया जा रहा है: पी एंड टी के लिए छात्र के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए (ii) प्रदर्शन की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है: प्लेसमेंट और उद्यमिता के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल(iii) पहचान की गई प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विवरण: साक्षात्कार के लिए, CVect(iv) पूरक गैर-प्रशिक्षण पहल के बारे में जानकारी: कंप्यूटर, स्कैनर और सॉफ्टवेयर की खरीद(v) रिक्त पदों को भरने के लिए नए कर्मचारियों की भर्ती।(vi) प्रशिक्षित किए जाने वाले व्यक्तियों का विवरण : 100 विद्यार्थी।

महत्वपूर्ण बाधाएं : (i) समय और स्थान, (ii) प्रशिक्षण की योजना(iii) प्रशिक्षक(iv) प्राथमिकताएं और साधन

प्रस्तावित प्रशिक्षण का उद्देश्य: (i) संकायों को नौकरी देने और उद्यमिता के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करना (ii) छात्र भविष्य के जीवन के लिए किसी भी परिस्थिति का सामना करने में सक्षम होंगे।(iii) मानक जिसके विरुद्ध परिणामों का मूल्यांकन किया जा सकता है: (iv) नौकरी के साधन के लिए सतर्क रहना और आवश्यक।

निष्कर्ष: (i) एसवीसीजीएस नियोक्ता और प्रतिभाशाली छात्रों के बीच की खाई को पाटता है, जिन्हें इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में इतनी जल्दी इस तरह के उज्ज्वल अवसर नहीं मिल सकते हैं। एसवीसीजीएस कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम भी आयोजित करता है जो छात्रों को कैरियर की संभावनाओं में उपयोगी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद करता है। इस प्रकार लक्ष्य निर्धारण और करियर योजना में छात्रों की सहायता करना (ii) छात्रों को तर्क और योग्यता के क्षेत्र में प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम, जो एक सपनों की नौकरी में उतरने के लिए आवश्यक हैं। ऐसे समय में जब रोजगार के लिए प्रतिस्पर्धा तेज गति से बढ़ रही है, ये कार्यक्रम छात्रों को कौशल से लैस करते हैं और उनके व्यक्तित्व को निखारते हैं (iii) अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए रिज्यूम राइटिंग, कम्युनिकेशन स्किल डेवलपमेंट और इंटरव्यू अटेंड करने जैसी उपयुक्त कार्यशालाओं का आयोजन। इन कार्यशालाओं से उनमें आत्मविश्वास पैदा होता है और उनमें सही दृष्टिकोण विकसित होता है। हम नकली साक्षात्कार भी आयोजित करते हैं ताकि वे रीयल-टाइम साक्षात्कार में भर्तीकर्ता की अपेक्षा के अनुसार प्रदर्शन कर सकें।(iv) अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए रोजगार मेले का आयोजन। इन जॉब फेयर में हम बाजार में विभिन्न

दायर कंपनियों की कंपनियों को बुलाते हैं, जो छात्रों को अपनी पसंद की नौकरी के लिए चुनने और आवेदन करने के विकल्प प्रदान करती हैं।

कारण और प्रभाव विश्लेषण: (i) उपकरण का उपयोग उन मुद्दों की पहचान करने में किया जाता है जो उपयोग किए गए कर्मचारियों के प्रदर्शन को प्रभावित कर रहे हैं (ii) नौकरी का विवरण (iii) उपकरण का उपयोग विश्लेषण और निदान चरण में किया जाता है। (iv) प्रदर्शन रिपोर्ट उपयोग किया गया

परिशिष्ट I: एसडब्ल्यूओटी विश्लेषण: (i) ताकत: ये ऐसे कारक हैं जिनके पूरा होने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना है(ii) कमज़ोरी:ये ऐसे कारक हैं जिनका संस्थान के उद्देश्यों को प्राप्त करने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना है यूजीसी समर्थित कॉलेज (iii) छात्र नामांकन अनुपात में निरंतर वृद्धि (iv) कॉलेजों में यूजी और पीजी डिग्री पाठ्यक्रम चलाने की क्षमता है क्योंकि संकाय सदस्य अनुभवी और योग्य हैं (v) उच्च शिक्षा विभिन्न योजनाओं और नीतियों के माध्यम से सरकार द्वारा अत्यधिक सब्सिडी और वित्त पोषित है,योग्य और प्रतिबद्ध शिक्षण संकाय, युवा और उत्साही कर्मचारी, उच्च शिक्षा के लिए प्रयास प्रमुख ताकत है (vi) छात्र कल्याण छात्रवृत्ति (vii) आर्थिक सहायता। अधिकांश कॉलेजों के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित और आधुनिक सुविधाओं का अभाव और प्रत्येक विभाग के लिए स्वतंत्र कंप्यूटिंग सुविधाओं का अभाव। (viii) नवीनतम श्रव्य दृश्य सुविधाओं का अभाव (ix) शिक्षक व्यक्तिपरक ज्ञान के साथ अच्छे होते हैं लेकिन तकनीकी और व्यावहारिक विशेषज्ञता की कमी होती है, इसलिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है (x) संसाधनों के इष्टतम उपयोग और खराब संचार कौशल के बारे में जागरूकता की कमी (xi) निगमों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) के साथ उद्योगों के साथ संपर्क और संपर्क की कमी (xii) परामर्श में सुधार के लिए बाहरी वातावरण और संस्थान के बीच संपर्क का अभाव

अवसर:(i) बाहरी कारक जिनसे संस्थानों के उद्देश्यों को प्राप्त करने या उससे अधिक होने पर आशावादी प्रभाव पड़ने की उम्मीद है, या लक्ष्य जिन पर पहले विचार नहीं किया गया था।

चुनौतियाँ : (i) बाहरी कारक और परिस्थितियाँ जिनका संस्थान के लक्ष्यों को प्राप्त करने पर या उद्देश्य को निरर्थक या अप्राप्य बनाने पर निराशावादी प्रभाव पड़ने की संभावना है (ii) सरकारी कार्यों में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग और इंटरनेट सुविधा और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का विकास (iii) यूजीसी से अनुदान सहायता (iv) आपसी लाभ के लिए विभिन्न स्तरों पर संस्थाओं की नेटवर्किंग, संसाधनों का बंटवारा, प्रमुख परियोजनाएं शुरू करना (v) अधिक संख्या में कॉलेज खोलना और उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षाविदों की अनुपलब्धता (vi) तेजी से नवाचारों के कारण औसत इनपुट गुणवत्ता और तेजी से तकनीकी परिवर्तन (vii) अन्य देश में संस्थानों की गुणवत्ता के मामले में बेंचमार्क की कमी के कारण उच्च शिक्षा के घटते मानकों के भीतर से खतरा।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी –

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं,दशनविहीनं जतं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं,तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्॥

श्रीमद्भगवतगीता

आयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठोनैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते॥

जो कर्ता अयुक्त, शिक्षा से रहित घमंडी, धूर्त और दूसरों की जीविका का नाश करने वाला तथा शोक करने वाला, आलसी और दीर्घसूत्री है वह तामस कहा जाता है॥

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं श्रृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय॥

हे धनंजय ! अब तू बुद्धि का और धृति का भी गुणों के अनुसार तीन प्रकार का भेद मेरे द्वारा सम्पूर्णता से विभागपूर्वक कहा जाने वाला सुन॥

प्रवत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥

हे पार्थ ! जो बुद्धि प्रवृत्तिमार्गऔर निवृत्ति मार्ग को कर्तव्य और अकर्तव्य को, भय और अभय को तथा बंधन और मोक्ष को यथार्थ जानती है- वह बुद्धि सात्त्विकी है॥

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी॥

हे पार्थ! मनुष्य जिस बुद्धि के द्वारा धर्म और अधर्म को तथा कर्तव्य और अकर्तव्य को भी यथार्थ नहीं जानता, वह बुद्धि राजसी है॥

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥

हे अर्जुन! जो तमोगुण से घिरी हुई बुद्धि अधर्म को भी 'यह धर्म है' ऐसा मान लेती है तथा इसी प्रकार अन्य संपूर्ण पदार्थों को भी विपरीत मान लेती है, वह बुद्धि तामसी है॥

रामचरितमानस

तापस बेष गात कृस जपत निरंतर मोहि।
देखौं बेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि॥

तपस्वी के वेष में कृश (दुबले) शरीर से निरंतर मेरा नाम जप कर रहे हैं। हे सखा ! वही उपाय करो जिससे मैं जल्दी से जल्दी उन्हें देख सकूँ। मैं तुमसे निहोरा (अनुरोध) करता हूँ॥

बीतें अवधि जाउँ जौं जिअत न पावउँ बीर।
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर॥

यदि अवधि बीत जाने पर जाता हूँ तो भाई को जीता न पाऊँगा। छोटे भाई भरतजी की प्रीति का स्मरण करके प्रभु का शरीर बार-बार पुलकित हो रहा है॥

मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद।
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद॥

जिनको मुनि ध्यान में भी नहीं पाते, जिन्हें वेद नेति-नेति कहते हैं, वे ही कृपा के समुद्र श्री रामजी वानरों के साथ अनेकों प्रकार के विनोद कर रहे हैं॥

उमा जोग जप दान तप नाना मख ब्रत नेम।
राम कृपा नहिं करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम॥

शिवजी कहते हैं, हे उमा! अनेकों प्रकार के योग, जप, दान, तप, यज्ञ, व्रत और नियम करने पर भी श्री रामचंद्रजी वैसी कृपा नहीं करते जैसी अनन्य प्रेम होने पर करते हैं॥

अतिसय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई॥
मन महुँ बिप्र चरन सिरु नायो। उत्तर दिसिहि बिमान चलायो॥

श्री रघुनाथजी ने उनका अतिशय प्रेम देखकर सबको विमान पर चढ़ा लिया। तदनन्तर मन ही मन विप्रचरणों में सिर नवाकर उत्तर दिशा की ओर विमान चलाया॥

तुरत बिमान तहाँ चलि आवा। दंडक बन जहँ परम सुहावा॥
कुंभजादि मुनिनायक नाना। गए रामु सब कें अस्थाना॥

विमान शीघ्र ही वहाँ चला आया, जहाँ परम सुंदर दण्डकवन था और अगस्त्य आदि बहुत से मुनिराज रहते थे। श्री रामजी इन सबके स्थानों में गए॥

सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा। चित्रकूट आए जगदीसा॥
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा। चला बिमानु तहाँ ते चोखा॥

संपूर्ण ऋषियों से आशीर्वाद पाकर जगदीश्वर श्री रामजी चित्रकूट आए। वहाँ मुनियों को संतुष्ट किया। (फिर) विमान वहाँ से आगे तेजी के साथ चला॥

बहुरि राम जानकिहि देखाई। जमुना कलि मल हरनि सुहाई॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता। राम कहा प्रनाम करु सीता॥

फिर श्री रामजी ने जानकीजी को कलियुग के पापों का हरण करने वाली सुहावनी यमुनाजी के दर्शन कराए। फिर पवित्र गंगाजी के दर्शन किए। श्री रामजी ने कहा- हे सीते ! इन्हें प्रणाम करो॥

तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्म कोटि अघ भागा॥
देखु परम पावनि पुनि बेनी। हरनि सोक हरि लोक निसेनी॥
पुनि देखु अवधपुरि अति पावनि। त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि॥

फिर तीर्थराज प्रयाग को देखो, जिसके दर्शन से ही करोड़ों जन्मों के पाप भाग जाते हैं। फिर परम पवित्र त्रिवेणीजी के दर्शन करो, जो शोकों को हरने वाली और श्री हरि के परम धाम (पहुँचने) के लिए सीढ़ी के समान है। फिर अत्यंत पवित्र अयोध्यापुरी के दर्शन करो, जो तीनों प्रकार के तापों और भव (आवागमन रूपी) रोग का नाश करने वाली है॥

सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह कृपाल प्रनाम।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम॥

यों कहकर कृपालु श्री रामजी ने सीताजी सहित अवधपुरी को प्रणाम किया। सजल नेत्र और पुलकित शरीर होकर श्री रामजी बार-बार हर्षित हो रहे हैं॥

बोधवाक्य:

"मैं अपनी कालकोठरी के सामने के पेड़ की शाखाओं के नीचे टहल रहा था, परन्तु वहाँ पेड़ न था, मुझे प्रतीत हुआ कि वे वासुदेव हैं; मैंने देखा कि स्वयं श्रीकृष्ण खड़े हैं; और मेरे ऊपर छाया किये हुए हैं। मैंने अपनी कालकोठरी के सींखचों की ओर देखा, उस जाली की ओर देखा, जो दरवाजे का काम कर रही थी, वहाँ भी वासुदेव दिखायी दिये। स्वयं नारायण संतरी बनकर पहरा दे रहे थे। जब मैं उन मोटे कंबलों पर लेटा जो मुझे पलंग की जगह मिले थे तो मैंने यह अनुभव किया कि मेरे सखा और प्रेमी श्री कृष्ण मुझे अपनी बाहुओं में लिये हुए हैं। मुझे उन्होंने जो गहरी दृष्टि दी थी उसका यह पहला प्रयोग था।"- महर्षि अरविन्द

बोधकथा :

कार्य से ध्यान भटका सकती है

यह घटना उन दिनों की है जब चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, सुखदेव और बटुकेश्वर दत्त अंग्रेजों के विरुद्ध किसी योजना पर कार्य करने के लिए एक साथ इलाहाबाद में रह रहे थे। एक दिन की बात है, सुखदेव बाजार से एक कैलेंडर लेकर आये, जिस पर एक खूबसूरत अदाकारा की मनमोहक तस्वीर छपी हुई थी। सुखदेव को यह कैलेंडर पसंद आया और उन्होंने उसे कमरे के अंदर की दीवार पर टांग दिया और फिर किसी कार्य के लिए बाहर चले गये।

सुखदेव के जाने के पश्चात आज़ाद जी वहां पहुंचे और ज्यों ही उनकी नजर दीवार पर टंगे कैलेंडर पर गई त्यों ही उनकी भौहें तन गई। आज़ाद के क्रोध को देखकर अन्य क्रांतिकारी साथी थोड़ा डर गये; क्योंकि वे सभी आज़ाद जी के स्वभाव से अवगत थे। आज़ाद जी ने किसी से कुछ नहीं कहा लेकिन दीवार पर लगे कैलेंडर को तुरंत नीचे उतारा एवं फाड़कर फेंक दिया। कुछ समय के पश्चात सुखदेव लौट आये। जब उनकी नजर दीवार पर गई, तो वहां कैलेंडर को टंगा न देख कर उसे वे इधर-उधर खोजने लगे। थोड़ी ही देर बाद जब उनकी नजर कैलेंडर के बचे हुये टुकड़ों पर पड़ी तब वे भी गुस्से से लाल-पीले हो गये। सुखदेव भी गरम स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने गुस्से में सबसे पूछा की उनके कैलेंडर यह हाल किसने किया है ? आज़ाद ने कहा - "हमने किया है।" सुखदेव थोड़ा हिचकिचाये लेकिन आज़ाद जी का सम्मान करते थे, इसलिए उनके सामने क्या बोलते सो धीरे से बोले कि तस्वीर तो अच्छी थी। आज़ाद ने कहा - "यहां ऐसी ध्यान भटकाने वाली तस्वीर का क्या काम?" उन्होंने आगे सुखदेव को समझा दिया कि हम जिस कार्य में लगे हुये है, ऐसी कोई भी तस्वीर या वस्तु हमारे इस कार्य से ध्यान भटका सकती है।

मासिक गीत / गान :

तमोमयं जन जीवनमधुना निष्क्रियताऽऽलस्य ग्रस्तम्।
रजोमयमिदं किंवा बहुधा क्रोध लोभमोहाभिहतम्।
भक्तिज्ञानकर्मविज्ञानै: भवतु सात्विकोद्योतमयम्॥

वह्निवायुजल बल विवर्धकं पाञ्चभौतिकं विज्ञानम्।
सलिलनिधितलं गगनमण्डलं करतलफलमिव कुर्वाणम्।
दीक्षुविकीर्णं मनुजकुलमिदं घटयतुचैक कुटुम्बमयम्॥

जीवे जीवे शिवस्यरूपं सदा भवयतु सेवायाम्।
श्रीमदूर्जितं महामानवं समर्चयतु निजपूजायाम्।
चरतु मानवोऽयं सुहितकरं धर्मं सेवात्यागमयम्॥

----------00----------

नवंबर

कार्तिक : मध्य प्रदेश में नर्मदा एक ऐसी नदी है जिसके दर्शन मात्र से पुण्य लाभ होता है। माना जाता है कि चन्द्रवंशी हिरण्य तेजा ने अपने पितरों को तारने के लिए नर्मदा को पृथ्वी पर अवतरित किया था। पुराणों में शिव के शरीर से उत्पन्न श्वेद से तो कहीं शिव के सिर पर स्थित सोम कला से नर्मदा की उत्पत्ति बताई गई है। नर्मदा का उद्भव शंकर से हुआ इसलिए "शांकरी" भी कहा गया है। अमरकंटक नर्मदा का उद्गम स्थल है। स्कंद पुराण के अनुसार अमर यानी देवता कट यानी शरीर, देवों के शरीर से व्याप्त होने के कारण अमरकंटक या अमरकंट हुआ। अमरकंटक के पश्चात मध्यप्रदेश में नर्मदा किनारे दूसरा सबसे महत्वपूर्ण स्थल ओंकारेश्वर जिसे ओंकार – मान्धाता नाम से भी जाना जाता है। ओंकारेश्वर नामक शिवलिंग का प्रसिद्व मंदिर तथा 'ॐ' के आकार में दिखाई पड़ने वाले स्थानीय भौगोलिग दृश्य के कारण भी इसकी प्रसद्वि ओंकारेश्वर की है। मान्धाता नामक वह पहाड़ी है जिस पर ओंकारेश्वर मंदिर है। यह पहाड़ी एक द्वीप के स्वरूप की है। इसका कारण एक छोटी नदी कावेरी और नर्मदा का संगम है। कावेरी और नर्मदा का यह विलक्षण संगम मान्दाधा को 'ॐ' का आकार देता है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : भारतीय परम्परा के ग्रंथों का परिचय कराया जाए तथा कैलेंडर में दिए गीता के श्लोकों पर समूह चर्चा कराई जाए। स्वॉट के अभ्यास से स्व मूल्यांकन कराया जाए। रोजगार के लिए कम्पनियों को आमंत्रित किया जाए ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

उद्यम स्थापना हेतु परियोजना प्रतिवेदन (भाग एक)

(1) परियोजना प्रतिवेदन और परिभाषा : किसी भी उद्यम की स्थापना अथवा विस्तार के लिये परियोजना प्रतिवेदन के निर्माण की आवश्यकता होती है परियोजना को कार्य योजना भी कहा जाता है। किसी विषेश लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जो विस्तृत कार्य योजना बनायी और कार्यान्वित की जाती है उसे परियोजना कहते हैं। इसके अंतर्गत पूरे कार्य को छोटे- छोटे कार्यो के रूप मे विभक्त करके उनका समयबद्ध क्रम प्रस्तुत किय जाता है। कौन सा काम कब आरम्भ होगा; कब समाप्त होगा; कितना धन और संसाधन लगेगा; समाप्ति पर मिलने वाला परिणाम क्या है; आदि का उल्लेख किया जाता है। परियोजना में कार्य की समय-सीमा भी तय करना ज़रुरी है। इसके साथ ही परियोजना के लिये लागत भी निश्चित की जाती है। **(i)** परियोजना की परिभाषा जिस विषय से वह सम्बंधित होती है उसके अनुसार बदल जाती है। जैसे जहाँ कार्य उद्यम स्थापना का है तो वहाँ परियोजना का आशय पूँजी नियोजन के किसी ऐसे अवसर से होगा जिसमें लाभ उत्पन्न करने की स्पष्ट संभावनाएं परिलक्षित हो रही हों। **(ii)** परियोजना प्रतिवेदन प्रस्तावित परियोजना का एक प्रलेख होता है, जिसमें परियोजना का संक्षिप्त विवरण होता है तथा यह परियोजना क्रियाओं के अनुक्रम को दर्शाता है। **(iii)** यह हमारे उद्यम या व्यवसाय से सम्बंधित समस्त जानकारियों का विवरण होता है। **(iv)** किसके लिए होता है ? यह स्वयं उद्यमी तथा वित्तीय संस्थानों एवं अन्य विभागों जिनसे उद्यम स्थपना हेतु अनुमति अथवा रजिस्ट्रेशन चाहिए है के लिए होता है जिससे वह संस्था परियोजना के सभी पहलुओं का मूल्यांकन कर सके।

(2) परियोजना प्रतिवेदन क्यों : (i) विनयोग अवसरों का मूल्यांकन - जिससे निष्पक्ष रूप से आप ऐसी योजना /उद्योग का चयन करें जो लाभप्रद हो **(ii)** परियोजना की लाभप्रदता का आकलन **(iii)** बैंकों से वित्तीय सहायता पाने हेतु आवश्यक **(iv)** इससे बैंक तथा अन्य विभाग परियोजना को समझ कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं **(v)** परियोजना प्रतिवेदन बनाने से पूर्व आपको अपने विस्तृत अध्ययन से निकाले निष्कर्षो के अनुसार जो उद्यम आपको स्थापित करना है का चुनाव कर लेना होगा **(vi)** परियोजना प्रतिवेदन के निर्माण हेतु प्रलेख के बिंदुओ से सम्बंधित समस्त जानकारी एकत्रित करनी चाहिए।

(3) परियोजना प्रतिवेदन का निर्माण: (i) परिचय **(ii)** परियोजना/ इकाई का नाम **(iii)** संघटन (Constitution) - प्रोप्राइटरशिप / पार्टनरशिप / LLP / प्राइवेट लिमिटेड कंपनी **(iv)** परियोजना का संक्षिप्त विवरण **(v)** प्रवर्तकों का संक्षिप्त विवरण **(vi)** वित्तीय सहायता की आवश्यकता के सम्बन्ध में जानकारी।

(4) प्रवर्तकों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी: (i) नाम**(ii)** पिता का नाम **(iii)** आयु **(iv)** पता **(v)** शैक्षणिक योग्यता**(vi)** विशेष योग्यता /प्रशिक्षण के वाई सी सम्बंधित जानकारी **(vii)** इनकम टैक्स पैन नम्बर **(viii)** आधार नम्बर **(ix)** पासपोर्ट नम्बर तथा इशू दिनांक व स्थान **(x)** विस्तृत अनुभव **(xi)** शुद्ध संपत्ति (परि सम्पतियाँ - देयताये) **(xii)** Net Means (Assets - Liabilities)

(5) तकनीक सम्बन्धी जानकारी: (यदि आमतौर पर प्रचलित तकनीक का उपयोग करने वाले हैं तो वह बताये अन्यथा जो विशेष तकनीक आप क्रय करने वाले हैं उसके बारे मे निम्नलिखित बिंदुओ पर जानकारी दे): **(i)** स्रोत **(ii)** पृष्ट भूमि**(iii)** सहकार्यता (Collaboration) **(iv)** उपयुक्तता**(v)** विश्वसनीयता **(vi)** निष्पादन रिकार्ड **(vii)** व्यय प्रतियोगितात्मकता / वाजिब लागत**(viii)** उत्तमता **(ix)** विशेष गुण।

(6) बाजार / मांग- जो उत्पाद आप बनाने वाले हैं उसकी बाज़ार मांग के बारे मे आश्वस्त हो जायें उसके लिये सर्वे ज़रूर करें : **(i)** उद्योग की स्थिति **(ii)** बाजार का आकार व विस्तार संभावनाएं **(iii)** बाजार विकास के रुझान **(iv)** प्रतिस्पर्धी विश्लेषण **(v)** हमारे उत्पाद की खासियत (USP) **(vi)** प्रवेश अवरोध **(vii)** लक्षित बाजार **(viii)** संभावित ग्राहकों से प्राप्त आश्वासन पत्र की प्रति संलग्न करें।

(7) मूलभूत सुविधाएँ - **(i)** स्थान **(ii)** बिजली तथा अन्य उपयोगिताएं **(ii)** श्रम शक्ति **(iv)** परिवहन सुविधाएँ **(v)** अपशिष्ट ।

(8) विनिर्माण प्रक्रिया प्रवाह चार्ट - उत्पाद बनाने की उत्पादन प्रक्रिया को भली-भांति समझें और मशीनों का चयन करते समय विभिन्न मशीनों की उत्पादन क्षमता के आपसी संतुलन पर विचार कर लें। **(i)** आवश्यक मशीने (विनिर्माण प्रक्रिया प्रवाह चार्ट के अनुसार) **(ii)** स्थापित क्षमता **(ii)** मशीनों का आपसी संतुलन **(iv)** प्रतिदिन काम के घंटे की संख्या **(v)** प्रतिवर्ष कार्य दिवस **(vi)** कच्चा माल तथा उपभोज्य वस्तुए /सामग्रियां **(vii)** जनशक्ति की आवश्यकता एवम उप्लब्धता **(viii)** यदि कोई लाइसेंस लेना हो तो उसका विवरण व स्थिति **(ix)** यदि कोई वैधानिक आवश्यकता हो तो उसकी जानकारी व स्थिति।

आचार्य शंकर वाणी :

अग्रे वह्निः पृष्ठेभानुः,रात्रौ चुबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षस्तरुतलवासः,तदपि न मुञ्चत्याशापाशः॥

श्रीमद्भगवतगीता

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥

हे पार्थ! जिस अव्यभिचारिणी धारण शक्ति से मनुष्य ध्यान योग के द्वारा मन, प्राण और इंद्रियों की क्रियाओं को धारण करता है, वह धृति सात्त्विकी है ॥

यया तु धर्मकामार्थान्धत्या धारयतेऽर्जुन ।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥

परंतु हे पृथापुत्र अर्जुन! फल की इच्छावाला मनुष्य जिस धारण शक्ति के द्वारा अत्यंत आसक्ति से धर्म, अर्थ और कामों को धारण करता है, वह धारण शक्ति राजसी है ॥

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च ।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥

हे पार्थ! दुष्ट बुद्धिवाला मनुष्य जिस धारण शक्ति के द्वारा निद्रा, भय, चिंता और दुःख को तथा उन्मत्तता को भी नहीं छोड़ता अर्थात धारण किए रहता है- वह धारण शक्ति तामसी है ॥

सुखं त्विदानीं त्रिविधं श्रृणु मे भरतर्षभ ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥

हे भरतश्रेष्ठ! अब तीन प्रकार के सुख को भी तू मुझसे सुन। जिस सुख में साधक भजन, ध्यान और सेवादि के अभ्यास से रमण करता है और जिससे दुःखों के अंत को प्राप्त हो जाता है, आरंभकाल में यद्यपि वह विष के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है, इसलिए वह परमात्मविषयक बुद्धि के प्रसाद से उत्पन्न होने वाला सुख सात्त्विक कहा गया है ॥

विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥

जो सुख विषय और इंद्रियों के संयोग से होता है, वह पहले- भोगकाल में अमृत के तुल्य प्रतीत होने पर भी परिणाम में विष के तुल्य है इसलिए वह सुख राजस कहा गया है ॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटु रूप अवधपुर जाई॥
भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु। समाचार लै तुम्ह चलि आएहु॥

तदनन्तर प्रभु ने हनुमान्‌जी को समझाकर कहा, तुम ब्रह्मचारी का रूप धरकर अवधपुरी को जाओ। भरत को हमारी कुशल सुनाना और उनका समाचार लेकर चले आना॥

भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहिं बार।
जानि सगुन मन हरष अति लागे करन बिचार॥

भरतजी की दाहिनी आँख और दाहिनी भुजा बार-बार फड़क रही है। इसे शुभ शकुन जानकर उनके मन में अत्यंत हर्ष हुआ और वे विचार करने लगे॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा। समुझत मन दुख भयउ अपारा॥
कारन कवन नाथ नहिं आयउ। जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायउ॥

प्राणों की आधार रूप अवधि का एक ही दिन शेष रह गया। यह सोचते ही भरतजी के मन में अपार दुःख हुआ। क्या कारण हुआ कि नाथ नहीं आए? प्रभु ने कुटिल जानकर मुझे कहीं भुला तो नहीं दिया?॥

अहह धन्य लछिमन बड़भागी। राम पदारबिंदु अनुरागी॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा। ताते नाथ संग नहिं लीन्हा॥

अहा हा! लक्ष्मण बड़े धन्य एवं बड़भागी हैं, जो श्री रामचंद्रजी के चरणारविन्द के प्रेमी हैं। मुझे तो प्रभु ने कपटी और कुटिल पहचान लिया, इसी से नाथ ने मुझे साथ नहीं लिया॥

जौं करनी समुझै प्रभु मोरी। नहिं निस्तार कलप सत कोरी॥
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ। दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ॥

यदि प्रभु मेरी करनी पर ध्यान दें तो सौ करोड़ (असंख्य) कल्पों तक भी मेरा निस्तार (छुटकारा) नहीं हो सकता, प्रभु सेवक का अवगुण कभी नहीं मानते। वे दीनबंधु हैं और अत्यंत ही कोमल स्वभाव के हैं॥

मोरे जियँ भरोस दृढ़ सोई। मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई॥
बीतें अवधि रहहिं जौं प्राना। अधम कवन जग मोहि समाना॥

अतएव मेरे हृदय में ऐसा पक्का भरोसा है कि श्री रामजी अवश्य मिलेंगे, (क्योंकि) मुझे शकुन बड़े शुभ हो रहे हैं, किंतु अवधि बीत जाने पर यदि मेरे प्राण रह गए तो जगत्‌ में मेरे समान नीच कौन होगा?॥

राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत॥

श्री रामजी के विरह समुद्र में भरतजी का मन डूब रहा था, उसी समय पवनपुत्र हनुमान्‌जी ब्राह्मण का रूप धरकर इस प्रकार आ गए, मानो नाव आ गई हो॥

बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात॥
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात॥

हनुमान्‌जी ने दुर्बल शरीर भरतजी को जटाओं का मुकुट बनाए, राम! राम! रघुपति! जपते और कमल के समान नेत्रों से (प्रेमाश्रुओं) का जल बहाते कुश के आसन पर बैठे देखा॥

देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलक गात लोचन जल बरषेउ॥
मन महँ बहुत भाँति सुख मानी। बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी॥

उन्हें देखते ही हनुमान्‌जी अत्यंत हर्षित हुए। उनका शरीर पुलकित हो गया, नेत्रों से (प्रेमाश्रुओं का) जल बरसने लगा। मन में बहुत प्रकार से सुख मानकर वे कानों के लिए अमृत के समान वाणी बोले।

जासु बिरहँ सोचहु दिन राती। रटहु निरंतर गुन गन पाँती॥
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता। आयउ कुसल देव मुनि त्राता॥

जिनके विरह में आप दिन-रात सोच करते (घुलते) रहते हैं और जिनके गुण समूहों की पंक्तियों को आप निरंतर रटते रहते हैं, वे ही रघुकुल के तिलक, सज्जनों को दुःख देने वाले और देवताओं तथा मुनियों के रक्षक श्री रामजी सकुशल आ गए॥

को तुम्ह तात कहाँ ते आए। मोहि परम प्रिय बचन सुनाए॥
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना। नामु मोर सुनु कृपानिधाना॥

भरतजी ने पूछा, हे तात! तुम कौन हो? और कहाँ से आए हो? (जो) तुमने मुझको (ये) परम प्रिय (अत्यंत आनंद देने वाले) वचन सुनाए। हे कृपानिधान! सुनिए, मैं पवन का पुत्र और जाति का वानर हूँ, मेरा नाम हनुमान् है॥

दीनबंधु रघुपति कर किंकर। सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर॥
मिलत प्रेम नहिं हृदयँ समाता। नयन स्रवतजल पुलकित गाता॥

मैं दीनों के बंधु श्री रघुनाथजी का दास हूँ। यह सुनते ही भरतजी उठकर आदरपूर्वक हनुमान्‌जी से गले लगकर मिले। मिलते समय प्रेम हृदय में नहीं समाता। नेत्रों से जल बहने लगा और शरीर पुलकित हो गया॥

कपि तव दरस सकल दुख बीते। मिले आजुमोहि राम पिरीते॥
बार बार बूझी कुसलाता। तो कहुँ देउँ काह सुन भ्राता॥

भरतजी ने कहा, हे हनुमान्- तुम्हारे दर्शन से मेरे समस्त दुःख समाप्त हो गए। आज मुझे प्यारे रामजी ही मिल गए। भरतजी ने बार-बार कुशल पूछी हे भाई! सुनो, तुम्हें क्या दूँ?॥

एहि संदेस सरिस जग माहीं। करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं॥
नाहिन तात उरिन मैं तोही। अब प्रभु चरित सुनावहु मोही॥

इस संदेश के समान (इसके बदले में देने लायक पदार्थ) जगत् में कुछ भी नहीं है, मैंने यह विचार कर देख लिया है। (इसलिए) हे तात! मैं तुमसे किसी प्रकार भी उऋण नहीं हो सकता। अब मुझे प्रभु का चरित्र (हाल) सुनाओ॥

बोधवाक्य:

"न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं। इन्हें वह जैसे चाहती है, नचाती है। विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई भी विद्यालय आज तक नहीं हुआ। अपनी भूल अपने ही हाथों से सुधर जाए, तो यह उससे कहीं ज्यादा अच्छा है कि कोई दूसरा उसे सुधारे। सौभाग्य उसी को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहते हैं।"- मुंशी प्रेमचंद

बोधकथा :

जीतकर दिखाओ

लोकमान्य तिलक बचपन से ही बहुत साहसी और निडर थे। गणित और संस्कृत उनके प्रिय विषय थे। स्कूल में जब उनकी परीक्षाएं होतीं, तब गणित के पेपर में तिलक हमेशा कठिन सवालों को हल करना ही पसंद करते थे। उनकी इस आदत के बारे में उनके एक मित्र ने कहा कि तुम हमेशा कठिन सवालों को ही क्यों हल करते हो? अगर तुम सरल सवालों को हल करोगे तो तुम्हें परीक्षा में ज्यादा अंक मिलेंगे।इस पर तिलक ने जवाब दिया कि मैं ज्यादा से ज्यादा सीखना चाहता हूं इसलिए कठिन सवालों को हल करता हूं। अगर हम हमेशा ऐसे काम ही करते रहेंगे, जो हमें सरल लगते हैं तो हम कभी कुछ नया नहीं सीख पाएंगे।यही बात हमारी जिंदगी पर भी लागू होती है, अगर हम हमेशा आसान विषय, सरल सवाल और साधारण काम की तलाश में लगे रहेंगे तो कभी आगे नहीं बढ़ पाएंगे। जीवन की हर कठिनाई को एक चुनौती की तरह लो, उसके सामने घुटने टेकने के बजाए उसे जीतकर दिखाओ।

मासिक गीत / गान :

बढें निरंतर हो निर्भय, गूँजे भारत की जय-जय॥
याद करें अपना गौरव याद करें अपना वैभव
स्वर्णिम युग को प्रकटाएँगे,मन में धारें दृढ निश्चय॥
वीरव्रती बनकर हुँकारें,जन-जन का सामर्थ्य बढ़ाएँ।
दशों दिशा से ज्वार उठेगा,चीर चलेंगे घोर प्रलय॥

कर्म समर्पित हो हर प्राण,यश अपयश पर ना हो ध्यान।
व्यमोही आकर्षण तज दें,आलोकित हो शील विनय॥
सृजन करें नव शुभ रचनाएँ, सत्य अहिंसा पथ अपनाएँ।
मंगलमय हिंदुत्व सुधा से,छलकाएँगे घट अक्षय॥

----------00----------

दिसंबर

मार्गशीर्ष (अगहन) : राष्ट्र-निर्माण के लिए जरूरी घटकों में देश, जाति, धर्म, संस्कृति और भाषा को मान्यता दी जाती है। देश से आशय उसके अपने भूगोल से है, जाति वहाँ रहने वाले जनसमुदाय की बोधक है और फिर सबको धारण करने वाले धर्म का होना भी जरूरी है। यहाँ धर्म संकीर्ण अर्थ का वाचक नहीं है। संस्कृति उस राष्ट्र के जन-समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति यदि उच्चतम चिंतन का मूर्त रूप है तो है तो भाषा उसका माध्यम है। जाहिर है किसी भी राष्ट्र की एकता इन सभी घटकों के प्रति गहरी आत्मीयता पर निर्भर करती है। राष्ट्रीयता के लिए बेहद जरूरी है बाहरी तौर पर दिखाई देने वाले अंतर के बावजूद आंतरिक समभावना और संगठन। इसीलिए बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे प्रखर राष्ट्रचेतना कवि ने राष्ट्रीयता को एक भावना मात्र पर अवलम्बित माना है। वे इस भावना के उदय के पीछे आर्थिक, ऐतिहासिक, भाषा विषयक, भौगोलिक एवं सभ्यता विषयक एकता को नहीं मानते हैं, वरन् प्रेम, घृणा, ईर्ष्या द्वेष आदि मनोभावों के विकास की श्रेणी में राष्ट्रीय भावना को भी स्थान देते हैं। मनुष्य की एक स्वाभाविक मनोवृत्ति के रूप में विकसित राष्ट्रीयता राष्ट्र के भौतिक और आन्तरिक - समस्त प्रकार के कल्याण की कामना का संवहन करती है। भारतीय संदर्भ में देखें तो अनेक शताब्दियों से राष्ट्रीयता की भावना का उन्मेष होता आ रहा है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : समसामयिक विषयों और महापुरुषों के जीवन पर निबंध प्रतियोगिता कराकर लेखन कौशल का अभ्यास कराया जाए। रामचरितमानस आधारित कैलेंडर में दिए प्रसंगों पर चर्चा और नेतृत्व क्षमता का विकास कराया जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

उद्यम स्थापना हेतु परियोजना प्रतिवेदन (भाग दो)

1. **परियोजना की लागत:** (i) कुल लागत / मूल्य (ii) भूमि/ स्थान भवन (निर्माण अथवा किराये पर(iii) संयंत्र एवं मशीने (iv) अन्य अचल सम्पत्तियाँ ((v) निर्माण अवधि का ब्याज (vi) मूल्य वृद्धि व आकस्मिक व्यय (vii) प्रारंभिक एवं संचालन पूर्व व्यय (viii) कार्यशील पूंजी का मार्जिन।
2. **भवन:** (i) वास्तुविद का चुनाव (ii) भवन का क्षेत्रफल, कारपेट एरिया, बेसमेंट की आवश्यकता इत्यादि (iii) निर्माण का प्रकार(iv) सक्षम अधिकारी से स्वीकृति की स्थिति।
3. **संयंत्र एवं मशीने:** (i) उत्पादन प्रक्रिया प्रवाह चार्ट अनुसार आवश्यक मशीनें (ii) आपूर्तिकर्ताओं का चयन (iii) स्थापित क्षमता के आधार पर मशीनों का संतुलन (iv) शुल्क तथा कर इत्यादि।
4. **मूल्य वृद्धि एवं आकस्मिक व्यय:** .10 प्रतिशत भवन तथा संयंत्र एवं मशीनों पर कार्यशील पूंजी का मार्जिन।
5. **वित्त व्यवस्था/साधन:** (i) पूँजी (ii) सुरक्षित/ प्रतिभूत ऋण (iii) असुरक्षित ऋण (iv) कुल वित्तीय संसाधन (1+2+3) (v) परियोजना की कुल लागत = परियोजना हेतु वित्तीय संसाधन।
6. **अनुमानित लाभप्रदता विवरण (वार्षिक):** यदि सावधि ऋण की अवश्यकता नहीं है तो अनुमानित लाभप्रदता एवं तुलन पत्र प्रारंभिक दो वर्ष के लिये बनाया जाता है अन्यथा सावधि ऋण की अवधि के लिये बनाया जाता है , जैसे यदि सावधि ऋण की चुकौती चार वर्ष में होनी प्रस्तावित है तो अनुमानित लाभप्रदता तथा तुलन पत्र भी चार वर्ष का बनाना होगा (i) उद्यम की वार्षिक स्थापित क्षमता (ii) प्रथम वर्ष से लेकर अंतिम वर्ष (सावधि ऋण की पूर्ण चुकौती तक) तक स्थापित क्षमता का कितना प्रतिशत प्रति वर्ष उपयोग मे आयेगा प्रथम वर्ष मे क्षमता उपयोग सधारणतया 65 से 70% तक माना जाता है (iii) उत्पादन प्रक्रिया मे प्रयुक्त होने वाली सभी वस्तुओ का तर्कसंगत मूल्य दर्शाये जैसे कच्चे माल की कीमत इत्यादि (iv) इकाई को चलाने के लिये अनुबंधित स्टाफ एवम उनके वेतन सम्बंधित जानकारी, मज़दूर एवम मज़दूरी सम्बंधित जानकारी।
7. **उत्पादन लागत :** (i) कच्चा माल (आरंभिक स्टॉक + पूरे वर्ष में क्रय किया गया कच्चा माल वर्षांत में बचा हुआ कच्चा माल) (ii) उपभोज्य सामग्री /वस्तुएं (आरंभिक स्टॉक + पूरे वर्ष में खरीद – अंतिम स्टॉक) (iii) वेतन एवं मज़दूरी (iv) मरम्मत तथा रख रखाव व्यय ((v) इन्श्युरेंस खर्च (vi) विक्रय तथा प्रशासनिक व्यय (vii) ब्याज व्यय (viii) मूल्य ह्रास (ix) कुल उत्पादन लागत = उपरोक्त (1) से (9) तक के व्यय का योग (x) कुल बिक्री (10) = (उत्पाद का आरंभिक स्टॉक + बिक्री –उत्पाद का अंतिम स्टॉक) (xi) सकल लाभ (10 – 1 से 9 क योग) = (कुल बिक्री - उत्पादन लागत) (xii) अन्य आय (xiv) टैक्स (xv) शुद्ध लाभ = (सकल लाभ + अन्य आय – टैक्स)।

8. **ब्रेक इवेन पॉइंट :** (i) उत्पादन का वह बिंदु जिसपर उद्योग कोई लाभ नहीं एवं कोई हानि नहीं की स्थिति में आ जाता है इस बिंदु से अधिक उत्पादन होने पर उद्योग लाभ अर्जित करने लगता है (ii) निश्चित लागत= ऐसा व्यय जो उद्योग में उत्पादन नहीं होने पर भी होता रहता है जैसे भवन का किराया,कर्मचारियों का वेतन, बिजली/ पानी सिक्योरिटी का व्यय इत्यादि(iii) परिवर्तनशील लागत = ऐसी लागत जो उत्पादन मात्रा के साथ बदलती हैं (iv) प्रति यूनिट योगदान=प्रति यूनिट बिक्री मूल्य - प्रति यूनिट परिवर्तनशील लागत(v) ब्रेक इवेन पॉइंट (उत्पादन यूनिट्स की संख्या अनुसार) = निश्चित लागत /प्रति यूनिट योगदान(vi) ब्रेक इवेन बिक्री = ब्रेक इवन उत्पादन यूनिट्स की संख्या X बिक्री मूल्य प्रति यूनिट।
9. **डेब्ट सर्विस कवरेज अनुपात DSCR:** (i) शुद्ध लाभ + मूल्य ह्रास + बिना नकद खर्चे (ii) शुद्ध डेब्ट सर्विस कवरेज अनुपात = -----(iii) वर्ष में सावधि ऋण की कुल वापसी (iv) शुद्ध लाभ + मूल्य ह्रास + बिना नकद खर्चे + सावधि ऋण पर ब्याज (v) सकल DSCR= --------(vi) वर्ष में सावधि ऋण की कुल वापसी + सावधि ऋण पर ब्याज।
10. **परियोजना प्रतिवेदन के साथ संलग्न किये जाने वाले दस्तावेज़ों की सूचक लिस्ट**-(i) पहचान का प्रमाण : मतदाता पहचान पत्र, पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, पेन कार्ड, प्रोप्राइटर, साझेदार एवं निदेशक (यदि कंपनी है) का वर्तमान बैंकर से हस्ताक्षर पहचान(ii) आवास का प्रमाण: प्रोप्राइटर, साझेदार एवं निदेशक (यदि कंपनी है) का हाल ही का टेलीफोन बिल, बिजली बिल, संपत्ति कर रसीद/ पासपोर्ट/ मतदाता पहचान पत्र (iii) व्यवसाय पता का प्रमाण (iv) कंपनी का ज्ञापन और संगठन के अनुच्छेद / साझेदारों का साझेदारी विलेख आदि। (v) प्रवर्तकों/ गारंटरों का बायो-डाटा (vi) नवीनतम आयकर विवरणी सहित प्रवर्तकों/ गारंटरों का निवल मालियत विवरण।(vii) किराया करार (अगर व्यवसाए परिसर किराए पर है) और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से अनापत्ति यदि लागू हो। (viii) यदि लागू हो तो उद्योग आधार ज्ञापन (UAM) पंजीकरण।(ix) कार्यशील पूंजी सीमाओं के मामले में अगले दो वर्षों के लिए और सावधि ऋण (टर्म लोन) के मामले में ऋण की अवधि के लिए अनुमानित तुलन पत्र, (x) प्राथमिक और संपार्श्विक प्रतिभूतियों के रूप में पेश किए जा रहे सभी संपत्तियों के पट्टा विलेख / स्वत्व विलेखकी फोटोकॉपी। (xi) यह स्थापित करने के लिए दस्तावेज कि आवेदक अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति श्रेणी से संबंधित है,जहाँ भी लागू हो। (xii) आरओसी से निगमन का प्रमाण पत्र यह स्थापित करने के लिए कि कंपनी में बहुसंख्यक हिस्सेदारी एक ऐसे व्यक्ति के हाथों में है जो अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति /महिला श्रेणी से संबंधित है। (xiii) इकाई का प्रोफाइल प्रवर्तकों (प्रमोटरों) के नाम, कंपनी में अन्य निदेशक, प्रमुख तकनीकी / प्रबंधकीय कर्मचारी, की जा रही गतिविधि, सभी कार्यालयों और संयंत्रों के पते, शेयरधारिता स्वरूप (होल्डिंग पैटर्न) आदि। (xiv) सहयोगी / समूह कंपनियों (एसोसिएट / ग्रुप कंपनियों) (यदि कोई हो) की अंतिम तीन साल का तुलन पत्र (बैलेंस शीट)। (xvi) विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (प्रस्तावित परियोजना के लिए यदि सावधि निधीयन (टर्म फंडिंग) की आवश्यकता है) जिसमें भूमि, सिविल कार्यों, वास्तुकार का अनुमान, अधिग्रहित की जाने वाली मशीनरी का सांकेतिक विवरण, जिनका अधिग्रहण किया जाना है, मूल्य, आपूर्तिकर्ताओं के नाम, वित्तीय विवरण जैसे मशीनों की अभिकल्पित क्षमता, ऋण की अवधि के लिए उत्पादन, बिक्री, अनुमानित लाभ और हानि और तुलन पत्र (बैलेंस शीट), श्रम का विवरण, कर्मचारियों को काम पर रखा जाना, ऐसे वित्तीय विवरणों की धारणा का आधार आदि।। (xvii) विनिर्माण प्रक्रिया यदि लागू हो, तो कंपनी में अधिकारियों की प्रमुख रूपरेखा (प्रोफ़ाइल), किसी भी तालमेल (टाई-अप), उपयोग किए गए कच्चे माल और उनके आपूर्तिकर्ताओं के बारे में विवरण, खरीदारों के बारे में विवरण, प्रमुख-प्रतियोगियों के बारे में विवरण और कंपनी की ताकत और उनके प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में कमजोरियों आदि।

आचार्य शंकर वाणी :

कुरुते गङ्गासागरगमनं,व्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहिनः सर्वमतेन,मुक्तिं न भजति जन्मशतेन॥

श्रीमद्भगवतगीता

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्॥

जो सुख भोगकाल में तथा परिणाम में भी आत्मा को मोहित करने वाला है, वह निद्रा, आलस्य और प्रमाद से उत्पन्न सुख तामस कहा गया है॥

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः॥

पृथ्वी में या आकाश में अथवा देवताओं में तथा इनके सिवा और कहीं भी ऐसा कोई भी सत्त्व नहीं है, जो प्रकृति से उत्पन्न इन तीनों गुणों से रहित हो ॥

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः॥

हे परंतप! ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के तथा शूद्रों के कर्म स्वभाव से उत्पन्न गुणों द्वारा विभक्त किए गए हैं ॥

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥

अंतःकरण का निग्रह करना, इंद्रियों का दमन करना, धर्मपालन के लिए कष्ट सहना, बाहर-भीतर से शुद्ध रहना, दूसरों के अपराधों को क्षमा करना, मन, इंद्रिय और शरीर को सरल रखना, वेद, शास्त्र, ईश्वर और परलोक आदि में श्रद्धा रखना, वेद-शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन करना और परमात्मा के तत्त्व का अनुभव करना- ये सब-के-सब ही ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं ॥

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥

शूरवीरता, तेज, धैर्य, चतुरता और युद्ध में न भागना, दान देना और स्वामीभाव, ये सब-के-सब क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म हैं ॥

रामचरितमानस

भरत चरन सिरु नाइ तुरित गयउ कपि राम पहिं ।
कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि ॥

फिर भरतजी के चरणों में सिर नवाकर हनुमान्‌जी तुरंत ही श्री रामजी के पास (लौट) गए और जाकर उन्होंने सब कुशल कही। तब प्रभु हर्षित होकर विमान पर चढ़कर चले ॥

आए भरत संग सब लोगा । कृस तन श्रीरघुबीर बियोगा ॥
बामदेव बसिष्ट मुनिनायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥

भरतजी के साथ सब लोग आए। श्री रघुवीर के वियोग से सबके शरीर दुबले हो रहे हैं । धनुष-बाण पृथ्वी पर रख कर प्रभु ने वामदेव, वशिष्ठ आदि मुनिश्रेष्ठों को देखा ॥

सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा। धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज ॥

धर्म की धुरी धारण करने वाले रघुकुल के स्वामी श्री रामजी ने सब ब्राह्मणों से मिलकर उन्हें मस्तक नवाया । फिर भरतजी ने प्रभु के वे चरणकमल पकड़े जिन्हें देवता, मुनि, शंकरजी और ब्रह्माजी नमस्कार करते हैं ॥

परे भूमि नहिं उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए ॥
स्यामल गात रोम भए ठाढ़े। नव राजीव नयन जल बाढ़े ॥

भरतजी पृथ्वी पर पड़े हैं, उठाए उठते नहीं। तब कृपासिंधु श्री रामजी ने उन्हें जबर्दस्ती उठाकर हृदय से लगा लिया। (उनके) साँवले शरीर पर रोएँ खड़े हो गए। नवीन कमल के समान नेत्रों में (प्रेमाश्रुओं के) जल की बाढ़ आ गई ॥

अमित रूप प्रगटे तेहि काला। जथाजोग मिले सबहि कृपाला ॥
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारि बिसोकी ॥

उसी समय कृपालु श्री रामजी असंख्य रूपों में प्रकट हो गए और सबसे (एक ही साथ) यथायोग्य मिले। श्री रघुवीर ने कृपा की दृष्टि से देखकर सब नर-नारियों को शोक से रहित कर दिया॥

भेंटेउ तनय सुमित्राँ राम चरन रति जानि ।
रामहि मिलत कैकई हृदयँ बहुत सकुचानि ॥

सुमित्राजी अपने पुत्र लक्ष्मणजी की श्री रामजी के चरणों में प्रीति जानकर उनसे मिलीं। श्री रामजी से मिलते समय कैकेयीजी हृदय में बहुत सकुचाईं॥

सासुन्ह सबनि मिली बैदेही । चरनन्हि लाग हरषु अति तेही ॥
देहिं असीस बूझि कुसलाता। होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥

जानकीजी सब सासुओं से मिलीं और उनके चरणों में लगकर उन्हें अत्यंत हर्ष हुआ। सासुएँ कुशल पूछकर आशीष दे रही हैं कि तुम्हारा सुहाग अचल हो ॥

प्रभु जानी कैकई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा ॥

शिवजी कहते हैं, हे भवानी! प्रभु ने जान लिया कि माता कैकेयी लज्जित हो गई हैं ,वे पहले उन्हीं के महल को गए और उन्हें समझा-बुझाकर बहुत सुख दिया। फिर श्री हरि ने अपने महल को गमन किया ॥

बोधवाक्य: "जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परामुखापेक्षिता से न बचा सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदुखकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता हैं। साहित्य मनुष्य समाज को रोग, शोक, दारिद्रय, अज्ञान तथा परामुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय निधि है।"- हजारी प्रसाद द्विवेदी

बोधकथा : तीसरे को झगड़े में शामिल नहीं करना

एक जंगल में एक बड़े पेड़ के तने में एक खोल था। उस खोल में कपिंजल नाम का एक तीतर रहा करता था। हर रोज वह खाना ढूंढ़ने खेतों में जाया करता था और शाम तक लौट आता था। एक दिन भोजन की तलाश में कपिंजल अपने दोस्तों के साथ दूर किसी खेत में निकल गया और शाम को नहीं लौटा। जब कई दिनों तक तीतर वापस नहीं आया, तो उसके खोल को एक खरगोश ने अपना घर बना लिया और वहीं रहने लगा। लगभग दो से तीन हफ्तों बाद तीतर वापस आया। खा-खाकर वह बहुत मोटा हो गया था और लंबे सफर के कारण बहुत थक भी गया था। लौट कर उसने देखा कि उसके घर में खरगोश रह रहा है। यह देख कर उसे बहुत गुस्सा आ गया और उसने झल्लाकर खरगोश से कहा, "ये मेरा घर है। निकलो यहां से।"

तीतर को इस तरह चिल्लाते हुए देख खरगोश को भी गुस्सा आ गया और उसने कहा, " कैसा घर ? कौन सा घर ? जंगल का नियम है कि जो जहां रह रहा है, वही उसका घर है। तुम यहां रहते थे, लेकिन अब यहां मैं रहता हूं और इसलिए यह मेरा घर है।" इस तरह दोनों के बीच बहस शुरू हो गई। तीतर बार-बार खरगोश को घर से निकलने के लिए कह रहा था और खरगोश अपनी जगह से टस से मस नहीं हो रहा था। तब तीतर ने कहा कि इस बात का फैसला हम किसी तीसरे को करने देते हैं। उन दोनों की इस लड़ाई को दूर से एक बिल्ली देख रही थी। उसने सोचा कि अगर फैसले के लिए ये दोनों मेरे पास आ जाएं, तो मुझे इन्हें खाने का एक अच्छा अवसर मिल जाएगा। यह सोच कर वह पेड़ के नीचे ध्यान मुद्रा में बैठ गई और जोर-जोर से ज्ञान की बातें करने लगी। उसकी बातों को सुनकर तीतर और खरगोश ने बोला कि यह कोई ज्ञानी लगती है और हमें फैसले के लिए इसके ही पास जाना चाहिए।

उन दोनों ने दूर से बिल्ली से कहा, "बिल्ली मौसी, तुम समझदार लगती हो। हमारी मदद करो और जो भी दोषी होगा, उसे तुम खा लेना।" उनकी बात सुनकर बिल्ली ने कहा, "अब मैंने हिंसा का रास्ता छोड़ दिया है, लेकिन मैं तुम्हारी मदद जरूर करूंगी। समस्या यह है कि मैं अब बूढ़ी हो गई हूं और इतने दूर से मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है। क्या तुम दोनों मेरे पास आ सकते हो ?" उन दोनों ने बिल्ली की बात पर भरोसा कर लिया और उसके पास चले गए। जैसे ही वो उसके पास गए, बिल्ली ने तुरंत पंजा मारा और एक ही झपट्टे में दोनों को मार डाला। (पंचतंत्र से)

मासिक गीत /गान :

न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम
सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥

सदा जो जगाए बिना ही जगा है अँधेरा उसे देखकर ही भगा है।
वही बीज पनपा पनपना जिसे था घुना क्या किसी के उगाए उगा है।
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥

सही राह को छोड़कर जो मुड़े हैं वही देखकर दूसरों को कुढ़े हैं।
बिना पंख तौले उड़े जो गगन में न सम्बन्ध उनके गगन से जुड़े हैं।
अगर उड़ सको तो पखेरु बनो तुम प्रवरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥

न जो बर्फ की आँधियों से लड़े हैं कभी पग न उनके शिखर पर पड़े हैं।
जिन्हें लक्ष्य से कम अधिक प्यार खुद से वही जी चुराकर विमुख हो खड़े हैं।
अगर जी सको तो जियो जूझकर तुम अमरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥

----------00----------

पौष : व्यक्ति समाज के सदस्य के रूप में संस्कृति को सीखता है और उसे आगामी पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है। इस कार्य में शिक्षा, संस्कृति को अपूर्व सहायता करती है। यह सत्य है कि व्यक्ति अज्ञात रूप से संस्कृति की अनेक बातें सीखता है, किन्तु अधिकांश भाग अपने अध्यापकों से विद्यालयी व्यवस्था में जानता है। लक्ष्यहीन जीवन हमेशा एक परेशान जीवन होता है। प्रत्येक व्यक्ति का एक उद्देश्य होना चाहिए। लेकिन यह मत भूलो कि आपके उद्देश्य की गुणवत्ता आपके जीवन की गुणवत्ता पर निर्भर करेगी। आपका उद्देश्य उच्च और व्यापक, उदार और उद्दात् होना चाहिए। यह आपके जीवन को अपने और दूसरों के लिए अनमोल बना देगा। जो भी आपके आदर्श हैं, यह पूरी तरह से महसूस नहीं किया जा सकता है जब तक कि आप अपने आप में पूर्णता का एहसास नहीं करते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : ई-मेल और ई-मेल पत्राचार का रोजगार और स्वरोजगार के विषयों को लेकर का विद्यार्थियों में ही आपस में अभ्यास कराया जाय।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थल

खजुराहो - खजुराहो नगर चंदेल शासकों का धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र था, जिसकी आधारशिला विख्यात राजा चंदवर्मा ने रखी। चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित खजुराहो के इन मंदिरों का निर्माण काल ईसवी 950 से लेकर 1050 के बीच माना जाता है। यहाँ शैव,जैन, वैष्णव धर्म से संबंधित मंदिर हैं,जो वर्ष1986 से यूनेस्को की विश्व धरोवर सूची में शामिल हैं। छतरपुर जिले में स्थित यह प्रदेश का मुख्य पर्यटन स्थल है। पूर्व में स्थित पार्श्वनाथ मंदिर ,घेटाई मंदिर और आदिनाथ मंदिर का अपना अलग ही महत्त्व है। पश्चिम में लक्ष्मण मंदिर,कंदरिया महादेव,चोसठ -योगिनी, चित्रगुप्त मंदिर,विश्वनाथ और मातगेश्वर मंदिर स्थित हैं। दक्षिण में दूल्हादेव मंदिर और चतुर्भुज मंदिर स्थित हैं।

साँची- साँची बौद्ध धर्म के प्रमुख तीर्थ के रूप में विख्यात है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बने स्तूप साँची का प्रमुख आकर्षण है। इन स्तूपों का निर्माण सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के पश्चात् कराया था। वर्ष 1989 में इन्हें भी यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। विश्व विख्यात बौद्ध स्तूप यही पर हैं। यह रायसेन जिले में है। अशोक ने सांची सहित कुल 84 हजार स्तूपों का निर्माण कराया था।

उदय गिरि की गुफाएं - उदय गिरि की गुफाएं साँची से लगभग 14 किलोमीटर की दूरी पर विदिशा मार्ग पर स्थित हैं। इन गुफाओं की संख्या 20 है। ये गुफाएं चौथी ईस्वी से दसवी ईस्वी के मध्य निर्मित की गयी थीं। गुफा नं. पांच में भगवान विष्णु के वराह अवतार का चित्रण है।

माडू - यह धार जिले में स्थित है। इसकी स्थापना बाज बहादुर ने की थी। महमूद खिलजी द्वारा होशंगशाह के मकबरा का निर्माण कराया गया । यह भारत की पहली संगमरमर से निर्मित इमारत मानी जाती है। मांडू को आनंद की नगरी (सिटी ऑफ जॉय) भी कहा जाता है। रानी रूपमती,जहाज महल,अशर्फी महल,हिण्डोला महल आदि यहाँ के दर्शनीय स्थान है। मांडू मूल रूप से मालवा के परमार राजाओ की राजधानी था।

ग्वालियर - ग्वालियर सिंधिया राजवंश की राजधानी थी। इस किले का निर्माण 525 ईस्वी में हुआ। ग्वालियर के दर्शनीय स्थलों में मान मंदिर,गूजरी महल, तेली मंदिर,मोहम्मद गौस का मकबरा,गुरुद्वारा दाताबंदी छोड़,तानसेन का मकबरा और सूर्य मंदिर प्रमुख हैं।

ओरछा - ओरछा की स्थापना सोलहवी शताब्दी में बुंदेला शासक रुद्रप्रताप ने की थी ।यह बेतवा नदी के तट पर स्थित है। पहाड़ों की गोद में स्थित ओरछा एक समय बुंदेलखंड की राजधानी हुआ करता था। यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल है - राम राजा महल , रायप्रवीण महल,चतुर्भुज मंदिर और लक्ष्मी नारायण मंदिर।

पचमढ़ी - इस पर्वतीय स्थल की खोज का श्रेय ब्रिटिश साम्राज्य के एक अधिकारी कैप्टन जे.फारसोथ को जाता है। पचमढ़ी को "सतपुड़ा की रानी"एवं "मध्यप्रदेश का कश्मीर" कहा जाता है। प्रदेश का एकमात्र स्थान जिसे बायोस्फीयर रिजर्व (जैवमंडल आरक्षित) क्षेत्र घोषित किया गया। पचमढ़ी के प्रमुख दर्शनीय स्थल इस प्रकार हैं- जटाशंकर गुफा, पांडव गुफा, हांड़ी खो, प्रियदर्शिनी पाइंट, बड़े महादेव, गुप्त महादेव।

उज्जैन - प्राचीन ऐतिहासिक नगरी उज्जैयनी ही आज का उज्जैन है। उज्जैन देश के प्राचीन नगरों में से एक है। भगवान महाकाल की इस नगरी को अतीत में उज्जयिनी ,अवन्ती नामों से संबोधित किया जाता रहा है क्षिप्रा के किनारे , महाकाल का एकमात्र दक्षिणमुखी मंदिर है, जहाँ सिंहस्थ मेले का आयोजन होता है। महाकाल मंदिर का निर्माण परमार युग में हुआ था। यह 12 ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक है। यहाँ पर जंतर-मंतर वेधशाला है , जिसे राजा जयसिंह द्वारा बनवाया गया था।

भीमबैठिका - राजधानी भोपाल से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर भीमबैठिका स्थित है। यह स्थल शैलचित्रो के लिए प्रसिद्ध है। शैलचित्रों की खोज का श्रेय प्रसिद्ध पुरातत्व शास्त्री स्व.डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर को जाता है, उन्होंने इस स्थल की खोज वर्ष 1957-58 में की थी। इसे वर्ष 2003 में यूनिस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है।

भेडाघाट - यह जबलपुर में स्थित है। नर्मदा और बावन नदी के संगम के कारण भेडाघाट कहा जाता है। सफ़ेद संगमरमर की चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है। चौसठ योगिनी मंदिर यहीं पर है । शिव-पार्वती मंदिर ,जिसमें शिव-पार्वती नंदी पर आसीन है। धुंआधार जल प्रपात,बंदर कूदनी आदि भी यहाँ के दर्शनीय स्थल हैं।

अमरकंटक - नर्मदा नदी का उदगम स्थल अमरकंटक मनोहारी पर्यटन और धार्मिक स्थल है। नर्मदा माई के मंदिर में नर्मदा देवी और पार्वती देवी की प्रतिमा है। यहाँ से तीन नदियाँ-नर्मदा, सोन, जोहिला निकलती हैं। प्राचीन मंदिर को कलचुरी राजाओं ने बनवाया था।

ओंकारेश्वर - ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग, मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग को ममलेश्वर व अमलेश्वर भी कहा जाता है। धर्म ग्रंथों के अनुसार यहाँ 68 तीर्थ स्थल हैं। यहाँ 33 करोड़ देवता परिवार सहित निवास करते हैं। यह बारह ज्योतिर्लिंग में से एक है। यहाँ पर महादेव का मंदिर, आदिशंकराचार्य की गुफाएँ , सिद्धनाथ का मंदिर , ममलेश्वर मंदिर , ओंकारेश्वर का मंदिर आदि दर्शनीय स्थल हैं। ओंकारेश्वर का प्राचीन नाम मान्धाता है।

महेश्वर - रामायण और महाभारत में महेश्वर को महिष्मति के नाम से संबोधित किया गया है। यह खरगोन जिले में है। इसका प्राचीन नाम महिष्मति था, जो हैहय वंश की राजधानी थी ।कालांतर में अहिल्याबाई ने भी इसे अपनी राजधानी बनाया। सहस्त्रधारा जलप्रताप के साथ ही राजेश्वर मंदिर ,अहिल्या संग्रहालय भी यहं पर स्थित है। यह साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। महेश्वर नर्मदा के किनारे स्थित है। महेश्वर में फनसे , पेशवा और अहिल्या घाट हैं।

चित्रकूट- उत्तरप्रदेश एवं मध्य प्रदेश की सीमा पर सतना जिले में विन्ध्य पर्वतमाला के मध्य नेसर्गिक सोंदर्य लिए रमणीक स्थल चित्रकूट स्थित है। भगवान राम और सीता ने वनवास के चौदह वर्ष में से ग्यारह वर्ष यहाँ व्यतीत किये थे। सतना से लगभग 40 किमी. स्थित मैहर माँ शारदा के भव्य मंदिर के कारण साल भर तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहता है।

पन्ना– भगवान प्राणनाथ की नगरी पन्ना को मंदिरों का शहर भी कहा जाता है। हीरों की खानों के कारण इसे हीरक नगरी भी कहा जाता है।

भोपाल – मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल एक सुन्दर शहर है। इसे अपने तालाबों और पहाड़ों के कारण जाना जाता है। यहाँ पर बड़ा तालाब , छोटा तालाब , भारत भवन , वन विहार , इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय आदि दर्शनीय स्थल है।

भोजपुर– राजधानी भोपाल से लगभग 35 किमी. दूर बेतवा नदी के तट पर भोजपुर स्थित है। यहाँ के मंदिर में विशाल शिवलिंग स्थापित हैं।

इंदौर की होलकर छत्रियां– उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में खान नदी के उत्तरी तट पर कृष्णपुरा स्थान पर निर्मित छत्रियां होलकर शासकों की वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है।

आचार्य शंकर वाणी :

सुर मंदिर तरु मूल निवासः,शय्या भूतल मजिनं वासः।
सर्व परिग्रह भोग त्यागः,कस्य सुखं न करोति विरागः॥

श्रीमद्भगवतगीता

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥

अपने-अपने स्वाभाविक कर्मों में तत्परता से लगा हुआ मनुष्य भगवत्प्राप्ति रूप परमसिद्धि को प्राप्त हो जाता है। अपने स्वाभाविक कर्म में लगा हुआ मनुष्य जिस प्रकार से कर्म करके परमसिद्धि को प्राप्त होता है, उस विधि को तू सुन ॥

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥

जिस परमेश्वर से संपूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परमसिद्धि को प्राप्त हो जाता है॥

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥

दूसरे के अच्छी प्रकार के आचरण किए हुए धर्म से भी अपना गुणरहित धर्म श्रेष्ठ है, क्योंकि स्वभाव से नियत किए हुए स्वधर्मरूप कर्म को करता हुआ मनुष्य पाप को नहीं प्राप्त होता ॥

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥

अतएव हे कुन्तीपुत्र! दोषयुक्त होने पर भी सहज कर्म को नहीं त्यागना चाहिए, क्योंकि धुएँ से अग्नि की भाँति सभी कर्म किसी-न-किसी दोष से युक्त हैं ॥

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां सन्न्यासेनाधिगच्छति ॥

सर्वत्र आसक्ति रहित बुद्धिवाला, स्पृहा रहित और जीते हुए अंतःकरण वाला पुरुष सांख्ययोग के द्वारा उस परम नैष्कर्म्य सिद्धि को प्राप्त होता है ॥

रामचरितमानस

राम राज बैठें त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ॥
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई ॥

श्री रामचंद्रजी के राज्य पर प्रतिष्ठित होने पर तीनों लोक हर्षित हो गए, उनके सारे शोक जाते रहे । कोई किसी से बैर नहीं करता । श्री रामचंद्रजी के प्रताप से सबकी विषमता मिट गई ॥

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग ॥

सब लोग अपने-अपने वर्ण और आश्रम के अनुकूल धर्म में तत्पर हुए सदा वेद मार्ग पर चलते हैं और सुख पाते हैं। उन्हें न किसी बात का भय है, न शोक है और न कोई रोग ही सताता है ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥

रामराज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं ॥

चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥
राम भगति रत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी ॥

धर्म अपने चारों चरणों (सत्य, शौच, दया और दान) से जगत् में परिपूर्ण हो रहा है, स्वप्न में भी कहीं पाप नहीं है । पुरुष और स्त्री सभी रामभक्ति के परायण हैं और सभी परम गति (मोक्ष) के अधिकारी हैं ॥

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब बिरुज सरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ॥

छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती, न किसी को कोई पीड़ा होती है । सभी के शरीर सुंदर और निरोग हैं। न कोई दरिद्र है, न दुःखी है और न दीन ही है । न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन ही है ॥

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥

सभी दम्भरहित हैं, धर्मपरायण हैं और पुण्यात्मा हैं। पुरुष और स्त्री सभी चतुर और गुणवान् हैं। सभी गुणों का आदर करने वाले और पण्डित हैं तथा सभी ज्ञानी हैं। सभी कृतज्ञ (दूसरे के किए हुए उपकार को मानने वाले) हैं, कपट-चतुराई (धूर्तता) किसी में नहीं है॥

सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी ॥
एकनारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥

सभी नर-नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं और ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं। सभी पुरुष मात्र एक पत्नीव्रती हैं। इसी प्रकार स्त्रियाँ भी मन, वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं॥

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज॥

श्री रामचंद्रजी के राज्य में दण्ड केवल संन्यासियों के हाथों में है और भेद नाचने वालों के नृत्य समाज में है और 'जीतो' शब्द केवल मन के जीतने के लिए ही सुनाई पड़ता॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥

वनों में वृक्ष सदा फूलते और फलते हैं। हाथी और सिंह (बैर भूलकर) एक साथ रहते हैं। पक्षी और पशु सभी ने स्वाभाविक बैर भुलाकर आपस में प्रेम बढ़ा लिया है॥

कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा॥
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा॥

पक्षी कूजते हैं, भाँति-भाँति के पशुओं के समूह वन में निर्भय विचरते और आनंद करते हैं। शीतल, मन्द, सुगंधित पवन चलता रहता है। भौंरे पुष्पों का रस लेकर चलते हुए गुंजार करते जाते हैं॥

लता बिटप मागें मधु चवहीं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥
ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी॥

बेलें और वृक्ष माँगने से ही मधु (मकरन्द) टपका देते हैं। गायें मनचाहा दूध देती हैं। धरती सदा खेती से भरी रहती है। त्रेता में सत्ययुग की करनी (स्थिति) हो गई॥

प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी॥
सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी॥

समस्त जगत् के आत्मा भगवान् को जगत् का राजा जानकर पर्वतों ने अनेक प्रकार की मणियों की खानें प्रकट कर दीं। सब नदियाँ श्रेष्ठ, शीतल, निर्मल और सुखप्रद स्वादिष्ट जल बहाने लगीं।

सागर निज मरजादाँ रहहीं। डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं॥
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा॥

समुद्र अपनी मर्यादा में रहते हैं। वे लहरों द्वारा किनारों पर रत्न डाल देते हैं, जिन्हें मनुष्य पा जाते हैं। सब तालाब कमलों से परिपूर्ण हैं। दसों दिशाओं के विभाग अत्यंत प्रसन्न हैं॥

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज॥

श्री रामचंद्रजी के राज्य में चंद्रमा अपनी किरणों से पृथ्वी को पूर्ण कर देते हैं। सूर्य उतना ही तपते हैं, जितने की आवश्यकता होती है और मेघ माँगने से जल देते हैं॥

अवधपुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज॥

जहाँ भगवान् श्री रामचंद्रजी स्वयं राजा होकर विराजमान हैं, उस अवधपुरी के निवासियों के सुख-संपत्ति के समुदाय का वर्णन हजारों शेषजी भी नहीं कर सकते॥

बोधवाक्य: " एक व्यक्ति एक विचार के लिए मर सकता है, लेकिन उसका विचार, उसकी मृत्यु के बाद एक हजार जन्मों में अवतरित होगा। आजादी दी नहीं जाती, ली जाती है। कोई संघर्ष नहीं है, तो जीवन अपनी आधी रुचि खो देता है। इतिहास में कोई वास्तविक परिवर्तन चर्चा से कभी हासिल नहीं हुआ है। राजनीतिक सौदेबाजी का रहस्य यह है कि आप वास्तव में जो हैं, उससे अधिक मजबूत दिखना है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी आजादी की कीमत अपने खून से चुकाएं।"- सुभाष चन्द्र बोस

बोध कथा : धर्म से विचलित नहीं

एक बार एक विदेशी महिला स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित होकर उनके पास आई और बोली की मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ , ताकि आपके जैसा ही मुझे गौरवशाली पुत्र की प्राप्ति हो और बड़ा होकर इस संसार को ज्ञान की प्राप्ति कराये और मेरा नाम रोशन करे। इस पर स्वामी जी बोले कि "क्या आप जानती है की मैं एक संन्यासी हूँ , भला मैं विवाह कैसे कर सकता हूँ फिर भी अगर आप चाहो तो हमें अपना पुत्र बना ले, जिससे मेरा संन्यास भी नहीं टूटेगा और आपको मेरे जैसा पुत्र भी मिल जाएगा।" इतना सुनते ही वह महिला स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ी और बोली धन्य हैं। आप साक्षात् ईश्वर के सामान हैं जो किसी भी परिस्थिति में भी अपने धर्म से विचलित नहीं होते।

मासिक गीत / गान :

एकता, स्वतंत्रता, समानता रहे।
देश में चरित्र की महानता रहे, महानता रहे॥
कण्ठ हैं करोड़ों, गीत एक राष्ट्र का, रंग हैं अनेक, चित्र एक राष्ट्र का
रूप हैं अनेक, भाव एक राष्ट्र का, शब्द हैं अनेक, अर्थ एक राष्ट्र का
चेतना, समग्रता, समानता रहे, देश में चरित्र की महानता रहे, महानता रहे॥

विकास में विवेक स्वप्न एक राष्ट्र का,योजना अनेक, ध्यान एक राष्ट्र का
कर्म हैं अनेक, लक्ष्य एक राष्ट्र का,पंथ हैं अनेक, धर्म एक राष्ट्र का
सादगी, सहिष्णुता, समानता रहे,देश में चरित्र की महानता रहे, महानता रहे॥

जाति हैं अनेक, रक्त एक राष्ट्र का,पंक्ति हैं अनेक, लेख एक राष्ट्र का
गाँव हैं अनेक, अंग एक राष्ट्र का,किरण हैं अनेक, सूर्य एक राष्ट्र का
जागरण, मनुष्यता, समानता रहे, देश में चरित्र की महानता रहे, महानता रहे॥

----------00----------

फरवरी

माघ : किसी भी राष्ट्र की पहचान केवल भौतिक विकास और आर्थिक समृद्धता से करना योग्य नहीं हो सकता, क्योंकि अगर पीढ़ी दर पीढ़ी उच्च मूल्यों और नैतिक शिक्षा को हस्तांतरित नहीं किया गया हो तो या तो वो राष्ट्र संस्कृति विहीन प्रतीत होता है या फिर नई पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय होते देर नहीं लगती। हर राष्ट्र की एक संस्कृति परम आवश्यक चीज होती है, भारत जितना विशाल अपने भूमि मापदंड से है, उससे विस्तृत भारत की संस्कृति है। यहाँ प्रत्येक प्रदेश की अपनी भाषा, परिवेश, खान-पान, त्यौहार, लोगों की जीवन-शैली इत्यादि में भिन्नता दिखाई पड़ती है।

भारत को श्रेष्ठतम महानुभावों, संतों-महर्षियों ने सर्वोच्च मूल्य और विचार परंपरा दी है, जो हर भारतीय को गौरवान्वित करती है, तथा जीवन के पथ पर मार्गदर्शक के रूप में प्रेरणा देती है। भारत ने विश्व को सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया है। भारत के वेद, पुराण, शास्त्र अति प्राचीन और महान है, जिसमें मनुष्य को जीवन से मृत्यु तक किस प्रकार का व्यवहार समाज, परिवार और वैयक्तिक तौर पर करना है, बताया गया है। भौतिक विकास के साथ अध्यात्मिक विकास किस प्रकार करना है ,जैसे मूल्यों की उदात्त शिक्षा और जीवन शैली भी विस्तृत तरीके से दी गई है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : भारतीय काल गणना का परिचय कराया जाये।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

डिजाइन

1.**डिजाइन के सिद्धांत व अवधारणाएं :** जिनका प्रयोग कला के संरचनात्मक तत्वों जैसे रेखा, आकार, रंग, पोत (Texture), स्वरूप आदि को रचनात्मक रूप से व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है। ये सिद्धांत एक प्रकार के मार्गदर्शन तथा दिशानिर्देश है जिनका पालन प्रत्येक क्षेत्र के डिजाइनर्स को करना चाहिए। प्रत्येक कला के कुछ आधारभूत सिद्धांत होते हैं। वस्त्र निर्माण भी एक कला है तथा इसके सिद्धांत भी अन्य कलाओं के सिद्धांतों के समान है।

इन्हें आधारभूत मानकर ही करना चाहिए। ये सिद्धांत अत्यंत लचीले हैं। इनका वही स्वरूप स्वीकार करना चाहिए जो प्रचलित फैशन तथा विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप हो। कला के सिद्धांत विभिन्न प्रकार की डिजाइन के लिए मानक का कार्य भी करते हैं। इस अध्याय में हम वस्त्र रचना पर लागू होने वाले सिद्धांतों का अध्ययन करेंगे जिससेहम उत्तम डिजाइन को समझ सके, पहचान सकें साथ ही प्रचलित फैशन के अनुसार ही वस्त्र के नवीन स्वरूप को विकसित करने में समर्थ हो।

2. डिजाइन के सिद्धांत- अर्थ एवं परिभाषा : चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, हस्तशिल्प, औद्योगिक कला, व्यावसायिक कला एवंअन्य संबंधित कलाओं में प्रचलित कुछ स्पष्ट रूप से परिभाषित डिजाइन सिद्धांत है।इनका उपयोग सुंदरता का सृजन करने हेतु सूत्र के समान किया जा सकता है. इसके साथ-साथ ये सिद्धांत ये भी निर्धारित करते हैं कि क्यों एक वस्तु कलात्मक रूप से उत्तम है ? कला के तत्वों को व्यवस्थित करने हेतु बल, संतुलन,अनुपात एवं लयके सिद्धांतों का उपयोग इस प्रकार से किया जाता है कि डिजाइन में भिन्नता या रुचि के साथ एकरूपता आ सके।वस्त्रों की डिजाइन एवं उत्पादन के लिए डिजाइन के सिद्धांत अत्यंत आवश्यक हैं। सौंदर्य की दृष्टि से मनभावन परिधान या वस्त्र बनाने में प्रत्येक सिद्धांत की एक विशिष्ट भूमिका होती है। डिज़ाइनिंग में अधिकांशतः एक से अधिक सिद्धांतों को एकीकृत किया जाता है जिससे डिजाइन के तत्वों से एक समेकित एवं आकर्षक स्वरूप की रचना हो सके। इस सत्र में हम वस्त्रों के डिजाइन में उपयोग होने वाले प्रत्येक डिजाइन सिद्धांत की पृष्ठभूमि एवं उनके अनुप्रयोगों का अध्ययन करेंगे।

3. डिजाइन के विभिन्न सिद्धॉंत : डिजाइन के पांच निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांत हैं- 3.1 संतुलन 3.2 अनुपात 3.3 एकरूपता 3.4 लय 3.5 बल।

3.1 संतुलन : वोल्फ (2011) के अनुसार संतुलन का तात्पर्य डिजाइन के विभिन्न भागों में आपसी संतुलन या एकरूपता से है। संतुलन प्राप्त करने के लिए, परिधान या वस्त्र के संपूर्ण डिजाइन में समान दृश्य भार होना चाहिए। वस्त्र की संरचनात्मक विशेषताएँ, अलंकरण अथवा सजावटी तत्वों के आपसी संतुलन से उसके रूप को अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है। फैशन डिजाइन में भी संतुलन सीम, हेमलाइन एवं नेकलाइन जैसे तत्वों के उपयोग से प्राप्त किया जा सकता है। एक टेक्सटाइल डिजाइनर वस्त्र की सतह पर संतुलन उत्पन्न करने के लिए के डिजाइन के तत्वों का उपयोग करता है। रंग, रेखा तथा पोत (टेक्सचर) किसी भी डिज़ाइन के संतुलन को प्रभावित कर सकतेहैं। उदाहरण के लिए, ठंडे और हल्के रंगों में गहरे, गर्म रंगों की तुलना में कम दृश्य भार होता है। अतः एक गहरे, गर्म रंग की मात्रा को अधिक मात्रा में शांत, हल्के रंगों के साथ संतुलित किया जा सकता है।

फैब्रिक डिजाइन में प्रयुक्त संतुलन को दो समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है: औपचारिक एवं अनौपचारिक संतुलन। (i) जब किसी डिजाइन के दोनों तरफ समान दृश्य भार होता है तो सममित या औपचारिक संतुलन प्राप्त होता है। (ii) डिजाइन के विभिन्न तत्वों में स्थिरता के परिणामस्वरूप ही सममित या औपचारिक संतुलन उत्पन्न किया जा सकता है। (iii) यह स्थायित्व का भाव प्रदान करता है, क्योंकि दोनों पक्ष बिल्कुल समान होते हैं उदाहरण के लिए, एक सीधी हेमलाइन में सममित संतुलन होता है। डिजाइन केंद्र से समान दूरी पर समान कला के तत्वों या डिजाइन के विवरणों की उपस्थिति, जैसे कि जेब, सीम, प्लीट्स या टक, यूनिफॉर्म, ब्लेज़र, नीली जींस और अन्य सामान्य कपड़ों में औपचारिक संतुलन का उपयोग करने के उत्तम उदाहरण हैं। (iv) औपचारिक संतुलन डिजाइन के सिद्धांतों का सबसे आम और सस्ता अनुप्रयोग है। असममित संतुलन या अनौपचारिक संतुलन भी प्रभावी हो सकता है। इसकी कोई केंद्र रेखा नहीं होती है, लेकिन फिर भी इसमें संतुलन की भावना दर्शाई जा सकती है। जो डिजाइन की सतह पर समान दृश्य भार बनाने के लिए विभिन्न तत्वों के संयोजन से प्राप्त की जा सकती है। उदाहरण के लिए, एक स्कर्ट जिसमें असमान हेमलाइन के द्वारा विषम संतुलन उत्पन्न किया गया है। (v) अधिकांशतः फैशन में संतुलन का अनुसरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, पैंट के ऊपर और नीचे के बीच विषम संतुलन वाले बेल-बॉटम का प्रचलन। विषम नेकलाइन भी इसका उत्तम उदाहरण है। (vi) औपचारिक की तुलना में अनौपचारिक संतुलन अधिक जटिल और कठिन है। (vi) अनौपचारिक संतुलन प्राप्त करने के लिए रेखा, रंग, आकार एवं टेक्सचर जैसे तत्वों का असममित उपयोग किया जाता है।

रेडियल बैलेंस (Radial Balance): इस संतुलन में डिजाइन एक केंद्रीय बिंदु से विकीर्ण होती है। रेडियल संतुलन औपचारिक संतुलन के समान है, लेकिन इसमें विभिन्न तत्व एक केंद्रीय बिंदु के चारों ओर एक वृत्ताकार पैटर्न बनाते हुए विकीर्ण होते हैं।

3.2 अनुपात (Proportion) एवं पैमाना: अनुपात डिजाइन में दो या दो से अधिक तत्वों के बीच का संबंध है, विशेष रूप से उनका आकार और पैमाना। जब चीजें " आनुपातिक" होती हैं, तो इसका मतलब है कि उनके बीच एक समन्वय है जो डिजाइन को सौंदर्य तथा आकर्षण प्रदान करता है।पैमाना(Scale) तत्वों के आकार या माप का मानक है। इसका उपयोग अन्य सिद्धांतों केसाथ संयोजन में किया जा सकता है। यदि किसी डिजाइन को पैमाने के अनुसार बनायाजाता है, तो यह सटीक आकार के साथ एक वस्तु को दिखाता है (हालाँकि इसे उसके वास्तविक आकार से छोटा या बड़ा किया जा सकता है)। एक परिधान आम तौर पर अधिक दिलचस्प और मनभावन होता है यदि इसे असमान भागों में विभाजित किया जाता है, और यदि यह भाग शरीर के अनुपात में होते हैं।

(स्वर्ण औसत अनुपात) : यह एक ठोस एवं गणितीय दृष्टिकोण है जो हमें हर बार अद्भुत डिज़ाइन बनाने में सहायक हो सकता है। इसे सुनहरा अनुपात भी कहते हैं। गोल्डन रेशियो एक गणितीय अनुपात है जिसे प्रकृति,वास्तुकला, पेंटिंग एवं संगीत आदि जैसे किसी भी क्षेत्र में देखा जा सकता है। स्वर्णिम अनुपात क्या है ? (i) गोल्डन सेक्शन, गोल्डन मीन, डिवाइन अनुपात या ग्रीक अक्षर "फी" (Phi) के रूप में भी जाना जाता है। गोल्डन रेशियो एक विशेष संख्या है जो लगभग 1.618 के बराबर होती है। (ii) स्वर्णिम अनुपात फाइबोनैचि अनुक्रम (0,1,1,2,3,5,8,13,21…….) से आता है। यह संख्याओं का एक स्वाभाविक रूप से होने वाला अनुक्रम है जो हर स्थान पर

पाया जा सकता है, एक पेड़ पर पत्तियों की संख्या से लेकर एक सीशेल के आकार तक (iii) फाइबोनैचि अनुक्रम पूर्व की दो संख्याओं का योग है। 0, 1,1, 2, 3, 5, 8, 13, 21…….इसी तरह, अनंत तक। इस पैटर्न से, यूनानियों ने अनुक्रम में किन्हीं दो संख्याओं के बीच अंतर को बेहतर ढंग से व्यक्त करने के लिए स्वर्ण अनुपात विकसित किया।

3.3 एकरूपता: एकरूपता का अर्थ डिजाइन के सभी पहलुओं की सुखद दृश्य एकता से है। यह डिजाइन केअन्य सभी तत्वों और सिद्धांतों का सारांश है। डिजाइन तत्वों में कोई अतिरिक्त भिन्नता नहीं है जो संपूर्ण डिज़ाइन या रूप को अलग दिखा सकती है। कला में एक ही मुख्य विषय होता है जबकि अन्य माइनर तत्व इसका समर्थन करते हैं (i) एकरूपता (Harmony) कला का सिद्धांत है जो भिन्न-भिन्न लेकिन संबंधित भागों का समानता के साथ सामंजस्य बनाता है। (ii) यह ध्यान रखना चाहिए कि एकरूपता एकता के सिद्धांत से भिन्न है। फिर भी एकरूपता डिजाइन में एकता उत्पन्न करता है। (iii) एकरूपता डिजाइन के तत्वों (रंग,रेखा,आकार,टेक्सचर,पैटर्न) का उपयोग डिजाइन के विभिन्न भागों के बीच एकजुटता की भावना उत्पन्न करने के लिए करता है। उदाहरण के लिए एक विशिष्ट रंग योजना के अनुसार संबंधित रंगों का उपयोग एकरूपता (Harmony) उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है (iv) एकरूपता को सामंजस्यता के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है। डिजाइन के तत्वों की पुनरावृत्ति सामंजस्य प्राप्त करने के सबसे आसान विधि है। (v) उदाहरण के लिए, निम्न छवि के सभी आकर सामंजस्य में हैं क्योंकि हर आकर विभिन्न रंगों का एक वक्र है।

3.4 लय : लय कला का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। लय उत्पन्न करने के लिए डिजाईन में रंग,रचना तथा रेखाओं का अलंकरण ऐसा होना चाहिए कि दृष्टि एक सिरे से दूसरे सिरे तक गतिशील रहे. लय डिजाईन में गति (Movement) उत्पन्न करने की कला है।

लय दो प्रकार की होती है: (i) नियमित लय : यह एकरूपता एवं क्रम प्रस्तुत करने की सबसे प्राचीन तथा सरल विधि है. यह संगीत, नृत्य एवं कला का आधार है। यह नियमित रेखाओं की प्रणाली होती है जैसे धारीदार वस्त्र (ii) स्वछन्द लय: यह अनियमित अंतरालों या असमान भागों की रचना से उत्पन्न की जा सकती है ।इस प्रकार की लय में दृष्टि कुछ अंतराल के पश्चात आसानी से स्वछंद विचरण करती है।

डिजाईन में लय उत्पन्न करना: डिजाईन में निम्न प्रकार से लय उत्पन्न की जा सकती है – (i) दोहराव द्वारा (ii) अनुक्रम द्वारा (iii) लगातार रेखीय गति द्वारा (iv) विकिरण द्वारा

3.5 बल : बल का उद्देश्य दर्शकों का ध्यान एक विशिष्ट डिजाइन तत्व की ओर आकर्षित करना है। आर्किटेक्चर, लैंडस्केप डिज़ाइन, फ़ैशन डिज़ाइन तथा डिज़ाइन के अधिकांश क्षेत्रों में बल का उपयोग किया जाता हैं। बल कला का वह सिद्धांत है जिसमें आँखें सर्वप्रथम किसी डिजाईन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग पर दृष्टिपात करती है , तत्पश्चात किसी अन्य कम महत्वपूर्ण भागों पर दृष्टिपात करती है . किसी डिजाईन में निम्न बिन्दुओं के आधार पर बल उत्पन्न किया जा सकता है –(i) डिजाईन के समस्त तत्वों को समूहबद्ध करके (ii) विपरीत रंगों का उपयोग करके (iii) अलंकरण द्वारा (iv) रिक्त पृष्ठभूमि द्वारा(v) विपरीत रेखा , आकर या माप के द्वारा (vi) अस्वाभाविक स्वरुप के प्रयोग द्वारा (vii) अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक प्रकाश का उपयोग करके (viii) अस्वाभाविक पोत (टेक्सचर) के उपयोग

उपरोक्त विधियों में से किसी भी एक दो या अधिक विधियों का प्रयोग करके बल उत्पन्न किया जा सकता है। यह ध्यान में रखना चाहिए की यदि एक से अधिक तत्वों का उपयोग किया जा रहा है तो बराबर मात्रा में दो या तीन तत्वों का उपयोग करने से रुचि विभाजित हो जाती है और परिधान का सौंदर्य असंगठित हो जाता है। यदि एक तत्व को प्रमुखता दी जाए और अन्य तत्वों का प्रयोग उसके प्रभाव की वृद्धि करने के लिए उपयोग किया जाए तो परिणाम उत्तम होता है। कहाँ बल दिया जाए इस प्रश्न पर विचार करने से आकर्षण केंद्र (Focal Point) की धारणा स्पष्ट होती है।

आकर्षण केंद्र (Focal Point): ऐसा केंद्र बिन्दु जिसपर व्यक्ति की प्रथम दृष्टि केन्द्रित होती है आकर्षण का केंद्र या रुचि केंद्र कहलाता है। यह बल के सिद्धांत के अनुरूप आता है जिसमें डिजाइन के किसी एक विशिष्ट बिंदु पर इस प्रकार बल दिया जाता है कि वह आकर्षण का केंद्रबिंदु बन जाए।

सारांश: वस्त्रों की डिजाइन एवं उत्पादन के लिए डिजाइन के सिद्धांत अत्यंत आवश्यक हैं। सौंदर्य की दृष्टि से मनभावन परिधान या वस्त्र बनाने में प्रत्येक सिद्धांत की एक विशिष्ट भूमिका होतीहै। डिज़ाइनिंग में अधिकांशतः एक से अधिक सिद्धांतों को एकीकृत किया जाता है जिससे डिजाइन के तत्वों से एक समेकित एवं आकर्षक स्वरूप की रचना हो सके। कला के तत्वों (रेखा,आकार, रंग, पोत (Texture), स्वरूप) को व्यवस्थित करने हेतु बल(Emphasis),संतुलन(Balance), अनुपात(Proportion) एवं लय(Rhythm) के सिद्धांतो का उपयोग इस प्रकार से किया जाता है कि डिजाइन में भिन्नता या रुचि के साथ एकरूपता आ सके।

आचार्य शंकर वाणी –

योगरतो वाभोगरतोवा,सङ्गरतो वा सङ्गवीहिनः।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं,नन्दति नन्दति नन्दत्येव ॥

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥

जो कि ज्ञान योग की परानिष्ठा है, उस नैष्कर्म्य सिद्धि को जिस प्रकार से प्राप्त होकर मनुष्य ब्रह्म को प्राप्त होता है, उस प्रकार

हे कुन्तीपुत्र! तू संक्षेप में ही मुझसे समझ ॥
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥
विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानस।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥

विशुद्ध बुद्धि से युक्त तथा हलका, सात्त्विक और नियमित भोजन करने वाला, शब्दादि विषयों का त्याग करके एकांत और शुद्ध देश का सेवन करने वाला, सात्त्विक धारण शक्ति के द्वारा अंतःकरण और इंद्रियों का संयम करके मन, वाणी और शरीर को वश में कर लेने वाला, राग-द्वेष को सर्वथा नष्ट करके भलीभाँति दृढ़ वैराग्य का आश्रय लेने वाला तथा अहंकार, बल, घमंड, काम, क्रोध और परिग्रह का त्याग करके निरंतर ध्यान योग के परायण रहने वाला, ममतारहित और शांतियुक्त पुरुष सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में अभिन्नभाव से स्थित होने का पात्र होता है ॥

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥

फिर वह सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में एकीभाव से स्थित, प्रसन्न मनवाला योगी न तो किसी के लिए शोक करता है और न किसी की आकांक्षा ही करता है। ऐसा समस्त प्राणियों में समभाव वाला योगी मेरी पराभक्ति को प्राप्त हो जाता है ॥

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥

उस पराभक्ति के द्वारा वह मुझ परमात्मा को, मैं जो हूँ और जितना हूँ, ठीक वैसा-का-वैसा तत्त्व से जान लेता है तथा उस भक्ति से मुझको तत्त्व से जानकर तत्काल ही मुझमें प्रविष्ट हो जाता है॥

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥

मेरे परायण हुआ कर्मयोगी तो संपूर्ण कर्मों को सदा करता हुआ भी मेरी कृपा से सनातन अविनाशी परमपद को प्राप्त हो जाता है ॥

रामचरितमानस

कलियुग का वर्णन:

बहु दाम सँवारहिं धाम जती। बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती ॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही। कलि कौतुक तात न जात कही ॥

संन्यासी बहुत धन लगाकर घर सजाते हैं । उनमें वैराग्य नहीं रहा, उसे विषयों ने हर लिया । तपस्वी धनवान हो गए और गृहस्थ दरिद्र। हे तात ! कलियुग की लीला कुछ कही नहीं जाती ॥

सुत मानहिं मातु पिता तब लौं। अबलानन दीख नहीं जब लौं ॥
ससुरारि पिआरि लगी जब तें। रिपुरूप कुटुंब भए तब तें ॥

जब से ससुराल प्यारी लगने लगी, तब से कुटुम्बी शत्रु रूप हो गए । राजा लोग पाप परायण हो गए, उनमें धर्म नहीं रहा पुत्र अपने माता-पिता को तभी तक मानते हैं, जब तक स्त्री का मुँह नहीं दिखाई पड़ता ॥

कबि बृंद उदार दुनी न सुनी। गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी ॥
कलि बारहिं बार दुकाल परै। बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥

कवियों के तो झुंड हो गए, पर दुनिया में उदार सुनाई नहीं पड़ता । गुण में दोष लगाने वाले बहुत हैं, पर गुणी कोई भी नहीं । कलियुग में बार-बार अकाल पड़ते हैं। अन्न के बिना सब लोग दुःखी होकर मरते हैं ॥

जे सठ गुर सन इरिषा करहीं। रौरव नरक कोटि जुग परहीं ॥
त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा। अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥

जो मूर्ख गुरु से ईर्षा करते हैं, वे करोड़ों युगों तक रौरव नरक में पड़े रहते हैं। फिर वे तिर्यक् (पशु, पक्षी आदि) योनियों में शरीर धारण करते हैं और दस हजार जन्मों तक दुःख पाते रहते हैं ॥

बैठि रहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खल मल मति ब्यापी ॥
महा बिटप कोटर महुँ जाई। रहु अधमाधम अधगति पाई॥

अरे पापी! तू गुरु के सामने अजगर की भाँति बैठा रहा। रे दुष्ट! तेरी बुद्धि पाप से ढँक गई है, (अतः) तू सर्प हो जा और अरे अधम से भी अधम! इस अधोगति (सर्प की नीची योनि) को पाकर किसी बड़े भारी पेड़ के खोखले में जाकर रह ॥

करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि।
बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति मोरि ॥

प्रेम सहित दण्डवत् करके वे ब्राह्मण श्री शिवजी के सामने हाथ जोड़कर मेरी भयंकर गति (दण्ड) का विचार कर गदगद वाणी से विनती करने लगे ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं॥
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥
न यावद् उमानाथ पादारविंदं। भजंतीह लोके परे वा नराणां॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं॥
जरा जन्म दुःखोद्य तातप्यमानं॥ प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥

बोधवाक्य: " अपना राष्ट्र उन्नत अवश्य हो, सब प्रकार से संवृद्धि हो, शक्तिशाली हों , वैभवशाली हो, परन्तु अपनी विशेषता को, अपनी अस्मिता को छोड़कर हम यह स्वीकार नहीं करेंगे। दुनिया के अन्दर कुछ राष्ट्र रहे और उनकी विशेषता चली गई तो फिर उनके जीने का, उनके दुनिया में रहने का कोई विशेष लाभ नहीं होता। इसलिए मात्र जीना, किसी भी प्रकार से जीना अपना उद्देश्य नहीं तो अपनी विशेषताओं को लेकर जीना अपना उद्देश्य है।" प्रो राजेंद्र सिंह 'रज्जू भैया'

नर सेवा नारायण सेवा

भारत ग्रामों का देश है जो जनजातियों से परिपूर्ण हैं। जनजाति बांधव आज की वर्तमान की प्रकृति की धारा से अनभिज्ञ हैं। उनका जीवन आर्थिक कठिनाइयों से भरा है। बीहड़ एवं दूरस्थ वनांचल ग्रामों में निवासरत जनजाति बंधु आज भी शिक्षा से वंचित हैं। अभी भी उनका जीवन वनोपज पर आधारित है। ऐसे दुर्गम एवं कठिन क्षेत्र में आज शिक्षा के विस्तार की महती आवश्यकता है।

बोधकथा :

डर का सामना

एक बार बनारस में स्वामी विवेकानंद जी दुर्गा जी के मंदिर से निकल रहे थे कि तभी वहां मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया. वे उनके नज़दीक आने लगे और डराने लगे . स्वामी जी भयभीत हो गए और खुद को बचाने के लिए दौड़ कर भागने लगे, पर बन्दर

तो मानो पीछे ही पड़ गए, और वे उन्हें दौडाने लगे. पास खड़ा एक वृद्ध संन्यासी ये सब देख रहा था , उसने स्वामी जी को रोका और बोला , " रुको ! उनका सामना करो !"

स्वामी जी तुरन्त पलटे और बंदरों के तरफ बढ़ने लगे , ऐसा करते ही सभी बन्दर भाग गए . इस घटना से स्वामी जी को एक गंभीर सीख मिली और कई सालों बाद उन्होंने एक संबोधन में कहा भी – " यदि तुम कभी किसी चीज से भयभीत हो तो उससे भागो मत , पलटो और सामना करो."

मासिक गीत / गान :

जीवन सरिता की लहर , मिटने को बनती यहाँ प्रिये
संयोग क्षणिक, फिर क्या जाने हम कहाँ और तुम कहाँ प्रिये।
पल भर तो साथ बह लें , कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें।
आओ कुछ ले लें औ' दे लें, कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें।।

हम हैं अजान पथ के राही, चलना जीवन का सार प्रिये
पर दुःसह है, अति दुःसह है एकाकीपन का भार प्रिये।
पल भर हम तुम मिल हंस खेलें , आओ कुछ ले लें औ' दे लें।
आओ कुछ ले लें औ' दे लें, कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें।।

उल्लास और सुख की निधियाँ, बस इतना इनका मोल प्रिये
करुणा की कुछ नन्हीं बूँदें कुछ मृदुल प्यार के बोल प्रिये।
सौरभ से अपना उर भर लें, हम तुम अपने में लय कर लें।
आओ कुछ ले लें औ' दे लें, कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें।।

जग के उपवन की यह मधुश्री , सुषमा का सरस वसन्त प्रिये
दो साँसों में बस जाय और ये साँसें बनें अनन्त प्रिये।
मुरझाना है आओ खिल लें, हम तुम खुलकर जी लें मिल लें ।।
आओ कुछ ले लें औ' दे लें, कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें।।

(भगवती चरण वर्मा)

----------00----------

मार्च

फाल्गुन : 'समय' के तीन अर्थ हैं। सेकेण्ड, मिनट, घण्टा आदि कालावधियों के अनन्त प्रवाह के रूप में जो 'समय' व्यक्ति को जीवन काल के रूप में मिला है उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना तथा निश्चित कार्य करने की आदत एक समय-निष्ठा है। समय का दूसरा अर्थ है 'करार' शर्त या वचनदान। इसके अनुसार हमने जो 'करार' किया है उसकी पवित्रता की रक्षा करते हुए उसको पूर्णता से निभाने के लिए तत्पर रहना ही दूसरी समय-निष्ठा है। समय का तीसरा अर्थ है - जैसा कि परम्परा से 'कवि-समय' की उक्ति में प्रकट होता है। इस अर्थ में समय निष्ठा को परम्परा में अन्ध-विश्वास का पर्यायवाची मानना भूल होगी। अन्धविश्वास, सत्य-निष्ठा के विरुद्ध है। यह स्थायी सत्य एवं तात्कालिक सत्य के रूप में प्रकट होता है। परम्परा वाचक समय निष्ठा रखने का अभिप्राय यह है कि हम उसकी पवित्रता में विश्वास रखें और उसको छोडने के लिए तभी तैयार हों , जब वह सत्य-निष्ठा अथवा अन्य निष्ठाओं की विरोधी सिद्ध हो जाय। पंच निष्ठा में 'सत्य' का अनुसंधान, 'शिवं' का अनुकरण तथा 'सुन्दरं' का दर्शन का प्रयास समाविष्ट है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : विश्व जल दिवस के अवसर पर जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण में परिचर्चा कराने के साथ वृक्षारोपण के लिए प्रोत्सहित किया जाये।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री

स्वरोजगार के लिए आवश्यक साधन (भाग एक)

एक ओर जीडीपी बढ़ाने की शासन की तैयारी, दूसरी और डिग्री धारकों की लम्बी सूची/ ऐसे में संतुलन बनाने के लिए आवश्यक है, कि नौकरी को ही एक मात्र जीविका का साधन न मानकर स्वरोजगार की ओर भी बढ़ना होगा। तकनीकी शिक्षा के इस युग में स्वरोजगार एक महत्वाकांक्षी संकल्पना है, इसमें आत्मनिर्भर सबसे बड़ी संभावना मानी जाने लगी है और इसलिए इसको ठीक से समझने के लिए इसके संसाधनों को जानना अति आवश्यक है।

कई युवा जिनके पास शानदार व्यापारिक विचार होते हैं लेकिन व्यवसाय योजना बनाने या उत्पाद एवं सेवा शुरू करने में उन्हें कठिनाइयाँ होती हैं। व्यवसाय के लिए धन जुटाना भी मुश्किल हो सकता है, खासकर यदि भावी स्व-नियोजित व्यक्ति के पास अपनी पूंजी नहीं हो तो बैंकों से धन प्राप्त करने हेतु भी प्रशिक्षण और प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है।

स्व-रोजगार चुनने का कारण:(i) स्व-रोजगार अपने आय का साधन तो होता ही है, चार अन्य लोगों को भी रोजगार दे सकते है (ii) स्वयं के विचार/ न्याय सामाजिक सोच को क्रियान्वित करने या अवसर प्राप्त होता है (iii) पारिवारिक परम्परागत व्यवसाय को प्रोत्साहन (iv) सामूहिक कार्य में (लीडरशिप) नेतृत्व के विकास के लिए (v) आय का पहला स्रोत कौन- सा है?

लाभ: (i) स्वायत्तता (ii) स्वयं मालिक बनना (iii) धन एवं मान कमाना (iv) आर्थिक, सामजिक परिस्थिति के आधार पर समयावधि के लिए कार्य करना (v) अपने कौशल विकास का अवसर प्राप्त होता है एवं पसंद एवं किस्म का कार्य करना।

आवश्यक गुण: (i) रिस्क उठाने की इच्छा (धैर्य) (ii) समय के अनुसार चलने की मानसिकता (iii) सामाजिक सरोकार की वृत्ति (iv) स्व-अनुशासन (v) कड़ी मेहनत के लिए प्रतिबद्ध (vi) संकल्प शाक्ति (vii) ऊर्जा-शरीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक क्षमता (viii) रचनात्मकता।

स्व-रोजगार के बारे में सोचने से पहले कुछ प्रश्न: (i) क्या मैं जोखिम लेने वाला हो सकता हूं? (ii) मैं अनिश्चितता का जवाब कैसे दूं? (iii) क्या मुझे अवसर का पता है? (iv) मैं कितनी मेहनत कर सकता हूं? (v) क्या मैं एक यथार्थवादी हूँ ? (vi) क्या मैं उपभोक्ता की नजर से देख सकता हूं? (vii) मैं कितना अनुशासित हूँ? (viii) क्या मैं आगे की योजना बना सकता हूँ? (ix) क्या मैं नेटवर्किंग कर पाऊंगा? क्या मैं कंप्यूटर फ्रेण्डली हूँ? (x) क्या मुझमे व्यावसायिक जागरूकता है? (xi) मैं प्रतिबद्धता और प्राथिमकता क्या है? (xii)क्या मैं स्व-प्रेरित हूं? (xiii)व्यावसायिकता का मेरे लिए क्या मतलब है?

काम के सामान्य क्षेत्र: (i) सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) (ii) कृषि एवं उद्यानिकी (iii) क्राफ्ट (iv) स्वास्थ्य और बीम (v) परम्परा क्षेत्र (vi)संचार-माध्यम (vii) सिनेमा- संगीत-रचनात्मक लेखन (viii) लघु एवं कुटीर उद्योग (ix)व्यापार और कानून आदि।

व्यवसाय के प्रकार: (i) उद्योग-व्यवसाय में भागीदारी (ii) लिमिटेड कंपनियां बनाना (iii) फ्रेंचाइजी लेना (iv)सहकारी समितियॉ (v) चिकित्सा और कानूनी चिकित्सक (vi) स्वतंत्र उद्यम (vii) समाज सेवा हेतु संचयन।

व्यवसाय की सफलता: (i) व्यापार की योजना (ii)स्वरोजगार कौशल (iii) विचार / अवसरसाध्यता (iv) बाजार की बारीक जानकारी (v) वित्तीय - पोषण।

आधारभूत साधन (i) स्व-रोजगार स्थापित करने हेतु आवश्यक संसाधन: (ii) वैकल्पिक कार्य स्थान (iii) कच्चे माल के लिए स्थानीय बाजार का उपयोग (iv) पूंजी की आवश्यकता (v) बैंकिंग और वित्तीय (vi) सेवा सदस्यों की जानकारी (vii) उद्यमिता बीमा स्रोत।

आधारभूत संरचना हेतु तकनीकी सामग्री और उपकरण : (i) भवन और कार्यालय हेतु स्थान (ii) वाहन और ट्रक (i) पॉइंट-ऑफ-सेल सिस्टम (v) तकनीकी व्यवस्था (कम्प्यूटर, नेटवर्क, ई-मेल भी प्राथमिकव्यवस्था)। **बौद्धिक संसाधन :** (i) सिस्टम और प्रक्रिया (ii) ग्राहक ज्ञान (iii) आपकी कंपनी का ब्रांड (iv) कॉपीराइट और पेटेंट (v) ग्राहक डेटाबेस (vi) नियम-कानूनों की जानकारी जानकारी(श्रम कानून/बाल अधिनियम। **मानवीय शक्ति :** (i) जो लोग उत्पाद या सेवा बनाते हैं (ii) ट्रक ड्राइवर जो उत्पादों को वितरित करते हैं (iii) ग्राहक सेवा एजेंट, प्रबंधक जो उत्पादन की देखरेख करते हैं (iv) बिक्री से जुड़े लोग। **वित्तीय संसाधन :** (i) नकद (ii) पैत्रिक उद्यम पूंजी (iii) अनुदान और ऋण (iv) कर्मचारियों के लिए वेतन-वित्तीय व्यवस्था विकल् (v) अपना व्यवसाय स्थापित करना (vi) व्यवसाय का क्षेत्र एवं नाम (vii) स्वरोजगार के रूप में पंजीकृत होना (viii) फेक्ट्री (ix) ऑनलाइन कारोबार (x) दूसरों के साथ काम करना (xi) सलाह और मदद। **व्यापार की योजना :** (i) योजना संक्षिप्त रूपरेखा (ii) व्यवसाय अवधारण (iii)

बाजार की संक्षिप्त जानकारी (iv) वित्तीय योजना (v) जोखिम का साहस। **संसाधन की आवश्यकताएं :** (i) प्रौद्योगिकी: मशीनरी, फोटोकॉपियर, उपकरण, कंप्यूटर;(ii) व्यक्ति: व्यावसायिक कौशल, विशेषज्ञ कर्मचारी, ऑपरेटिव;(iii) बाहरी संसाधन: आपूर्तिकर्ता और उत्पाद / सेवाएँ कंपनी के बाहर (iv) अन्य: जैसे, वितरण, वित्तीय, कानूनी, पदोन्नति / विपणन, पेशेवर सदस्यता सदस्यता और लाइसेंस। **बिक्री और विपणन :** (i) अपने ग्राहक को जानो (ii) अपने व्यवसाय को बढ़ावा देना (iii) अपने उत्पाद का विज्ञापन करें (iv) अनुबंधों के लिए टेंडरिंग (i) एम-कॉमर्स और ई-कॉमर्स। **वित्त का प्रबंध करना**: (i) व्यक्तिगत वित्त (ii) नकदी प्रवाह (iii) मुनाफे (iv) ओवरहेड्स (v) क्रेडिट/जमा (vi) चालान-प्रक्रिया (vii) बैंक खाते (viii) वैट के लिए पंजीकरण (ix) बुक कीपिंग एंड अकाउंटिंग (x) लोगों को रोजगार (xi) नौकरी के प्रस्ताव और नौकरी अनुबंध (xii) बीमा(xiii) पेंशन (xiv) विवाद। **निधि:** (i) व्यवसाय शुरू करने के लिए आपको कितने पैसे की आवश्यकता होगी? (ii) किन संसाधनों और उपकरणों की आवश्यकता होगी?(iii) क्या आईटी सुविधाएं आवश्यक होंगी? (iv) आप कहां आधारित होंगे और इसकी लागत क्या होगी? (v) धन के कौन से स्रोत आप पहले लक्षित करेंगे? (vi) व्यवसाय शुरू करने के दौरान आप कैसे अपना समर्थन करेंगे ? **एक चेकलिस्ट नमूने के तौर पर -** (i) व्यापार स्वरोजगार बनने के आपके क्या कारण हैं? (ii) आपका विचार कितना व्यवहार्य है और क्यों? (iii) हमने मेरे व्यवसाय का अनोखा विक्रय बिंदु क्या है? (iv) मेरे द्वारा चुने गए क्षेत्र में किस प्रकार के ज्ञान, कौशल और योग्यता की आवश्यकता है? (v) मैं अपने ज्ञान, कौशल और योग्यता को कैसे रखेंगे? (vi) हम व्यवसाय को कैसे बढ़ाना चाहते हैं?

स्मरणीय बिंदु: (i) स्व-रोजगार चुनने का कारण (ii) व्यवसाय के प्रकार (iii) स्व-रोजगार (iv) स्व-रोजगार स्थापित करने हेतु आवश्यक संसाधन।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी :

भगवद् गीता किञ्चिदधीता,गङ्गा जललव कणिकापीता।
सकृदपि येन मुरारि समर्चा, क्रियते तस्य यमेन न चर्चा॥

श्रीमद्भगवतगीता

चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पर:।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्त: सततं भव॥

सब कर्मों को मन से मुझमें अर्पण करके तथा समबुद्धि रूप योग को अवलंबन करके मेरे परायण और निरंतर मुझमें चित्तवाला हो॥

मच्चित्त: सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्वमहाङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि॥

उपर्युक्त प्रकार से मुझमें चित्तवाला होकर तू मेरी कृपा से समस्त संकटों को अनायास ही पार कर जाएगा और यदि अहंकार के कारण मेरे वचनों को न सुनेगा तो नष्ट हो जाएगा अर्थात परमार्थ से भ्रष्ट हो जाएगा॥

यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति॥

जो तू अहंकार का आश्रय लेकर यह मान रहा है कि 'मैं युद्ध नहीं करूँगा' तो तेरा यह निश्चय मिथ्या है, क्योंकि तेरा स्वभाव तुझे जबर्दस्ती युद्ध में लगा देगा॥

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्ध: स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्॥

हे कुन्तीपुत्र! जिस कर्म को तू मोह के कारण करना नहीं चाहता, उसको भी अपने पूर्वकृत स्वाभाविक कर्म से बँधा हुआ परवश होकर करेगा॥

ईश्वर: सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारुढानि मायया॥

हे अर्जुन! शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है॥

राम को कैसे भक्त प्रिय हैं -

तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी। तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी ॥
तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी। ग्यानिहु ते अति प्रिय बिग्यानी ॥

उन मनुष्यों में द्विज, द्विजों में भी वेदों को (कंठ में) धारण करने वाले, उनमें भी वेदोक्त धर्म पर चलने वाले, उनमें भी विरक्त (वैराग्यवान्) मुझे प्रिय हैं। वैराग्यवानों में फिर ज्ञानी और ज्ञानियों से भी अत्यंत प्रिय विज्ञानी हैं ॥

तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं। मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥

विज्ञानियों से भी प्रिय मुझे अपना दास है, जिसे मेरी ही गति (आश्रय) है, कोई दूसरी आशा नहीं है। मैं तुझसे बार-बार सत्य कहता हूँ कि मुझे अपने सेवक के समान प्रिय कोई भी नहीं है ॥

भगति हीन बिरंचि किन होई। सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी। मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥

भक्तिहीन ब्रह्मा ही क्यों न हो, वह मुझे सब जीवों के समान ही प्रिय है, परंतु भक्तिमान् अत्यंत नीच भी प्राणी मुझे प्राणों के समान प्रिय है, यह मेरी घोषणा है ॥

सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग।
श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥

पवित्र, सुशील और सुंदर बुद्धि वाला सेवक, बता, किसको प्यारा नहीं लगता? वेद और पुराण ऐसी ही नीति कहते हैं। हे काक! सावधान होकर सुन॥

अखिल बिस्व यह मोर उपाया। सब पर मोहि बराबरि दाया ॥
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया। भजै मोहि मन बच अरु काया ॥

यह संपूर्ण विश्व मेरा ही पैदा किया हुआ है। अतः सब पर मेरी बराबर दया है, परंतु इनमें से जो मद और माया छोड़कर मन, वचन और शरीर से मुझको भजता है, ॥

कागभुसुंड गरुण संवाद :

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला। देखेउँ बालबिनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भगति बर पायउँ। प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ ॥

मैं और कुछ समय तक अवधपुरी में रहा और मैंने श्री रामजी की रसीली बाल लीलाएँ देखीं। श्री रामजी की कृपा से मैंने भक्ति का वरदान पाया। तदनन्तर प्रभु के चरणों की वंदना करके मैं अपने आश्रम पर लौट आया ॥

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा। बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा ॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥

हे पक्षीराज गरुड़ ! अब मैं आपसे अपना निजी अनुभव कहता हूँ। (वह यह है कि) भगवान् के भजन बिना क्लेश दूर नहीं होते। हे पक्षीराज! सुनिए, श्री रामजी की कृपा बिना श्री रामजी की प्रभुता नहीं जानी जाती,॥

जानें बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भगति दिढ़ाई। जिमि खगपति जल कै चिकनाई ॥

प्रभुता जाने बिना उन पर विश्वास नहीं जमता, विश्वास के बिना प्रीति नहीं होती और प्रीति बिना भक्ति वैसे ही दृढ़ नहीं होती जैसे हे पक्षीराज! जल की चिकनाई ठहरती नहीं ॥

बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥

गुरु के बिना कहीं ज्ञान हो सकता है ? अथवा वैराग्य के बिना कहीं ज्ञान हो सकता है? इसी तरह वेद और पुराण कहते हैं कि श्री हरि की भक्ति के बिना क्या सुख मिल सकता है? ॥

बिनु संतोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं॥
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा। थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा॥

संतोष के बिना कामना का नाश नहीं होता और कामनाओं के रहते स्वप्न में भी सुख नहीं हो सकता और श्री राम के भजन बिना कामनाएँ कहीं मिट सकती हैं? बिना धरती के भी कहीं पेड़ उग सकता है? ॥

बिनु बिग्यान कि समता आवइ। कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ॥
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई। बिनु महि गंध कि पावइ कोई॥

विज्ञान (तत्त्वज्ञान) के बिना क्या समभाव आ सकता है? आकाश के बिना क्या कोई अवकाश (पोल) पा सकता है? श्रद्धा के बिना धर्म (का आचरण) नहीं होता। क्या पृथ्वी तत्त्व के बिना कोई गंध पा सकता है? ॥

बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा। जल बिनु रस कि होइ संसारा॥
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई। जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई॥

तप के बिना क्या तेज फैल सकता है? जल-तत्त्व के बिना संसार में क्या रस हो सकता है? पंडितजनों की सेवा बिना क्या शील (सदाचार) प्राप्त हो सकता है? हे गोसाई! जैसे बिना तेज (अग्नि-तत्त्व) के रूप नहीं मिलता ॥

बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु॥

बिना विश्वास के भक्ति नहीं होती, भक्ति के बिना श्री रामजी पिघलते (ढरते) नहीं और श्री रामजी की कृपा के बिना जीव स्वप्न में भी शांति नहीं पाता ॥

भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन॥

सुख के भंडार, करुणाधाम भगवान् भाव के वश हैं। ममता, मद और मान को छोड़कर सदा श्री जानकीनाथजी का ही भजन करना चाहिए ॥

गुर बिनु भव निध तरइ न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई॥
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता॥

गुरु के बिना कोई भवसागर नहीं तर सकता, चाहे वह ब्रह्माजी और शंकरजी के समान ही क्यों न हो। हे तात! मुझे संदेह रूपी सर्प ने डस लिया था और बहुत सी कुतर्क रूपी दुःख देने वाली लहरें आ रही थीं ॥

तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन।
मोहि सो कहहु कृपाल ग्यान प्रभाव कि जोग बल॥

अत्यंत भयंकर काल आपको नहीं व्यापता इसका क्या कारण है ? हे कृपालु मुझे कहिए,यह ज्ञान का प्रभाव है या योग का बल है?

जप तप मख सम दम ब्रत दाना। बिरति बिबेक जोग बिग्याना॥
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा। तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा॥

अनेक जप, तप, यज्ञ, शम, दम, व्रत, दान, वैराग्य, विवेक, योग, विज्ञान आदि सबका फल श्री रघुनाथजी के चरणों में प्रेम होना है। इसके बिना कोई कल्याण नहीं पा सकता ॥

बोधवाक्य:

"सत्ता सामान्यतया भ्रष्ट करती है। इस सम्बन्ध में पूरी सतर्कता बरतने के बाद भी जनसंघ में यदि भ्रष्टाचार आ जाता है तो हम उसे विसर्जित कर दूसरे जनसंघ का निर्माण करेंगे और उससे भी काम न बना तो तीसरे जनसंघ का निर्माण करेंगे और यही क्रम चलता रहेगा। अपने ही हाथों से निर्मित संस्था भी जब राष्ट्रहित के विरोध में कार्य करेगी तो ऐसी स्वनिर्मित संस्था का विनाश करना धर्म ही होता है। राष्ट्र सर्वश्रेष्ठ है, संस्था नहीं।"- दीनदयाल उपाध्याय

बोधकथा :

एक क्रान्किारी की दूसरे क्रान्किारी से भेंट

भगत सिंह को फाँसी की सजा हुई है। फाँसी से एक दिन पहले प्राणनाथ मेहता ने उन्हें एक पुस्तक दी 'लेनिन की जीवनी'। पुस्तक पढ़ने में वे इस तरह तल्लीन हो गए कि सुधि नहीं रही कि उन्हें आज फाँसी लगनी है। जल्लाद उन्हें लेने जेल की कोठरी में आ गए। अभी एक पृष्ठ पढ़ना शेष रह गया था। उनकी दृष्टि पुस्तक के उसी आखिरी पृष्ठ पर थी कि जल्लाद ने चलने को कहा। भगतसिंह हाथ उठाकर बाले, 'ठहरो, एक बड़े क्रान्किारी की दूसरी बड़े क्रान्किारी से मुलकात हो रही है।' जल्लाद वहीं ठिठक गए। भगतसिंह ने पुस्तक समाप्त की,

उसे सोल्लास छत की ओर उछाला फिर दोनों हाथों से थामकर फर्श पर रखा और कहा, चलो' और वे मस्ती भरे कदमों से फाँसी के तख्त की ओर बढ़ने लगे। उनके दृढ़ कदमों को जल्लाद निहारते रहे। 23 मार्च, 1931 की संध्या, सात बज रहे हैं। फाँसी के तख्त की ओर तीन नवयुवक बढ़ रहे हैं। फाँसी की काली वर्दी पहना दी गयी है। बीच में भगत सिंह चल रहे हैं, सुखदेव उनकी बायीं ओर और राजगुरु दायीं ओर चल रहे हैं। भगत सिंह ने अपनी दाई भुजा राजगुरु की बाई भुजा में तथा बाई भुजा सुखदेव की दाई भुजा में डाल दी। तीनों ने नारे लगाए-इन्कलाब जिन्दाबाद, अंग्रेजीराज्य मुर्दाबाद। फिर गीत गाए- " दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उलफत, मेरी मिट्टी से भी खुश्बू-ए-वतन आएगी।"और देखते-देखते फाँसी पर झूल गए।

मासिक गीत /गान :

आजादी तो मिल गई, मगर, यह गौरव कहाँ जुगाएगा ?
मरभुखे ! इसे घबराहट में तू बेच न तो खा जाएगा ?
आजादी रोटी नहीं, मगर, दोनों में कोई वैर नहीं,
पर कहीं भूख बेताब हुई तो आजादी की खैर नहीं।

हो रहे खड़े आजादी को हर ओर दगा देनेवाले,
पशुओं को रोटी दिखा उन्हें फिर साथ लगा लेनेवाले।
इनके जादू का जोर भला कब तक बुभुक्षु सह सकता है ?
है कौन, पेट की ज्वाला में पड़कर मनुष्य रह सकता है ?

झेलेगा यह बलिदान ? भूख की घनी चोट सह पाएगा ?
आ पड़ी विपद तो क्या प्रताप-सा घास चबा रह पाएगा ?
है बड़ी बात आजादी का पाना ही नहीं, जुगाना भी,
बलि एक बार ही नहीं, उसे पड़ता फिर-फिर दुहराना भी।

(रामधारी सिंह "दिनकर")

----------00----------

अप्रैल

चैत्र : हमारी इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य विषय जगत है। मन, चित्त, बुद्वि, अहंकार के अन्दर बसता है, संसार। फिर इनका धीरे-धीरे (एषणाओं का त्याग कर) सभी चीजों को परमात्मा अर्थात अपने अन्दर आत्मा है और वह सर्वव्यापी उस परमात्मा का अंश है, बोध करना और धीरे-धीरे उसके अंदर प्रवेश करना। यह घट शरीर है, संसार है। जीवेत वर्षम् शतम् का अर्थ केवल इतना ही है कि हमारे ऋषियों ने इस शरीर की मर्यादा सौ बर्ष मानी। अत: इन सौ वर्षों को किस तरह जिया जाय इसका विचार किया। सभी प्राणियों में 'सर्वभूतहितेरता:; का भाव बोध हो। साक्षात्कार करते करते इस काया को जैसा कहा 'ऊँ पूर्णमद: पूर्णमिदं' को साकार करें। यही निग्रह है। यही परमात्मा का साक्षात्कार का मार्ग है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम :- इन्टरव्यू की मूक ड्रिल आयोजित की जानी चाहिए। इसमें सभी विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित हो तथा इन्टरव्यू के लिए उद्योग विभाग और प्रशासनिक विभाग के अधिकारीयों को बुलाया जा सकता है।

व्यक्तित्व परिचय

आद्य शंकराचार्य

एक बालक जिसकी उम्र आठ वर्ष थी, गाँव-गाँव भटकता हुआ एक ब्राह्मण के घर भिक्षा माँगने पहुँचा। यह घर एक ऐसे ब्राह्मण का था जिसके पास खाने तक को कुछ नहीं थे, वह भिक्षा कैसे देता? अंतत: ब्राह्मण पत्नी ने बालक के हाथ पर एक आँवला रखा और रोते

हुए अपनी आर्थिक तंगी बताई। सात वर्ष का बालक जो गया तो भिक्षा माँगने था किन्तु उस महिला को इस तरह विपन्नता के कारण रोता हुआ देख, उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसने मन ही मन माँ लक्ष्मी से निर्धन ब्राह्मण की विपदा हरने की प्रार्थना की। जगत् जननी महालक्ष्मी को प्रसन्न कर उस ब्राह्मण परिवार की दरिद्रता दूर करने वाले इस बालक का नाम 'शंकर' था।

'शंकर' का जन्म शिवगुरु नामपुद्रि के यहाँ विवाह के कई वर्षों बाद हुआ था। माना जाता है कि शिवगुरु नामपुद्रि वर्षों तक संतान सुख से वंचित थे। उनहोंने पत्नी विशिष्टा देवी के साथ पुत्र प्राप्ति के लिए भगवान शंकर की कठोर तपस्या की। भगवान शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें स्वप्न में दर्शन दिए और कहा, ' वत्स ! मैं तपस्या से अत्यंत प्रसन्न हुआ , तुम्हें एक बालक का वरदान भी देता हूँ, लेकिन एक दुविधा है। तुम्हारे यहाँ जन्म लेने वाला दीर्घायु पुत्र सर्वज्ञ नहीं होगा, और सर्वज्ञ पुत्र दीर्घायु नहीं होगा। तुम्हें दोनों में से किसी एक का चयन करना होगा। माँगो तुम कैसा वर चाहते हो।' शिवगुरु ने सर्वज्ञ पुत्र की माँग की। प्रसन्न होकर भगवान शिव ने कहा, 'वत्स ! तुम्हें सर्वज्ञ पुत्र की प्राप्ति होगी। मैं स्वयं पुत्र रूप में अवतीर्ण होऊँगा।'

केरल राज्य में मालाबार के कालड़ी नामक स्थान में विशिष्टादेवी की गोद में 'शंकर' का जन्म हुआ। बहुत छोटी सी उम्र में ही बालक शंकर के सिर से पिता का साया उठ गया था। वे अपनी माता के साथ रहते थे। शंकर ने 8 वर्ष की उम्र में चारों वेदों का पूर्ण अध्ययन कर लिया था। शंकर ने छोटी उम्र में संन्यास लेने की ठान ली। लेकिन अकेली माता का मोह उन्हें कहीं जाने नहीं देता था। परन्तु एक दिन उन्होंने निश्चय कर लिया कि हो ना हो वे संन्यास लेने के लिए जरूर जाएँगे।

माँ द्वारा रोकने की कोशिश में बालक शंकर ने उन्हें नारद मुनि से जुड़ी एक कथा सुनाई। जिसमें नारद मात्र पाँच वर्ष की उम्र में हरिकथा सुनकर साक्षात हरि से मिलने के लिए व्याकुल हो गए। लेकिन अपनी माँ के स्नेह के कारण घर छोड़ने का साहस न जुटा पाए। किन्तु एक काली रात ने उनके जीवन का एक बड़ा फैसला लिया। अचानक उस रात सर्पदंश के कारण उनकी माँ की मृत्यु हो गई। इसे ईश्वर की कृपा मानकर नारद ने घर छोड़ दिया।

कथा सुनाकर बालक शंकर ने अपनी माँ से कहा, ' माँ, जब नारद जी ने घर का त्याग किया, तब वे मात्र पाँच वर्ष के थे। यह तो ईश्वर का खेल था कि उनकी माता के न चाहते हुए भी परिस्थितियों के आधार पर नारद जी जाने में सफल हुए। माँ, मैं तो आठ वर्ष का हूँ और मेरे ऊपर तो मातृछाया सदैव रहेगी।' बालक की बात सुनकर माँ दुखी हो गईं। माँ को समझाते हुए बालक शंकर बोला, 'माँ, तुम दुखी क्यों होती हो। देखो मेरे सिर पर तो हमेशा ही तुम्हारा आशीर्वाद रहेगा। तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारी जिंदगी के आखिरी पड़ाव पर मैं उपस्थित रहूँगा और पार्थिव शरीर को अग्नि देने जरूर आऊँगा। इतना कहते हुए बालक शंकर ने घर से बाहर पाँव रखा और संन्यासी जीवन में आगे बढ़ते चले गए। 11 वर्ष की आयु शंकर शास्त्रों में पारंगत हो गए थे। 32 वर्ष की उम्र तक शंकराचार्य ने सुप्रसिद्ध ब्रह्मसूत्र भाष्य के अतिरिक्त ग्यारह उपनिषदों - ईश, केन, प्रश्न, मांडूक्य, ऐतरेय, तैतरीय, बृहदारण्यक और छान्दोग्योपनिष्द् तथा गीता पर भाष्यों की रचनाएँ कर डाली थी। इसी उम्र में संपूर्ण भारत का भ्रमण कर विश्व को समन्वय का पाठ पढ़ा दिया था।

आदि शंकराचार्य को अद्वैतवाद परंपरा का जनक माना जाता है। अपने कार्यों के कारण ये 'जगद्गुरु शंकराचार्य' के नाम से विख्यात हुए। इनकी विद्वता के कारण भविष्य में इनके नाम में आचार्य जुड़ गया और वह भारतीय परंपरा और सनातन धर्म के प्रचारक आदि गुरु शंकराचार्य कहलाए।

शंकराचार्य आम संन्यासी नहीं थे। उन्होंने निरंतर उन नियमों को तोड़ा जो जीवन के कर्म पथ के बाधक थे। माता से उन्होंने वादा किया था कि अंतिम समय में उनके पास रहूंगा। वे बद्रिकाश्रम से मां के पास कालडी पहुंचे। उनके स्नान के लिए पूर्णा नदी को ही घर ले आए। मां के आग्रह पर उन्हें अद्वैत दर्शन समझाने तत्वबोध ग्रंथ रचा। मां ने जब कृष्ण के विषय में कुछ बताने को कहा तो उनके लिए 'कृष्णाष्टक' बनाकर उन्हें सुनाया। संन्यासी को दाहकर्म की आज्ञा नहीं होती परन्तु शंकराचार्य सच्चे संन्यासी थे। कुटुम्ब के लोगों ने संन्यासी होते हुए फिर से घर लौटने के कारण उनका बहिष्कार कर दिया था। मां की चिता को कौन अग्नि दे ? मां के लिए शंकर ने इस नियम को भी तोड़ा। उन्होंने अपने घर के आंगन में ही मां की चिता रचकर उनका अग्नि संस्कार किया। इस प्रकार जड़ होते जीवन मूल्यों पर प्रहार करके विश्व को अद्वैत दर्शन ही नहीं दिया, बल्कि बंधे-बंधाए नियमों और रूढ़ियों के जड़त्व को तोड़ा।

संन्यास लेने के बाद शंकर की भेंट अपने सहपाठी विष्णु शर्मा से होती है। विष्णु जब उनसे संन्यास के लिए जंगल में जाकर तपस्या करने का प्रश्न पूछता है तो उनका जवाब होता है, 'संन्यास का अर्थ संसार को छोड़कर वन में तपस्या करना नहीं है। मैंने कर्म संन्यास लिया है, जिसका अर्थ कर्म से भागना नहीं, देश और धर्म के कर्म करना है, जो सत्य है तथा मनुष्य को कर्मफल-बंधन में नहीं बांधते।'

शंकराचार्य के दर्शन को अद्वैत वेदांत का दर्शन कहा जाता है। शंकराचार्य के दो गुरु थे। गौडपादाचार्य के वे प्रशिष्य और गोविंदपादाचार्य के शिष्य कहलाते थे। 7 वर्ष की उम्र में शंकराचार्य गुरु की तलाश में दो हजार कि.मी. चलकर कलाड़ी केरल से नर्मदा किनारे ओंकारेश्वर आए थे। बालक शंकर की मनोदशा को जो संन्यास ग्रहण कर गुरु की खोज में निकला है, पंडित दीनदयाल जी के शब्दों में समझे – 'अंत:करण की धनाढ्यता ही उनका एकमात्र धन था। आत्मविश्वास की प्रबलता ही उनकी महती शक्ति थी। प्रगल्भ बुद्धि ही उनका पथ-प्रदर्शन कर रही थी। हृदय में अपने कार्य पर असीम श्रद्धा तथा भगवान का एकमात्र सहारा ही उनका बल था। वे बड़ी शांति

तथा अपने अंदर एक प्रकार की चैतन्य शक्ति का अनुभव कर रहे थे, यही उन्हें स्फूर्ति प्रदान कर रही थी। उसी समय उन्होंने 'अच्युताष्टक' कविता की रचना की।'

ओंकारेश्वर में श्री गोविन्द भगवत्पादाचार्य ने उन्हें गुरु दीक्षा दी। इसके बाद उन्होंने उनकी गुफा में सात साल तक साधना की। ये गुफा आज भी ओंकारेश्वर में मौजूद है। इसे शंकराचार्य गुफा भी कहते हैं। शंकराचार्य का स्थान विश्व के महान दार्शनिकों में सर्वोच्च माना जाता है। 'ब्रह्म ही सत्य है और जगत माया है , आत्मा की गति मोक्ष में है ', वाक्य शंकराचार्य का ही है। वेद और वेदों के अंतिम भाग अर्थात वेदांत या उपनिषद में वह सभी कुछ है, जिससे दुनिया के तमाम तरह का धर्म, विज्ञान और दर्शन निकलता है। शंकर ने इसे युगानुरूप व्याख्या दी।

अभी माँ का दाह संस्कार किया ही था कि गुरु श्री गोविंदपाद के रुग्ण होने का संदेश मिला। वे कालटी से अमलेश्वर के लिए रवाना हो गए। एक माह में वहां पहुंचे और गुरु की सेवा में रहे। उसी समय नर्मदा में भीषण बाढ आई। चारो ओर जल मग्र देख शंकराचार्य ने नर्मदा की प्रार्थना की जो 'कनकधारा' स्रोत के नाम से प्रसिद्ध है। आदि शंकराचार्य ने नर्मदा अष्टक सहित पचास से ज्यादा स्तुतियाँ और ग्रंथों की रचना की थी। गुरु की जीवन साधना पूरी होने के बाद शंकराचार्य यहीं से अपनी दिग्विजय यात्रा पर निकले थे। उनकी दिग्विजय यात्रा के पडावों में कुमारिल भट्ट, मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ, भारती का समाधान विशेष महत्व का माना जा सकता है।

मंडन मिश्र को जो पूर्व-मीमांसा के अनुयायी अर्थात् कर्मकाण्डी थे ,उनका पाण्डित्य सौरभ दिगन्तव्यापी था, शंकराचार्य ने उनको शास्त्रार्थ में परास्त करके अद्वैत वेदान्तवादी बनाना चाहा। शंकर ने मण्डन मिश्र के घर का पता पूछा, दासियों ने संस्कृत में कहा- 'स्वत: प्रमाणं परत: प्रमाणं कीराङ्गना यत्र गिरं गिरन्ति। द्वारस्थनीडान्तरसन्निरुद्धा जानीहि तन्मण्डनपण्डितौक:॥1॥ अर्थात् जिस दरवाजे पर पिंजड़े में बंद शुकों की स्त्रियों (शुकी या मैना आदि पक्षियों) को यह कहते सुनना कि वेद स्वत: प्रणाम है या परत: प्रमाण है ? सुख-दु:ख इत्यादि फल कर्म देता है या सर्वशक्तिमान् अजन्मा ईश्वर देता है ? संसार नित्य है या अनित्य ? उसी को मण्डन पंडित का मकान समझना। इससे मण्डन पंडित के पाण्डित्य का अंदाजा हो सकता है।

मिलने के बाद दोनों के बीच करीब सोलह दिन तक लगातार शास्त्रार्थ चला। शास्त्रार्थ में निर्णायक मंडन मिश्र की धर्मपत्नी भारती को बनाया गया था। कहते हैं कि जब निर्णय की घड़ी पास आई तो अचानक देवी भारती को कुछ समय काम से बाहर जाना पड़ गया, लेकिन जाते समय उन्होंने दोनों विद्वानों को पहनने के लिए एक-एक फूल की माला दी और कहा, ये दोनों मालाएं मेरी अनुपस्थिति में आपकी हार और जीत का फैसला करेंगी, कुछ समय के बाद देवी भारती वापस लौटीं और निर्णय लेते हुए शंकराचार्य जी को विजयी घोषित किया। देवी भारती के इस निर्णय से सभी चकित रह गए और पूछा कि आखिरकार उनकी अनुपस्थिति में बिना किसी पहलू को परखे हुए उन्होंने कैसे इस प्रकार का निर्णय ले लिया। इस पर देवी भारती ने कहा, 'जब भी किसी को चिंता होती है या क्रोध आता है तो वह उसे छिपा नहीं पाता। जब मैं वापस लौटी तो मैंने पाया कि मेरे पति के गले में डली हुई फूलों की माला उनके क्रोध के ताप से सूख चुकी है, जबकि शंकराचार्य जी की माला के फूल अब भी पहले की भाँति ताजे हैं।' इससे यह स्पष्ट है कि शंकराचार्य की विजय हुई है।

आदि गुरु शंकराचार्य ने भारत के सनातन परंपरा को देशभर में फैलाने के लिए कई कार्य किये जिसमे से भारत के चार दिशाओं में चार जगह शंकराचार्य मठों की स्थापना करना प्रमुख है। गुरु शंकराचार्य ने ज्योतिर्मठ, श्रृंगेरी मठ, गोवर्द्धन मठ और शारदा मठ की स्थापना की। इसके अलावा भी गुरु शंकराचार्य ने 12 ज्योतिर्लिंगों की स्थापना की। शंकराचार्य ने मात्र चालीस वर्ष की उम्र में वे निर्वाण प्राप्त कर ब्रह्मलोक चले गए। इस छोटी-सी उम्र में ही भारत भर का भ्रमण कर हिंदू समाज को एक सूत्र में पिरोने के लिए चार मठों ही स्थापना की। चार मठ के शंकराचार्य ही हिंदुओं के आचार्य माने जाते हैं, इन्हीं के आधीन अन्य कई मठ हैं। चार प्रमुख मठ निम्न... 1. वेदान्त ज्ञानमठ, श्रृंगेरी (दक्षिण भारत)। 2. गोवर्धन मठ, जगन्नाथपुरी (पूर्वी भारत) 3. शारदा (कालिका) मठ, द्वारका (पश्चिम भारत) 4. ज्योतिर्पीठ, बद्रिकाश्रम (उत्तर भारत)। शंकराचार्य के चार शिष्य : 1. पद्मपाद (सनन्दन), 2. हस्तामलक, 3. मंडन मिश्र ,4. तोटक (तोटकाचार्य)। अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों स्तोत्र-साहित्य का निर्माण कर वैदिक धर्म एवं दर्शन को पुन:प्रतिष्ठित करने के लिए अनेक श्रमण, बौद्ध तथा हिंदू विद्वानों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया।

शंकराचार्य ने दसनामी सम्प्रदाय की स्थपना करके हिंदू धर्म को व्यवस्थित करने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने हिंदुओं की सभी जातियों को एक करके 'दसनामी संप्रदाय' बनाया और साधु समाज की अनादिकाल से चली आ रही धारा को पुनर्जीवित कर चार धाम की चार पीठ का गठन किया, जिस पर चार शंकराचार्यों की परंपरा की शुरुआत हुई । शंकराचार्य से संन्यासियों के जिस दसनामी सम्प्रदाय का प्रचलन हुआ, इनके चार प्रमुख शिष्य थे और उन चारों के कुल मिलाकर दस शिष्य हुए। इन दसों के नाम से संन्यासियों की दस पद्धतियाँ विकसित हुईं। दसनामी सम्प्रदाय के साधु प्राय: गेरुआ वस्त्र पहनते, एक भुजवाली लाठी रखते और गले में चौवन रुद्राक्षों की माला पहनते। कठिन योग साधना और धर्म प्रचार में ही उनका सारा जीवन बीतता है। दसनामी संप्रदाय में शैव और वैष्णव दोनों ही तरह के साधु होते हैं। यह दस संप्रदाय निम्न हैं : 1.गिरि, 2.पर्वत और 3.सागर, 4.भ्रगुपुरी, 5.भारती और 6. सरस्वती। इनके ऋषि हैं शांडिल्य।

7.वन और 8.अरण्य के ऋषि हैं काश्यप। 9.तीर्थ और 10. आश्रम के ऋषि अवगत हैं। हिंदू साधुओं के नाम के आगे स्वामी और अंत में उसने जिस संप्रदाय में दीक्षा ली है उस संप्रदाय का नाम लगाया जाता है, जैसे- स्वामी अवधेशानंद गिरि।

शंकराचार्य ऐसे संन्यासी थे जिन्होंने अपने शिष्यों की भी सेवा की। उदंक को कुष्ठ रोग से मुक्त किया। हस्तामलक को विक्षुब्ध अवस्था से बाहर निकाला। चांडाल को उन्होंने अपना गुरु माना। मनीष पंचक नाम विख्यात पांच श्लोकों की रचना की।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी :

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं,पुनरपि जननी जठरे शयनम्।
इह संसारे बहुदुस्तारे, कृपयाऽपारे पाहि मुरारे॥

श्रीमद्भगवतगीता

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा, उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा॥

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु॥

इस प्रकार यह गोपनीय से भी अति गोपनीय ज्ञान मैंने तुमसे कह दिया। अब तू इस रहस्ययुक्त ज्ञान को पूर्णतया भलीभाँति विचार कर, जैसे चाहता है वैसे ही कर॥

सर्वगुह्यतमं भूतः श्रृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्॥

संपूर्ण गोपनीयों से अति गोपनीय मेरे परम रहस्ययुक्त वचन को तू फिर भी सुन। तू मेरा अतिशय प्रिय है, इससे यह परम हितकार वचन मैं तुझसे कहूँगा॥

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे भावार्थ॥

हे अर्जुन! तू मुझमें मनवाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो और मुझको प्रणाम कर। ऐसा करने से तू मुझे ही प्राप्त होगा, यह मैं तुझसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ क्योंकि तू मेरा अत्यंत प्रिय है॥

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

संपूर्ण धर्मों को अर्थात संपूर्ण कर्तव्य कर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥

रामचरितमानस

पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर।
कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्रान सम॥

रेशम कीड़े से होता है, उससे सुंदर रेशमी वस्त्र बनते हैं। इसी से उस परम अपवित्र कीड़े को भी सब कोई प्राणों के समान पालते हैं॥

नाना जनम कर्म पुनि नाना। किए जोग जप तप मख दाना॥
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं। मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं॥

अनेकों जन्मों में मैंने अनेकों प्रकार के योग, जप, तप, यज्ञ और दान आदि कर्म किए। हे गरुड़जी ! जगत् में ऐसी कौन योनि है, जिसमें मैंने घूम-फिरकर जन्म न लिया हो॥

देखेउँ करि सब करम गोसाईं। सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं॥
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी। सिव प्रसाद मति मोहँ न घेरी॥

हे गुसाईं! मैंने सब कर्म करके देख लिए, पर अब (इस जन्म) की तरह मैं कभी सुखी नहीं हुआ। हे नाथ! मुझे बहुत से जन्मों की याद है, श्री शिवजी की कृपा से मेरी बुद्धि को मोह ने नहीं घेरा॥

पूरुब कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल ।
नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल ॥

हे प्रभो! पूर्व के एक कल्प में पापों का मूल युग कलियुग था, जिसमें पुरुष और स्त्री सभी अधर्मपारायण और वेद के विरोधी थे॥

धन मद मत्त परम बाचाला । उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला ॥
जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपि न कछु महिमा तब जानी ॥

मैं धन के मद से मतवाला, बहुत ही बकवादी और उग्रबुद्धि वाला था, मेरे हृदय में बड़ा भारी दंभ था। यद्यपि मैं श्री रघुनाथजी की राजधानी में रहता था, तथापि मैंने उस समय उसकी महिमा कुछ भी नहीं जानी ॥

जनमत मरत दुसह दुख होई । एहि स्वल्पउ नहिं ब्यापिहि सोई ॥
कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ग्याना । सुनहि सूद्र मम बचन प्रवाना ॥

परंतु जन्मने और मरने में जो दुःसह दुःख होता है, इसको वह दुःख जरा भी न व्यापेगा और किसी भी जन्म में इसका ज्ञान नहीं मिटेगा। हे शूद्र! मेरा प्रामाणिक (सत्य) वचन सुन ॥

सुनि सिव बचन हरषि गुर एवमस्तु इति भाषि ।
मोहि प्रबोधि गयउ गृह संभु चरन उर राखि ॥

शिवजी के वचन सुनकर गुरुजी हर्षित होकर 'ऐसा ही हो' यह कहकर मुझे बहुत समझाकर और शिवजी के चरणों को हृदय में रखकर अपने घर गए ॥

चरम देह द्विज कै मैं पाई । सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥
खेलउँ तहूँ बालकन्ह मीला । करउँ सकल रघुनायक लीला ॥

मैंने अंतिम शरीर ब्राह्मण का पाया, जिसे पुराण और वेद देवताओं को भी दुर्लभ बताते हैं । मैं वहाँ (ब्राह्मण शरीर में) भी बालकों में मिलकर खेलता तो श्री रघुनाथजी की ही सब लीलाएँ किया करता ॥

भय कालबस जब पितु माता । मैं बन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ । आश्रम जाइ जाइ सिरु नावउँ ॥

जब पिता-माता कालवश हो गए (मर गए), तब मैं भक्तों की रक्षा करने वाले श्री रामजी का भजन करने के लिए वन में चला गया। वन में जहाँ-जहाँ मुनीश्वरों के आश्रम पाता, वहाँ-वहाँ जा-जाकर उन्हें सिर नवाता ॥

जेहि पूँछउँ सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सर्ब भूतमय अहई ॥
निर्गुन मत नहिं मोहि सोहाई । सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥

जिनसे मैं पूछता, वे ही मुनि ऐसा कहते कि ईश्वर सर्वभूतमय है। यह निर्गुण मत मुझे नहीं सुहाता था । हृदय में सगुण ब्रह्म पर प्रीति बढ़ रही थी ॥

मेरु सिखर बट छायाँ मुनि लोमस आसीन।
देखि चरन सिरु नायउँ बचन कहेउँ अति दीन॥

सुमेरु पर्वत के शिखर पर बड़ की छाया में लोमश मुनि बैठे थे । उन्हें देखकर मैंने उनके चरणों में सिर नवाया और अत्यंत दीन वचन कहे ॥

तब मैं कहा कृपानिधि तुम्ह सर्बग्य सुजान ।
सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान ॥

तब मैंने कहा- हे कृपा निधि! आप सर्वज्ञ हैं और सुजान हैं। हे भगवान् मुझे सगुण ब्रह्म की आराधना (की प्रक्रिया) कहिए।

तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्मग्यान रत मुनि बिग्यानी । मोहि परम अधिकारी जानी ॥

तब हे पक्षीराज! मुनीश्वर ने श्री रघुनाथजी के गुणों की कुछ कथाएँ आदर सहित कहीं। फिर वे ब्रह्मज्ञान परायण विज्ञानवान् मुनि मुझे परम अधिकारी जानकर ॥

लागे करन ब्रह्म उपदेसा । अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभव गम्य अखंड अनूपा ॥

ब्रह्म का उपदेश करने लगे कि वह अजन्मा है, अद्वैत है, निर्गुण है और हृदय का स्वामी (अंतर्यामी) है। उसे कोई बुद्धि के द्वारा माप नहीं सकता, वह इच्छारहित, नामरहित, रूपरहित, अनुभव से जानने योग्य, अखण्ड और उपमारहित है ॥

बिबिधि भाँति मोहि मुनि समुझावा। निर्गुन मत मम हृदयँ न आवा॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा। सगुन उपासन कहहु मुनीसा॥

मुनि ने मुझे अनेकों प्रकार से समझाया, पर निर्गुण मत मेरे हृदय में नहीं बैठा। मैंने फिर मुनि के चरणों में सिर नवाकर कहा- हे मुनीश्वर! मुझे सगुण ब्रह्म की उपासना कहिए॥

राम भगति जल मम मन मीना। किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना॥
सोइ उपदेस कहहु करि दाया। निज नयनन्हि देखौं रघुराया॥

मेरा मन रामभक्ति रूपी जल में मछली हो रहा है । हे चतुर मुनीश्वर ऐसी दशा में वह उससे अलग कैसे हो सकता है? आप दया करके मुझे वही उपदेश कहिए जिससे मैं श्री रघुनाथजी को अपनी आँखों से देख सकूँ॥

हानि कि जग एहि सम किछु भाई। भजिअ न रामहि नर तनु पाई॥
अघ कि पिसुनता सम कछु आना। धर्म कि दया सरिस हरिजाना॥

हे भाई! जगत् में क्या इसके समान दूसरी भी कोई हानि है कि मनुष्य का शरीर पाकर भी श्री रामजी का भजन न किया जाए? चुगलखोरी के समान क्या कोई दूसरा पाप है? और हे गरुड़जी! दया के समान क्या कोई दूसरा धर्म है ?

एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनऊँ। मुनि उपदेस न सादर सुनउँ॥
पुनि पुनि सगुन पच्छ मैं रोपा। तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा॥

इस प्रकार मैं अनगिनत युक्तियाँ मन में विचारता था और आदर के साथ मुनि का उपदेश नहीं सुनता था। जब मैंने बार-बार सगुण का पक्ष स्थापित किया, तब मुनि क्रोधयुक्त वचन बोले-

बोधवाक्य: " हमारी सहायता, हमारे सिवाय और कोई नहीं कर सकता। हम अपनी उन्नति और अपने सुख के लिए औरों का मोक्ष ताकना छोड़ देना चाहिए। हमारी आंतरिक प्रभा हमारी आत्मज्योति के सिवाय और कौन हमारी सहायता कर सकता है। हमको अपने आत्मविश्वास के बल पर इसी 'प्रभा' को अपना एकमात्र सहायक जानना चाहिए। -माधव राव सप्रे

बोध कथा:

गृहस्थ या साधु ?

एक व्यक्ति कबीर जी के पास गया और बोला- मेरी शिक्षा तो समाप्त हो गई। अब मेरे मन में दो बातें आती हैं, एक यह कि विवाह करके गृहस्थ जीवन यापन करूँ या संन्यास धारण करूँ? इन दोनों में से मेरे लिए क्या अच्छा रहेगा यह बताइए ? कबीरजी ने कहा दोनों ही बातें अच्छी है जो भी करना हो, वह सोच-समझकर करो और वह उच्चकोटि का हो। उस व्यक्ति ने पूछा उच्चकोटि का कैसे है ? कबीरजी ने कहा- किसी दिन प्रत्यक्ष देखकर बतायेंगे। वह व्यक्ति रोज उत्तर प्रतीक्षा में कबीर के पास आने लगा।

एक दिन कबीरजी दिन के बारह बजे सूत बुन रहे थे। खुली जगह में प्रकाश काफी था, कबीर साहेब ने अपनी धर्म पत्नी को दीपक लाने का आदेश दिया। वह तुरन्त बिना किसी सवाल के जलाकर लाई और उनके पास रख गई। दीपक जलता रहा वे सूत बुनते रहे। सायंकाल को उस व्यक्ति को लेकर कबीरजी एक पहाड़ी पर गए। जहाँ काफी ऊँचाई पर एक बहुत वृद्ध साधु कुटी बनाकर रहते थे। कबीर ने साधु को आवाज दी। महाराज आपसे कुछ जरूरी काम है कृपया नीचे आइए। बूढ़ा बीमार साधु मुश्किल से इतनी ऊँचाई से उतर कर नीचे आया। कबीर ने पूछा आपकी आयु कितनी है यह जानने के लिए नीचे बुलाया है। साधु ने कहा अस्सी बरस। यह कह कर वह फिर से ऊपर चढ़ा। बड़ी कठिनाई से कुटी में पहुँचा।

कबीर ने फिर आवाज दी और नीचे बुलाया। साधु फिर आया। उससे पूछा, आप यहाँ पर कितने दिन से निवास करते है? उनने बताया चालीस वर्ष से। फिर जब वह कुटी में पहुँचे तो तीसरी बार फिर उन्हें इसी प्रकार बुलाया और पूछा, आपके सब दाँत उखड़ गए या नहीं ? उसने उत्तर दिया। आधे उखड़ गए। तीसरी बार उत्तर देकर वह ऊपर जाने लगा तब इतने चढ़ने उतरने से साधु की साँस फूलने लगी, पाँव काँपने लगे। वह बहुत अधिक थक गया था फिर भी उसे क्रोध तनिक भी न था।

अब कबीर अपने साथी समेत घर लौटे तो साथी ने अपने प्रश्न का उत्तर पूछा। उन्होंने कहा तुम्हारे प्रश्न के उत्तर में यह दोनों घटनायें उपस्थित है। यदि गृहस्थ बनना हो तो ऐसे जीवन साथी का चयन करना चाहिये जो हम पर पूरा भरोसा रखे और हमारा कहना सहजता से माने। उसे दिन में भी दीपक जलाने की मेरी आज्ञा अनुचित नहीं मालूम पड़ी,उसनें व्यर्थ कुतर्क नहीं किया और साधु बनना हो तो ऐसा बनना चाहिए कि कोई कितना ही परेशान करे क्रोध व शोक न हो,हम सहज रहें।

मासिक गीत /गान:

जो मरुस्थल आज अश्रु भिगो रहे हैं ,
भावना के बीज जिस पर बो रहे हैं ,
सिर्फ़ मृगछलना नहीं वह चमचमाती रेत-

क्या हुआ जो युग हमारे आगमन पर मौन ?
सूर्य की पहली किरन पहचानता है कौन ?
अर्थ कल लेंगे हमारे आज के संकेत।

तुम न मानो शब्द कोई है न नामुमकिन
कल उगेंगे चाँद -तारे, कल उगेगा दिन,
कल फ़सल देंगे समय को, यही 'बंजर खेत'।

(दुष्यंत कुमार त्यागी)

----------00----------

मई

वैशाख : विष्णु – जिष्णु अर्थात एक रूपान्तरित जिष्णु अथवा वीर की पूजा। 'वीर' - जिसने गुजरात और राजस्थान के जन-मानस को युगों तक प्रभावित किया है। बाहरी और भीतरी शत्रुओं पर विजय के लिए प्रयत्नशील मानव 'वीर' कहलाता है। वह अनेक मोर्चे पर काम, क्रोध, अभाव, आपूर्ति, द्वेष मत्सर आदि से एक साथ जूझने के कारण 'बहुवीर' है। परंतु जब वह विजयी होता है तो ऋग्वेद की भाषा में ऐसे 'एकवीर' अथवा 'जिष्णु' प्राकृत में 'जिन' होकर जैन धर्म का आधारभूत अरिहन्त या तीर्थकर हो जाते हैं। आगे तथापकर्ष को ग्रहण करके फिर यही शब्द पूर्व से पश्चिम की ओर यात्रा करता हुआ ईरानी परंपरा के 'जिन्न' तथा योरोप के 'जिनिआई' नामक दिव्य-शक्ति-संपन्न प्रेत शक्तियों का नामकरण करने में समर्थ हुआ। इस अभिव्यक्ति की एक धारा काम, क्रोधादि कषायों पर विजय प्राप्त करने वाले जिनेश्वर 'वीर' की है तो दूसरी धर्मयुद्ध को स्वग्रखर समझने वाले जुझारू 'वीर' की। प्रथम धारा ने जहाँ श्वेतांबर एवं दिगम्बर संप्रदायों को जन्म दिया, वहीं दूसरी धारा ने लड़ाकू राजपूत,भील ,जाट आदि शक्ति-पूजा के साज खड़ा किए। दोनों ही धाराएं जन-मानस में अभय का संचार करके मानव को 'वीरपुत्र' अथवा 'वीर' बनने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह 'जिन' आध्यात्मिक और भौतिक दोनों क्षेत्रों में अद्भूत समन्वय के साथ प्राप्त होता है।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

उद्यम संचालन में विपणन कौशल

1. **विपणन संचालन:** विपणन संचालन एक व्यापक शब्द है जो सामूहिक रूप से विपणन संगठन के कार्य का वर्णन करता है। इसमें लोग, प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी शामिल हैं, जो विपणन को कुशलतापूर्वक और गुणवत्ता व निरंतरता के साथ बड़े पैमाने पर संचालित करने में सक्षम बनाती हैं।
2. **विपणन और संचालन प्रबंधन के बीच संबंध:** विपणन विभाग विपणन योजना के शोध और विकास के लिए जिम्मेदार है। सफल कार्यान्वयन के लिए उत्पादों और सेवाओं के भौतिक विकास, निर्माण और वितरण के लिए संचालन प्रबंधन कार्यों की आवश्यकता होती है।
3. **विपणन के लिए कौशल:** (i) उत्पादों और सेवाओं को बेचने की क्षमता (ii) उत्कृष्ट मौखिक संचार कौशल (iii) अपनी पहल का उपयोग करने की क्षमता(iv) विस्तार पर ध्यान देना(v) नेतृत्व कौशल(vi) गणित का ज्ञान(vii) व्यवसाय प्रबंधन कौशल (viii) ग्राहक सेवा कौशल
4. **उद्यम संचालन के लिए विपणन कौशल:** (i)वस्तु की मांग और पूर्ति का विश्लेषण व अनुमान की क्षमता का होना। (ii) संभावित नए बाजारों की खोज एवं अनुसंधान करना। (iii)ग्राहकों की रुचियों, इच्छाओं, क्रय आदतों, आवश्यकताओं

आय स्तर व अन्य तथ्यों का ज्ञान लेने की क्षमता (iv)विपणन शोध कार्यक्रमों का निर्धारण व क्रियान्वयन करने की योग्यता। (v)प्रतिस्पर्धा उत्पादों व संस्थाओं की व्यूह रचनाओं को समझने की क्षमता रखना।

5. **ग्राहक ज्ञान:** (i) अपने ग्राहकों को समझना (ii) खरीद व्यवहार की पहचान करना(iii) ग्राहकों के लिए हाई लाइटिंग बिंदु ,आपकी उत्पाद रणनीति को सूचित करने में मदद कर सकते हैं (iv) उत्पाद लोगों को सबसे ज्यादा पसंद हैं और उनमें सुधार की जरूरत है(v) विभिन्न प्रकार के ग्राहकों की पहचान करने के लिए बाजार विभाजन का उपयोग करें (vi) जनसांख्यिकी, भूगोल, क्रय शक्ति और सहभागिता स्तर के आधार पर अपने ग्राहकों को समूहों में विभाजित करना (vii) विज्ञापन अभियान और ईमेल विपणन अभियान सीधे उनकी जरूरतों को लक्षित करने के लिए।
6. **प्रौद्योगिकी और स्वचालन:** (i)विपणन अभियानों को स्वचालित करने से लागत, समय और प्रयास कम हो जाते हैं और आपकी मार्केटिंग टीम को अधिक कुशलता से कार्य करने में मदद मिलती है। (ii)ग्राहक प्रक्रियाओं और डेटा एकीकरण जैसी विपणन प्रक्रियाओं को कारगर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी और स्वचालन का उपयोग करना (iii)प्रौद्योगिकी और विपणन स्वचालन प्रणालियों को अधिकतम करें जो उपलब्ध हैं, विपणन को बढ़ाएगा।
    a. **सोशल मीडिया का विश्लेषण :** (i) ट्वीटर और लिंक्डिन पोस्ट के ऐतिहासिक डेटा, व्यवहार डेटा और ग्राहक डेटा को इकट्ठा करके , भविष्य के प्रदर्शन में सुधार करें।
    b. **डिजिटल विज्ञापन:** (i) वीडियो से लेकर उपभोक्ताओं को खरीदारी करने के लिए विभिन्न विज्ञापन तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। (ii) संभावित ग्राहकों को दिखाने के लिए बैंडवागन प्रभाव जैसी तकनीकों का उपयोग करें।
7. **खोज इंजन अनुकूलन (एसईओ) :** (i) वेबसाइट पर ऑर्गेनिक ट्रैफ़िक चलाने के लिए एसईओ सभी सामग्री को बेहतर बनाने की एक प्रक्रिया है (ii) एसईओ की मदद से साइट Google और याहू जैसे खोज इंजनों की रैंकिंग में अधिक दिखाई देगी (iii) ग्राहक यह देख पाएंगे कि अन्य लोग व्यवसाय के बारे में क्या कह रहे हैं। (v) एसईओ ऑनलाइन प्रतिष्ठा प्रबंधन योजना के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है (vi) यह मार्केटिंग टूल और मार्केटिंग ऑटोमेशन पर भी लागू होता है।
8. **उत्पाद की ब्रांडिंग :** (i) अपने ब्रांड को समझाने और उन लोगों को दिखाने के लिए स्टोरी टेलिंग का उपयोग करें। (ii) कहानी सुनाने की कुंजी यह जानना है कि लोगों को क्या पेशकश की जा सकती है (iii) भीड़ से बाहर ब्रांड स्टैंड बनाने के लिए ग्राफिक डिज़ाइन का उपयोग करें ,जैसे इन्फोग्राफिक्स, वीडियो सामग्री, (vi) ब्रांडिंग से ग्राहकों को यह समझने में मदद कर सकते हैं कि उत्पादों का उपयोग कैसे करें।
9. **लेखन कला:** (i) लिखित सामग्री के संदर्भ में आपको वास्तव में क्या पेशकश करनी है। (ii) लंबे, खींचे गए वाक्यों और बहुत अधिक शब्दजाल का उपयोग करने से बचें। (iii) अपने लक्ष्यों के बारे में लिखें या एक लघु कथा कहानी बनाएं। (iv) इन्फोग्राफिक्स जैसे सूचनात्मक उपकरणों की प्रतिलिपि बनाने के लिए एक पेशेवर लेखक को रख सकते हैं।
10. **डेटा प्रबंधन:** (i) डेटा सटीक अभियान विश्लेषण और रिपोर्टिंग के लिए अनुमति देता है और आगे बढ़ने में अंतर्दृष्टि प्रदान
11. **प्रतिभा और कौशल विकास:** (i) कौशल और प्रतिभा को पहचानें और उनका उपयोग करने के लिए योजना बनाएं। (ii) तार्किक क्षमता को प्रोत्साहित करें, ताकत के क्षेत्रों को पहचानें, कमजोरी वाले क्षेत्रों में सुधार पर काम करें और नए विचारों को सुनने के लिए सिद्धता रखें।
12. **परियोजना प्रबंधन :** आप संसाधनों का प्रबंधन कर रहे हैं और टीम के सदस्यों को प्रेरित कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप परियोजना के लक्ष्यों को पूरा करते हैं और उन्हें निर्धारित बाधाओं के भीतर पूरा करते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी –

रथ्या चर्पट विरचित कन्थः,पुण्यापुण्य विवर्जित पन्थः।
योगी योगनियोजित चित्तो, रमते बालोन्मत्तवदेव ॥

श्रीमद्भगवतगीता

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥

तुझे यह गीत रूप रहस्यमय उपदेश किसी भी काल में न तो तपरहित मनुष्य से कहना चाहिए, न भक्ति रहित से और न बिना सुनने की इच्छा वाले से ही कहना चाहिए तथा जो मुझमें दोषदृष्टि रखता है, उससे तो कभी भी नहीं कहना चाहिए॥

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।

भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥

जो पुरुष मुझमें परम प्रेम करके इस परम रहस्ययुक्त गीताशास्त्र को मेरे भक्तों में कहेगा, वह मुझको ही प्राप्त होगा- इसमें कोई संदेह नहीं है ॥

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥

उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करने वाला मनुष्यों में कोई भी नहीं है तथा पृथ्वीभर में उससे बढ़कर मेरा प्रिय दूसरा कोई भविष्य में होगा भी नहीं ॥

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः॥

जो पुरुष इस धर्ममय हम दोनों के संवाद रूप गीताशास्त्र को पढ़ेगा, उसके द्वारा भी मैं ज्ञानयज्ञ से पूजित होऊँगा- ऐसा मेरा मत है ॥

श्रद्धावाननसूयश्च श्रृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥

जो मनुष्य श्रद्धायुक्त और दोषदृष्टि से रहित होकर इस गीताशास्त्र का श्रवण भी करेगा, वह भी पापों से मुक्त होकर उत्तम कर्म करने वालों के श्रेष्ठ लोकों को प्राप्त होगा ॥

रामचरितमानस

राम भगति जिन्ह कें उर नाहीं । कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं ॥
मुनि मोहि बिबिधि भाँति समुझावा । मैं सप्रेम मुनि पद सिरु नावा ॥

हे तात! जिनके हृदय में श्री रामजी की भक्ति नहीं है, उनके सामने इसे कभी भी नहीं कहना चाहिए। मुनि ने मुझे बहुत प्रकार से समझाया। तब मैंने प्रेम के साथ मुनि के चरणों में सिर नवाया ॥

सदा राम प्रिय होहु तुम्ह सुभ गुन भवन अमान ।
कामरूप इच्छामरन ग्यान बिराग निधान ॥

तुम सदा श्री रामजी को प्रिय होओ और कल्याण रूप गुणों के धाम, मानरहित, इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ, इच्छा मृत्यु एवं ज्ञान और वैराग्य के भण्डार होओ ॥

हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ । प्रभु प्रसाद दुर्लभ बर पायउँ ॥
इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा । बीते कलप सात अरु बीसा ॥

मैं हर्ष सहित इस आश्रम में आया। प्रभु श्री रामजी की कृपा से मैंने दुर्लभ वर पा लिया। हे पक्षीराज! मुझे यहाँ निवास करते सत्ताईस कल्प बीत गए॥

करउँ सदा रघुपति गुन गाना । सादर सुनहिं बिहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरीं रघुबीरा । धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ॥

मैं यहाँ सदा श्री रघुनाथजी के गुणों का गान किया करता हूँ और चतुर पक्षी उसे आदरपूर्वक सुनते हैं। अयोध्यापुरी में जब-जब श्री रघुवीर भक्तों के (हित के) लिए मनुष्य शरीर धारण करते हैं ॥

भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर। सावधान सोउ सुनु बिहंगबर॥

भक्ति और ज्ञान में कुछ भी भेद नहीं है। दोनों ही संसार से उत्पन्न क्लेशों को हर लेते हैं। हे नाथ! मुनीश्वर इनमें कुछ अंतर बतलाते हैं। हे पक्षीश्रेष्ठ! उसे सावधान होकर सुनिए ॥

भगतिहि सानुकूल रघुराया । ताते तेहि डरपति अति माया ॥
राम भगति निरुपम निरुपाधी । बसइ जासु उर सदा अबाधी ॥

श्री रघुनाथजी भक्ति के विशेष अनुकूल रहते हैं । इसी से माया उससे अत्यंत डरती रहती है । जिसके हृदय में उपमारहित और उपाधिरहित (विशुद्ध) रामभक्ति सदा बिना किसी बाधा (रोक-टोक) के बसती है ॥

तब ते जीव भयउ संसारी । छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूट न अधिक अधिक अरुझाई ॥

तभी से जीव संसारी (जन्मने-मरने वाला) हो गया। अब न तो गाँठ छूटती है और न वह सुखी होता है। वेदों और पुराणों ने बहुत से उपाय बतलाए हैं, पर वह (ग्रंथि) छूटती नहीं वरन अधिकाधिक उलझती ही जाती है॥

तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि॥

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों अवस्थाएँ और (सत्त्व, रज और तम) तीनों गुण रूपी कपास से तुरीयावस्था रूपी रूई को निकालकर और फिर उसे सँवारकर उसकी सुंदर कड़ी बत्ती बनाएँ॥

एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब॥

इस प्रकार तेज की राशि विज्ञानमय दीपक को जलावें, जिसके समीप जाते ही मद आदि सब पतंगे जल जाएँ॥

रिद्धि-सिद्धि प्रेरइ बहु भाई। बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई॥
कल बल छल करि जाहिं समीपा। अंचल बात बुझावहिं दीपा॥

हे भाई! वह बहुत सी ऋद्धि-सिद्धियों को भेजती है, जो आकर बुद्धि को लोभ दिखाती हैं और वे ऋद्धि-सिद्धियाँ कल (कला), बल और छल करके समीप जाती और आँचल की वायु से उस ज्ञान रूपी दीपक को बुझा देती हैं॥

इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं बिषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी॥

इंद्रियों के द्वार हृदय रूपी घर के अनेकों झरोखे हैं। वहाँ-वहाँ (प्रत्येक झरोखे पर) देवता थाना किए (अड्डा जमाकर) बैठे हैं। ज्यों ही वे विषय रूपी हवा को आते देखते हैं, त्यों ही हठपूर्वक किवाड़ खोल देते हैं॥

इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई। बिषय भोग पर प्रीति सदाई॥
बिषय समीर बुद्धि कत भोरी। तेहि बिधि दीप को बार बहोरी॥

इंद्रियों और उनके देवताओं को ज्ञान (स्वाभाविक ही) नहीं सुहाता, क्योंकि उनकी विषय-भोगों में सदा ही प्रीति रहती है और बुद्धि को भी विषय रूपी हवा ने बावली बना दिया। तब फिर (दोबारा) उस ज्ञान दीप को उसी प्रकार से कौन जलावे?॥

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक॥

ज्ञान कहने (समझाने) में कठिन, समझने में कठिन और साधने में भी कठिन है। यदि घुणाक्षर न्याय से (संयोगवश) कदाचित् यह ज्ञान हो भी जाए, तो फिर (उसे बचाए रखने में) अनेकों विघ्न हैं॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा॥
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई॥

ज्ञान का मार्ग कृपाण (दोधारी तलवार) की धार के समान है। हे पक्षीराज! इस मार्ग से गिरते देर नहीं लगती। जो इस मार्ग को निर्विघ्न निबाह ले जाता है, वही कैवल्य (मोक्ष) रूप परमपद को प्राप्त करता है॥

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई॥
तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई। रहि न सकइ हरि भगति बिहाई॥

जैसे स्थल के बिना जल नहीं रह सकता, चाहे कोई करोड़ों प्रकार के उपाय क्यों न करे। वैसे ही, हे पक्षीराज! सुनिए, मोक्षसुख भी श्री हरि की भक्ति को छोड़कर नहीं रह सकता॥

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य॥

जो चेतन को जड़ कर देता है और जड़ को चेतन कर देता है, ऐसे समर्थ श्री रघुनाथजी को जो जीव भजते हैं, वे धन्य हैं॥

बोधवाक्य: "हम लोग कभी भी पृथकतावादी नहीं रहे, प्राचीनतम काल से हम विभिन्न जातियों के लोगों से संपर्क स्थापित करते रहे हैं और उनके साथ सद्भावना और मित्रता के सेतुओं का निर्माण करते रहे हैं। बिल्कुल निकट भूत में भी भारत ने अपने संतों, विद्वानों, सैनिकों, वैज्ञानिकों, कलाकारों, शिल्पियों, व्यापारियों, उद्योगपतियों और श्रमिकों को विदेशों में भेजा है जो इसी उद्देश्य को सामने

रखकर अनौपचारिक सांस्कृतिक राजदूतों के रूप में पूरा काम करते रहे हैं, हम लोग आरम्भ से ही अंतरराष्ट्रीयतावादी रहे हैं, हमारे राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता के बीच कोई परस्पर विरोध नहीं है।"- दत्तोपंत ठेगडी

बोधकथा :

पांच सौ रुपये

एक पंडित जी ने एक दुकानदार के पास पांच सौ रुपये रख दिए। उन्होंने सोचा कि जब मेरी बेटी की शादी होगी तो मैं ये पैसा ले लूंगा। कुछ सालों के बाद जब बेटी सयानी हो गई, तो पंडित जी उस दुकानदार के पास गए। लेकिन दुकानदार ने नकार दिया और बोला- आपने कब मुझे पैसा दिया था? बताइए! क्या मैंने कुछ लिखकर दिया है? पंडित जी उस दुकानदार की इस हरकत से बहुत ही परेशान हो गए और बड़ी चिंता में डूब गए। फिर कुछ दिनों के बाद पंडित जी को याद आया, कि क्यों न राजा से इस बारे में शिकायत कर दूं ताकि वे कुछ फैसला कर देंगे और मेरा पैसा मेरी बेटी के विवाह के लिए मिल जाएगा। फिर पंडित जी राजा के पास पहुंचे और अपनी फरियाद सुनाई।

राजा ने कहा- कल हमारी सवारी निकलेगी और तुम उस दुकानदार की दुकान के पास में ही खड़े रहना। दूसरे दिन राजा की सवारी निकली। सभी लोगों ने फूलमालाएं पहनाईं और किसी ने आरती उतारी। पंडित जी उसी दुकान के पास खड़े थे। जैसे ही राजा ने पंडित जी को देखा, तो उसने उन्हें प्रणाम किया और कहा- गुरु जी! आप यहां कैसे? आप तो हमारे गुरु हैं।

आइए ! इस बग्घी में बैठ जाइए। वो दुकानदार यह सब देख रहा था। उसने भी आरती उतारी और राजा की सवारी आगे बढ़ गई। थोड़ी दूर चलने के बाद राजा ने पंडित जी को बग्घी से नीचे उतार दिया और कहा- पंडित जी ! हमने आपका काम कर दिया है। अब आगे आपका भाग्य। उधर वो दुकानदार यह सब देखकर हैरान था, कि पंडित जी की तो राजा से बहुत ही अच्छी सांठ-गांठ है। कहीं वे मेरा कबाड़ा ही न करा दें। दुकानदार ने तत्काल अपने मुनीम को पंडित जी को ढूंढ़कर लाने को कहा।

पंडित जी एक पेड़ के नीचे बैठकर कुछ विचार-विमर्श कर रहे थे। मुनीम जी बड़े ही आदर के साथ उन्हें अपने साथ ले आए। दुकानदार ने आते ही पंडित जी को प्रणाम किया और बोला- पंडित जी! मैंने काफी मेहनत की और पुराने खातों को देखा, तो पाया कि खाते में आपका पांच सौ रुपया जमा है। और पिछले दस सालों में ब्याज के बारह हजार रुपए भी हो गए हैं। पंडित जी! आपकी बेटी भी तो मेरी बेटी जैसी ही है। अत: एक हजार रुपये आप मेरी तरफ से ले जाइए, और उसे बेटी की शादी में लगा दीजिए। इस प्रकार उस दुकानदार ने पंडित जी को तेरह हजार पांच सौ रुपए देकर बड़े ही प्रेम के साथ विदा किया।

मासिक गीत / गान :

चढ़ चेतक पर तलवार उठा, रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट काट, करता था सफल जवानी को॥

कल-कल बहती थी रणगंगा,अरिदल को डूब नहाने को।
तलवार वीर की नाव बनी, चटपट उस पार लगाने को॥
वैरी दल को ललकार गिरी,वह नागिन सी फुफकार गिरी।
था शोर मौत से बचो बचो, तलवार गिरी तलवार गिरी॥

पैदल, हयदल, गजदल में,छप छप करती वह निकल गई।
क्षण कहाँ गई कुछ पता न फिर,देखो चम-चम वह निकल गई॥
क्षण इधर गई क्षण उधर गई,क्षण चढ़ी बाढ़ सी उतर गई।
था प्रलय चमकती जिधर गई,क्षण शोर हो गया किधर गई॥

लहराती थी सिर काट काट, बलखाती थी भू पाट पाट।
बिखराती अवयव बाट बाट, तनती थी लोहू चाट चाट॥
क्षण भीषण हलचल मचा मचा,राणा कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने को यह, रण-चंडी जीभ पसार बढ़ी॥

(श्याम नारायण पाण्डेय)

----------00----------

जून

जेष्ठ - भारतीय ज्ञान परमपरा में योग का ध्येय मुक्ति अथवा ब्रम्ह का साक्षात्कार बताया गया है। इस ब्रह्म को साधक अपनी साधना के आधार पर प्राप्त करता है। इसलिए कुछ के लिए यह देवता है तो कुछ के लिए ईश्वर और कुछ श्रेष्ठ साधकों के लिए यह ब्रह्म है। माना जा सकता है की साक्षत्कार की अवस्था के आधार पर इसे अनुभूत किया जा सकता है। योगानुशासन ही इसका पाथेय है। सामान्य भाषा में इसे ईश्वर कहते हैं।

योग–भाग पांच

प्रस्थान त्रयी: उपनिषद, गीता तथा ब्रह्मसूत्र को मिलाकर प्रस्थान त्रयी कहा जाता है।जिनमें- प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्गों का तात्त्विक विवेचन है। ये वेदान्त के तीन मुख्य स्तम्भ माने जाते हैं। इनमें उपनिषदों को श्रुति प्रस्थान, भगवद्गीता को स्मृति प्रस्थान और ब्रह्मसूत्रों को न्याय प्रस्थान कहते हैं। ब्रह्मसूत्र के रचयिता बादरायण हैं। इसे वेदान्त सूत्र, उत्तर-मीमांसा सूत्र, शारीरिक सूत्र और भिक्षु सूत्र आदि के नाम से भी जाना जाता है। प्राचीन काल में भारतवर्ष में जब कोई गुरु अथवा आचार्य अपने मत का प्रतिपादन एवं उसकी प्रतिष्ठा करना चाहता था तो उसके लिये सर्वप्रथम वह इन तीनों पर भाष्य लिखता था। आदि शंकराचार्य,रामानुजाचार्य,माधवाचार्य और निम्बकाचार्य आदि बड़े बड़े-आचार्यों ने ऐसा कर के ही अपने मत का प्रतिपादन किया।

उपनिषद : सनातन वैदिक धर्म के ज्ञानकाण्ड को उपनिषद् कहते हैं। सहस्त्रों वर्ष पूर्व भारतवर्ष में जीव जगत तथा तत्सम्बन्धी-अन्य विषयों पर गम्भीर चिन्तन के माध्यम से उनकी जो मीमांसा की गयी थी, उपनिषदों में उन्हीं का संकलन है। उपनिषद् हिन्दू धर्म के महत्त्वपूर्ण श्रुति धर्मग्रन्थ हैं। ये वैदिक वाङ्मय के अभिन्न भाग हैं। इनमें परमात्मा-ब्रह्म और आत्मा के स्वभाव और सम्बन्ध का बहुत ही दार्शनिक और ज्ञानपूर्वक विवेचन किया गया है। उपनिषदों में कर्मकांड को 'अवर' कहकर ज्ञान को इसलिए महत्व दिया गया कि ज्ञान स्थूल से सूक्ष्म की ओर ले जाता है। ब्रह्म, जीव और जगत् का ज्ञान पाना उपनिषदों की मूल शिक्षा है। उपनिषद ही समस्त भारतीय दर्शनों के मूल स्रोत हैं, चाहे वो वेदान्त हो या सांख्य या जैन धर्म या बौद्ध धर्म। उपनिषदों को स्वयं भी वेदान्त कहा गया है। दुनिया के कई दार्शनिक उपनिषदों को सबसे बेहतरीन ज्ञानकोश मानते हैं। उपनिषद् भारतीय सभ्यता की विश्व को अमूल्य धरोहर है। मुख्य उपनिषद 13 हैं। हरेक किसी न किसी वेद से जुड़ा हुआ है। ये संस्कृत में लिखे गये हैं। १७वी सदी में दारा शिकोह ने अनेक उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कराया।

पाश्चात्य विद्वान और उपनिषद : सन् 1775 ई. के पहले तक किसी भी पाश्चात्य विद्वान की दृष्टि उपनिषदों पर नहीं पड़ी थी। अयोध्या के नवाब सुराजुद्दौला की राजसभा के फारसी रेजिडेंट श्री एम. गेंटिल ने सन् 1775 ई. प्रसिद्ध यात्री और जिन्दावस्ता के प्रसिद्ध आविष्कारक एंक्वेटिल डुपेर्रन को दारा शिकोह के द्वारा सम्पादित उक्त फारसी अनुवाद की एक पाण्डुलिपि भेजी। एंक्वेटिल डुपेर्रन ने कहीं से एक दुसरी पाण्डुलिपि प्राप्त की और दोनों को मिलाकर फ्रेंच तथा लैटिन भाषा में उस फारसी अनुवाद का पुन: अनुवाद किया। लैटिन अनुवाद सन् 1801-2 में 'ओपनखत' नाम से प्रकाशित हुआ। फ्रेंच अनुवाद नहीं छपा। बाद में प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक शेपेनहावर- सन् 1788-1860) ने गम्भीर अध्ययन पश्चात लिखा- 'मैं समझता हूँ कि उपनिषद् के द्वारा वैदिक साहित्य के साथ परिचय लाभ होना वर्तमान शताब्दी (सन् 1818) का सबसे अधिक परम लाभ है जो इसके पहले किन्हीं भी शताब्दियों को नहीं मिला। चौदहवीं शताब्दी के ग्रीक साहित्य के अभ्युदय में ग्रीक-साहित्य के पुनरभ्युदय से यूरोपीय साहित्य की जो उन्नति हुई थी, संस्कृत- साहित्य का प्रभाव उसकी अपेक्षा कम फल उत्पन्न करने वाला नहीं होगा।' वे उपनिषदों के बारे में आगे लिखते हैं- 'जिस देश में उपनिषदों के सत्य समूह का प्रचार था, उस देश में ईसाई-धर्म का प्रचार व्यर्थ है।' शेपेनहावर की भाविष्यवाणी सिद्ध हुई और स्वामी विवेकानन्द की शिष्या 'सारा बुल' ने अपने एक पत्र में लिखा कि "जर्मन का दार्शनिक सम्प्रदाय, इग्लैण्ड के प्राच्य पण्डित और हमारे अपने देश के एरसन आदि साक्षी दे रहे हैं कि पाश्चात्य विचार आजकल सचमुच ही वेदान्त के द्वारा अनुप्राणित हैं।" सन् 1844 में बर्लिन में श्रीशेलिंग महोदय की उपनिषद सम्बन्धी व्याख्यानोंव्याखान को सुनकर मैक्समूलर का ध्यान सबसे पहले संस्कृत की ओर आकृष्ट हुआ। शोपेनहार लिखता है- "सम्पूर्ण विश्व में उपनिषदों के समान जीवन को उँचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नहीं है। उससे मेरे जीवन को शान्ति मिली है, उन्हीं से मुझे मृत्यु में भी शान्ति मिलेगी।" शोपेनहार आगे लिखता है- 'ये सिद्धान्त ऐसे हैं, जो एक प्रकार से अपौरषेय ही हैं। ये जिनके मस्तिष्क की उपज हैं, उन्हें निरे मनुष्य कहना कठिन है। शोपेनहार के इन्हीं शब्दों के समर्थन में प्रसिद्ध पश्चिमी विद्धान मैक्स मूलर लिखता है-'शोपेनहार के इन शब्दों के लिये यदि किसी समर्थन की आवश्यकता हो तो अपने जीवन भर के अध्ययन के आधार पर मैं उनका प्रसन्नतापूर्वक समर्थन करूँगा'

जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान पाल डायसन ने उपनिषदों को मूल संस्कृत में अध्ययन कर अपनी टीप देते हुए अपनी पुस्तक (philosophy of the Upanisads) में लिखा-'उपनिषद के भीतर, जो दार्शनिक कल्पना है, वह भारत में तो अद्वितीय है ही, सम्भवत: सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय है' मैक्डोनल कहता है,'मानवीय चिन्तना के इतिहास में पहले पहल वृहदारण्यक उपनिषद में ही ब्रह्म अथवा पूर्ण तत्व को प्राप्त करके उसकी यर्थाथ व्यंजना हुई है।' फ्रांसीसी विद्वान दार्शनिक विक्टर कजिन्स् लिखते हैं,-'जब हम पूर्व की और उनमें भी शिरोमणि स्वरूपा भारतीय साहित्यिक एवं दार्शनिक महान् कृतियों का अवलोकन करते हैं, तब हमें ऐसे अनेक गंभीर सत्यों का पता चलता है, जिनकी उन निष्कर्षों से तुलना करने पर जहाँ पहुँचकर यूरोपीय प्रतिभा कभी-कभी रुक गयी है, हमें पूर्व के तत्वज्ञान के आगे घुटना टेक देना चाहिए। जर्मनी के एक दूसरे प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रेडरिक श्लेगेल लिखते हैं- ' पूर्वीय आदर्शवाद के प्रचुर प्रकाश पुंज की तुलना में यूरोपवासियों का उच्चतम तत्वज्ञान ऐसा ही लगता है, जैसे मध्याह्न सूर्य के व्योमव्यापी प्रताप की पूर्ण प्रखरता में टिमटिमाती और अनल शिखा की कोई आदि किरण, जिसकी अस्थि और निस्तेज ज्योति ऐसी हो रही हो मानो अब बुझी कि तब।'

उपनिषदों का सार - उपनिषदों की संख्या लगभग 108 है, जिनमें से प्रायः 11 उपनिषदों को मुख्य उपनिषद् कहा जाता है। मुख्य उपनिषद, वे उपनिषद हैं, जो प्राचीनतम हैं और जिन पर आदि शंकराचार्य से लेकर अन्य आचार्यों ने भाष्य किए हैं - (1) ईशावास्योपनिषद्, (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद् (5) मुण्डकोपनिषद् (6) माण्डूक्योपनिषद् (7) तैत्तरीयोपनिषद् (8) ऐतरेयोपनिषद् (9) छान्दोग्योपनिषद् (10) बृहदारण्यकोपनिषद् (11) श्वेताश्वतरोपनिषद्।आदि शंकराचार्य ने इनमें से 10 उपनिषदों पर टीका लिखी थी। इनमें माण्डूक्योपनिषद सबसे छोटा और बृहदारण्यक सबसे बड़ा उपनिषद।

(1) **ईशोपनिषद:** यह उपनिषद् कलेवर में छोटा है किन्तु विषय के कारण अन्य उपनिषदों के बीच महत्त्वपूर्ण है। इस उपनिषद् के पहले मंत्र ईशावास्यमिदंसर्वंयत्किंच जगत्यां-जगत…''से लेकर अठारहवें मंत्र ''अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विध्वानि देववयुनानि'' विद्वान्…'' तकमें ईश्वर, ब्रह्मांड और सात्विक जीवन शैली को बताया गया है। इसमें 'असुर्या' वह लोक जहाँ सूर्य नहीं पहुँच पाता में कहा गया है कि जो लोग आत्म को, 'स्व' को नहीं पहचानते हैं, उन्हें मृत्यु के पश्चात् उसी असुर्या नामक लोक में जाना पड़ता है। 'आत्म' में ब्रह्म को एकाकार करते हुए बताया है की वह एक साथ, एक ही समय में भ्रमणशील है, साथ ही अभ्रमणशील भी। वह पास है और दूर भी। वह सर्वव्यापी, अशरीरी, सर्वज्ञ, स्वजन्मा और मन का शासक है। इस उपनिषद् में विद्या एवं अविद्या दोनों की बात की गई है कि विद्या एवं अविद्या दोनों की उपासना करने वाले घने अंधकार में जाकर गिरते हैं, हाँ विद्या एवं अविद्या को एक साथ जान लेने वाला, अविद्या को समझकर विद्या द्वारा अनुष्ठानित होकर अमरत्व को समझ लेता है। इसमें ब्रह्म के मुख को सुवर्ण पात्र से टंके होने की बात साथ ही सूर्य से पोषण करने वाले से प्रार्थना की। अंतिम श्लोकों में किए गए सभी कर्मों को मन के द्वारा याद किए जाने की बात आती है और अग्नि से प्रार्थना कि पंञ्चभौतिक शरीर के राख में परिवर्तित हो जाने पर वह उसे दिव्य पथ से चरम गंतव्य की ओर उन्मुख कर दे।

(2) केनोपनिषद :इसमें 'केन' (किसके द्वारा) का विवेचन होने से इसे 'केनोपनिषद' कहा गया है। इसके चार खण्ड हैं। प्रथम और द्वितीय खण्ड में गुरु-शिष्य की संवाद-परम्परा द्वारा उस (केन) प्रेरक सत्ता की विशेषताओं, उसकी गूढ़ अनुभूतियों आदि पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे और चौथे खण्ड में देवताओं में अभिमान तथा उसके मान-मर्दन के लिए 'यज्ञ-रूप' में ब्राह्मी-चेतना के प्रकट होने का उपाख्यान है। अन्त में उमा देवी द्वारा प्रकट होकर देवों के लिए 'ब्रह्मतत्त्व' का उल्लेख किया गया है तथा ब्रह्म की उपासना का ढंग समझाया गया है। मनुष्य को 'श्रेय' मार्ग की ओर प्रेरित करना, इस उपनिषद का लक्ष्य हैं।

(3) कठोपनिषद: सामवेदीय शाखा का उपनिषद है। "ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥" यह उपनिषद आत्म-विषयक आख्यायिका से आरम्भ होता है। प्रमुख रूप से यम नचिकेता के प्रश्न प्रतिप्रश्न के रुप में है। नचिकेता के पिता , ऋषि अरुण के पुत्र उद्दालक लौकिक कीर्ति की इच्छा से विश्वजित (अर्थात विश्व को जीतने का) याग का अनुष्ठान करते हैं। याजक अपनी समग्र सम्पत्ति का दान कर दे यह इस यज्ञ की प्रमुख विधि है। इस विधि का अनुसरण करते हुए उसने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी। उसके पास कुछ पीतोदक, जग्धतृण, दुग्धदोहा, निरिन्द्रिय और दुर्बल गाएँ थीं। नचिकेता ने पिता से कहा, इस प्रकार के दान से तो आपका योग सफल न होगा न आपकी आत्मा का अभ्युदय होगा। संवाद में वह कहता है कि आपमें सचमुच दान की भावना है तो मुझे दान कीजिये, "कहिये मुझे किसको दान में देने को तैयार हैं" - कस्मै मा दास्यसि ? पिता ने पुत्र की बात अनसुनी कर दी ; समझा नादान बालक है। जब नचिकेता ने देखा की उसका पिता उद्दालक उसकी बात पर ध्यान नहीं दे रहा है तो उसी प्रश्न को कई बार दोहराया - "मुझे किसे दोगे" ? तब क्रोधित होकर पिता ने कहा - तुझे मृत्यु को दान में देता हूँ (मृत्यवे त्वा ददामि)। यह सुन नचिकेता मृत्यु अर्थात यमाचार्य के पास गया और उनसे तीन वर मांगें - पहला वर पिता का स्नेह मांगा। दूसरा अग्नि विद्या जानने के बारे में था। तीसरा वर मृत्यु रहस्य और आत्मज्ञान को लेकर था। इसी सवाद को लेकर यह उपनिषद सामने आता है।

(4) **प्रश्नोपनिषद:** इस उपनिषद् के प्रवक्ता आचार्यपिप्पलाद थे जो कदाचित् पीपल के गोदे खाकर जीते थे। सुकेशा, सत्यकाम, सौर्यायणि गार्ग्य, कौसल्य, भार्गव और कबंधी, इन छह ब्रह्मजिज्ञासुओं ने इनसे ब्रह्मनिरूपण की अभ्यर्थना करने के उपरांत उसे हृदयंगम करने की पात्रता के लिये आचार्य के आदेश पर वर्ष पर्यंत ब्रह्मचर्य पूर्वक तपस्या करके पृथक्-पृथक् एक एक प्रश्न किया। इसके प्रथम तीन

प्रश्न अपरा विद्या विषयक तथा शेष परा विद्या संबंधी हैं। प्रथम प्रश्न में प्रजापति सेसृष्टि की उत्पत्ति, द्वितीय प्रश्न में प्राण के स्वरूप , तीसरे प्रश्न में प्राण की उत्पत्ति तथा स्थिति का निरूपण किया गया है। पिप्पलाद ने चौथे प्रश्न में बताया की स्वप्नावस्था में श्रोत्रादि इंद्रियों के मन मे लय हो जाने पर प्राण जाग्रत रहता है तथा सुषुप्ति अवस्था में मन का आत्मा में लय हो जाता है। वही द्रष्टा, श्रोता, मंता, विज्ञाता इत्यादि है जो अक्षर ब्रह्म का सोपाधिक स्वरूप है। इसका ज्ञान होने पर मनुष्य स्वयं सर्वज्ञ, सर्वस्वरूप, परम अक्षर हो जाता है। पाँचवे प्रश्न में बताया कि ओंकार में ब्रह्म की एकनिष्ठ उपासना एवं ॐ का एकनिष्ठ उपासक परात्पर पुरुष का साक्षात्कार करता है। अंतिम छठे प्रश्न में आचार्य पिप्पलाद ने दिखाया है कि इसी शरीर के हृदय पुंडरीकांक्ष में सोलहकलात्मक पुरुष का वास है। ब्रह्म की इच्छा, एवं उसी से प्राण, उससे श्रद्धा, आकाश, वाय, तेज, जल, पृथिवी, इंद्रियाँ, मन और अन्न, अन्न से वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, लोक और नाम उत्पन्न हुए हैं जो उसकी सोलह कलाएँ और सोपाधिक स्वरूप हैं।

(5) मुण्डकोपनिषद् : मुंडकोपनिषद् दो-दो खंडों के तीन मुंडकों में, अथर्ववेद के मंत्रभाग के अंतर्गत आता है। इसमें पदार्थ और ब्रह्म-विद्या का विवेचन है, आत्मा-परमात्मा की तुलना और समता का भी वर्णन है। इसके मंत्र सत्यमेव जयते ना अनृतम का प्रथम भाग, यानि सत्ममेव जयते भारत के राष्ट्रचिह्न का भाग है। इस उपनिषत् में ऋषि अंगिरा और शिष्य शौनक के संवाद हैं। इसमें 21, 21 और 22 के तीन मुंडकों में 64 मंत्र हैं।

(6) माण्डूक्योपनिषद्: इस उपनिषद में कहा गया है कि विश्व में, भूत-भविष्यत् - वर्तमान कालों में तथा इनके परे भी जो नित्य तत्त्व सर्वत्र व्याप्त है वह ॐ है। यह सब ब्रह्म है और यह आत्मा भी ब्रह्म है। इसमें आत्मा कि अभिव्यक्ति की - जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय चार अवस्थाएँ बताई गई हैं। (ब्रह्म) के भेद का प्रपंच नहीं है और केवल अद्वैत शिव ही शिव रह जाता है।

(7) तैत्तरीयोपनिषद्: तैत्तिरीयोपनिषद कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा के अन्तर्गत एक उपनिषद है। यह शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली और भृगुवल्ली इन तीन खंडों में विभक्त है - कुल ५३ मंत्र हैं, जो ४० अनुवाकों में व्यवस्थित है। उपनिषद का आरंभ ब्रह्मविद्या के सारभूत 'ब्रह्मविदाप्नोति परम्' मंत्र से होता है। ब्रह्म का लक्षण सत्य, ज्ञान और अनंत स्वरूप बतलाकर उसे मन और वाणी से परे अचिंत्य कहा गया है। इस उपनिषद् के मत से ब्रह्म से ही नामरूपात्मक सृष्टि की उत्पत्ति हुई है और उसी के आधार से उसकी स्थिति है तथा उसी में वह अंत में विलीन हो जाती है।

(8) ऐतरेयोपनिषद्: इस उपनिषद् में तीन अध्याय हैं। उनमें से पहले अध्याय में तीन खण्ड हैं तथा दूसरे और तीसरे अध्यायोंमें केवल एक-एक खण्ड हैं। प्रथम अध्याय में बतालाया है कि सृष्टि के आरम्भ में केवल एक आत्मा ही था, उसने लोक-रचना के लिये ईक्षण (विचार) किया और केवल सकल्प से अम्भ, मरीचि और मर तीन लोकोंकी रचना की। उनके लिये लोकपालो की रचना किया। परमात्मा की आज्ञा से उसके भिन्न-भिन्न अवयवों में वाक्, प्राण, चक्षु आदि स्थति हो गये। फिर अन्नकी रचना की गयी। देवताओं ने उसे वाणी प्राण चक्षु एवं श्रोत्रादि भिन्न-भिन्न कारणों से ग्रहण करना चाहा; परन्तु वे इसमें सफल न हुए। अन्त में उन्होंने उसे अपान द्वार ग्रहण कर लिया। इस प्रकार यह सारी सृष्टि हो जानेपर परमात्मा ने विचार किया कि अब मुझे भी इसमें प्रवेश करना चाहिये; क्योंकि मेरे बिना यह सारा प्रपंच अकिंचित्कर ही है। अतः वह उस पुरुष की मूर्द्धसीमा को विदीर्णकर उसके द्वारा उसमें प्रवेश किया कर गया। इस प्रकार ईक्षण से लेकर परमात्मा के प्रवेशपर्यन्त जो सृष्टिक्रम बतलाया गया है।

(9) छान्दोग्योपनिषद् : इसके आठ प्रपाठकों में प्रत्येक में अनेक खण्ड हैं। यह उपनिषद ब्रह्मज्ञान के लिये प्रसिद्ध है। संन्यासप्र धान इस उपनिषद् का विषय अपाप, जरा-मृत्यु-शोक रहित, विजिधित्स, पिपासा रहित, सत्यकाम, सत्यसंकल्प आत्मा की खोज तथा सम्यक् ज्ञान है। प्रपाठक आठ के खण्ड १५ के अनुसार इसका प्रवचन ब्रह्मा ने प्रजापति को, प्रजापति ने मनु को और मनु ने अपने पुत्रों को किया जिनसे इसका जगत् में विस्तार हुआ। यह निरूपण बहुधा ब्रह्मविदों ने संवादात्मक रूप में किया। श्वेतकेतु और उद्दालक, श्वेतकेतु और प्रवाहण जैबलि,सत्यकाम जाबाल और हारिद्रुमत गौतम, कामलायन उपकोसल और सत्यकाम जाबाल, औपमन्यवादि और अश्वपति कैकेय, नारद और सनत्कुमार, इंद्र और प्रजापति के संवादात्मक निरूपण उदाहरण सूचक हैं।

(10) बृहदारण्यकोपनिषद्: बृहदारण्यक अद्वैत वेदान्त और संन्यासनिष्ठा का प्रतिपादक है। यह उपनिषदों में सर्वाधिक बृहदाकार है तथा मुख्य दस उपनिषदों के श्रेणी में सबसे अंतिम उपनिषद् माना जाता है। इसमें जीव, ब्रह्माण्ड और ब्रह्म (ईश्वर) के बारे में कई बाते कहीं गईं है। यजुर्वेद के प्रसिद्ध पुरुष सूक्त के अतिरिक्त इसमें अश्वमेध, असतो मा सद्गमय, नेति नेति जैसे विषय हैं। इसमें ऋषि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी का संवाद है, जो अत्यन्त क्रमबद्ध और युक्तिपूर्ण है। इसके नाम (बृहदारण्यक = बृहद् + आरण्यक) का अर्थ 'बृहद ज्ञान वाला' या 'घने जंगलों में लिखा गया' उपनिषद है। इस उपनिषद् का ब्रह्मनिरूपणात्मक अधिकांश उन व्याख्याओं का समुचच्य है जिनसे अजातशत्रु ने गार्ग्य बालाकि की, जैवलि प्रवाहण ने श्वेतकेतु की, याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी और जनक की तथा जनक के यज्ञ में समवेत गार्गी और जारत्कारव आर्तभाग इत्यादि आठ मनीषियों की ब्रह्मजिज्ञासा निवृत्त की थी।

(11) श्वेताश्वतरोपनिषद् : श्वेताश्वतर उपनिषद् में छह अध्याय और 113 मंत्र हैं। उपनिषद् का यह नाम श्वेताश्वतर ऋषि के कारण प्राप्त है। मुमुक्षु संन्यासियों के कारण ब्रह्म क्या है अथवा इस सृष्टि का कारण ब्रह्म है अथवा अन्य कुछ हम कहाँ से आए, किस आधार पर

ठहरे हैं, हमारी अंतिम स्थिति क्या होगी, हमारे सुख दु:ख का हेतु क्या है, इत्यादि प्रश्नों के समाधान में ऋषि ने जीव, जगत् और ब्रह्म के स्वरूप तथा ब्रह्मप्राप्ति के साधन बतलाए हैं और यह उपनिषद सीधे योगिक अवधारणाओं की व्याख्या करता है। इसमें बताया गया है की ध्यान (योग) की स्वानुभूति से प्रत्यक्ष देखा गया है कि सब का कारण ब्रह्म की शक्ति है और वही इन कथित कारणों की अधिष्ठात्री है। इस शक्ति को ही प्रकृति, प्रधान अथवा माया की अभिधा प्राप्त है। यह अज और अनादि है, परंतु परमात्मा के अधीन और उससे अस्वतंत्र है। वस्तुत: जगत् माया का प्रपंच है। वह क्षर और अनित्य स्थूल देह में, सूक्ष्म अथवा लिंग शरीर जो कर्मफल से लिप्त रहता है उसके साथ जीवात्मा जन्मांतर में प्रवेश करता है। इसे ब्रह्मचक्र या विश्वमाया कहा गया है। जब तक अविद्या के कारण जीव अपने को भोक्ता, जगत् को भोग्य और ईश्वर को प्रेरिता मानता अथवा ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान को पृथक् पृथक् देखता है तब तक इस ब्रह्मचक्र से वह मुक्त नहीं हो सकता । ब्रह्म का श्रेष्ठ रूप निर्गुण, त्रिगुणातीत, अज, ध्रुव, इंद्रियातीत, निरिंद्रिय, अवर्ण और अकल है। वह न सत् है, न असत्, जहाँ न रात्रि है न दिन, वह त्रिकालातीत है। देह में व्याप्त ब्रह्म का प्रणव द्वारा निरंतर ध्यान करके उसका साक्षात्कार किया जा सकता है। इसमें प्राणायाम और योगाभ्यास की विधि विस्तारपूर्वक बतलाई गई है।

श्रीमद्भगवतगीता

कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था। वह श्रीमद्भगवदगीता के नाम से प्रसिद्ध है। मूलत: यह संस्कृत महाकाव्य महाभारत की एक उपकथा के रूप में प्रारम्भ होता है । आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण ने अपने मित्र तथा भक्त अर्जुन को श्रीमद्भगवतगीता का उपदेश दिया था। यह मानव इतिहास की सबसे महान दार्शनिक तथा धार्मिक वार्ताओं में से एक है। यह महाभारत के भीष्मपर्व का अंग है। गीता में १८ अध्याय और ७०० श्लोक हैं। प्रत्येक अध्याय एक-दूसरे से गुथे हुए हैं और निरन्तर हैं। गीता की गणना प्रस्थानत्रयी में की जाती है, जिसमें उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र भी सम्मिलित हैं। अतएव भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार गीता का स्थान वही है जो उपनिषद् और ब्रह्मसूत्रों का है। गीता के माहात्म्य में उपनिषदों को गौ और गीता को उसका दुग्ध कहा गया है। गीता अध्यात्म विद्या है। उपनिषदों की अनेक विद्याएँ गीता में हैं। जैसे, सांसारिक स्वरूप, के अश्वत्थ विद्या, अव्ययपुरुष विद्या, परा प्रकृति के विषय में अक्षर पुरुष विद्या और अपरा प्रकृति या भौतिक जगत के विषय में क्षरपुरुष विद्या। इस प्रकार वेदों के ब्रह्मवाद और उपनिषदों के अध्यात्म, इन दोनों की विशिष्ट सामग्री गीता में संनिविष्ट होने से उसे ब्रह्मविद्या कहा गया है। गीता में 'ब्रह्मविद्या' का आशय निवृत्ति परक ज्ञानमार्ग से है। गीता में 'योगशास्त्रे' शब्द है। यहाँ 'योगशास्त्रे' का अभिप्राय नि:संदेह कर्मयोग से ही है। गीता में योग की दो परिभाषाएँ पाई जाती हैं। एक निवृत्ति मार्ग की दृष्टि से जिसमें 'समत्वं योग उच्यते' कहा गया है। योग की दूसरी परिभाषा है 'योग: कर्मसु कौशलम' अर्थात् कर्मों में लगे रहने पर भी ऐसे उपाय से कर्म करना कि वह बंधन का कारण न हो और कर्म करनेवाला उसी असंग या निर्लेप स्थिति में अपने को रख सके जो ज्ञान मार्गियों को मिलती है। इसी युक्ति का नाम बुद्धियोग है।

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तुम मेरे परममित्र हो इसलिए तुम्हें मैं यह विद्या सिखा रहा हूं। अर्जुन कहते हैं कि आप भगवान परमधाम, पवित्रतम , परमसत्य हैं। आप शाश्वत , दिव्य आदिपुरुष, अजन्मा तथा महानतम हैं। नारद , असित, देवल तथा व्यास जैसे समस्त महामुनि इस बात की पुष्टि करते हैं। आपने जो कहा है , उसे पूर्णरूप से मैं सत्य मानता हूं। हे प्रभू न तो देवता और न असुर आपके व्यक्तित्व को समझ सकते हैं। श्रीमद्भगवदगीता की विषय-वस्तु में पांच मूल सत्यों का ज्ञान निहित है, यथा- ईश्वर क्या है, जीव क्या है, प्रकृति क्या है, दृश्य जगत क्या है तथा यह काल द्वारा किस प्रकार नियंत्रित है और जीवों के कार्यकलाप क्या हैं।

गीता में भौतिक प्रकृति को अपरा प्रकृति तथा जीव को परा प्रकृति कहा गया है। भौतिक प्रकृति तीन गुणों से निर्मित है- सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण। इन्हीं तीनों गुणों से प्रत्येक जीव कर्मफल का दुख और सुख भोगते हैं। यही कर्म कहलाता है। भौतिक प्रकृति (अपरा) परमेश्वर की भिन्ना शक्ति है। परम ईश्वर की स्थिति परम चेतना स्वरूप है। जीव भी ईश्वर अंश होने से चेतन है। लेकिन दोनों में अंतर है। ईश्वर, जीव , प्रकृति, काल तथा कर्म में से कर्म को छोड.कर चार शाश्वत हैं। जीव बद्ध होता है। अर्थात व्यक्ति देहात्म बुद्धि में लीन रहने से अपने स्वरूप को भूल जाता है। गीता में बताया गया है कि ब्रह्म भी पूर्ण परमपुरुष के अधीन है। पूर्ण भगवान में अपार शक्तियां हैं। सांख्य दर्शन के अनुसार यह भौतिक जगत भी 24 तत्वों से भी समन्वित होने के कारण पूर्ण है। वैज्ञानिक शोध गीता की इस दृष्टि को पकड़ नहीं पाते हैं क्योंकि वे इंद्रियों पर आधारित हैं। गीता में प्रकृति के गुणों के अनुसार तीन प्रकार के कर्मों का उल्लेख है- सात्विक कर्म, राजसिक कर्म तथा तामसिक कर्म। इसी प्रकार सात्विक, राजसिक तथा तामसिक आहार के भी तीन भेद हैं। गीता में जीव और ईश्वर दोनों को सनातन बताया गया है। अत: गीता संदेश देती है कि हमें सनातन धर्म को जागृत करना है जो कि जीव की शाश्वत वृत्ति है, इसलिए सनातन धर्म किसी साम्प्रदायिक धर्म का सूचक नहीं है। जिसका न आदि है और न अंत है वह सनातन है। सनातन धर्म विश्व के समस्त लोगों का ही नहीं अपितु ब्रहमांड के समस्त जीवों का है। गीता मानती है कि ' जिनकी बुद्धि भौतिक इच्छाओं द्वारा चुराली गई है, वे देवताओं की शरण में जाते हैं और अपने-अपने स्वभाव के अनुसार पूजा करते हैं, भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरा परमधाम न तो सूर्य या चंद्रमा द्वारा, न ही अग्नि या बिजली द्वारा प्रकाशित होता है। जो लोग वहां पहुंच जाते हैं वे फिर कभी नहीं लौटते हैं, इसे गोलोक कहते हैं।

गीता के पंद्रवें अध्याय में भौतिक जगत का चित्रण करते हुए कहा है-भौतिक जगत वह वृक्ष है जिसकी जड़ें उर्ध्वमुखी हैं और शाखाएं अधोमुखी हैं। यह भौतिक जगत आध्यात्मिक जगत का प्रतिबिंब है। अत: इस अध्यात्मिक जगत को झूठे भौतिक भोगों के आकर्षणों में मोहग्रस्त जीव या मनुष्य प्रवेश नहीं कर पाता है।

गीता कहती हैं कि मृत्यु के समय ब्रह्म का चिंतन करने से वह जिस भाव को स्मरण करता है अगले जन्म में उस भाव को निश्चित रूप से प्राप्त होता है। इसलिए हेअर्जुन ! कृष्ण के रूप में मेरा सदैव चिंतन करो और युद्ध कर्म करते रहो। अर्जुन कहते हैं कि हे मधुसूदन ! आपने जिस योग पद्धति का संक्षेप में वर्णन किया है वह मेरे लिए अव्यवहारिक असहज प्रतीत होता है क्योंकि मन अस्थिर तथा चंचल है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं हे अर्जुन ! जो व्यक्ति पथ पर विचलित हुए बिना अपने मन को निरंतर मेरा स्मरण करने में व्यस्त रखता है और भगवान के रूप में मेरा ध्यान करता है, वह मुझको अवश्य प्राप्त होता है।

सारांश यह कि श्रीमद्भगवदगीता दिव्य साहित्य है जिसके अंदर मनुष्य की मुक्ति के लिए कर्म,ज्ञान और भक्तियोग का विस्तार से वर्णन किया गया है। अंत में श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! " सब धर्मों को त्यागकर मेरी ही शरण मेंआओ। मैं तुम्हें समस्त पापों से मुक्त कर दूंगा। तुम डरो मत। " व्यास संजय के गुरु थे और संजय स्वीकार करते हैं कि व्यास की कृपा से वह भगवान को समझ सके और गीता के अंत में धृतराष्ट से कहा " आप अपनी विजय की बात सोच रहे हैं लेकिन मेरा मत है कि जहां श्रीकृष्ण और अर्जुन उपस्थित हैं वहीं सम्पूर्ण श्री होगी। "

ब्रह्मसूत्र: वेदांत दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ है। इसके रचयिता महर्षि बादराय हैं। इसे वेदान्त सूत्र, उत्तर-मीमांसा सूत्र, शारीरक सूत्र और भिक्षु सूत्र आदि के नाम से भी जाना जाता है। इस पर अनेक आचार्यों ने भाष्य भी लिखे हैं। ब्रह्मसूत्र में उपनिषदों के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विचारों को सार रूप में एकीकृत किया गया है। ब्रह्मसूत्रों को न्याय प्रस्थान कहने का अर्थ है कि ये वेदान्त को पूर्णतः तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है। ब्रह्म एक लाक्षणिक सत्यहैं। ब्रह्म को किसी मूर्तरूप में हम नहीं देख सकते हैं। ब्रह्म को बोध कराने के लिए सूत्रकार द्वारा जिस सूत्र का निरुपण किया गया है , वह ब्रह्मसूत्र है। सूत्र किसे कहते हैं ?

थोड़े शब्दों में असंधिग्द बात को जिसके अंदर पुनरुक्ति नहीं है और कोई दोष नहीं है। श्ब्द और वाक्य को प्रयोग किया जाता है, उसे 'सूत्र' कहते हैं। 'सूत्र' वेदांत या उपनिषद को समझने के लिए हमारे पास कुछ आधारभूत स्पष्टता चाहिए। वेद एक प्रमाण है, उपनिषद एकप्रमाण है। ऐसे प्रमाण की एक निरदृष्टि वस्तु होती है, जैसे-आंख एक प्रमाण है। कान एक प्रमाण है। आंख का काम देखना है , कान का काम सुनना है। अत: आंख का काम कान नहीं कर सकता और कान का काम आंख नहीं कर सकती है। श्रुति एक प्रमाण है जिसको समझने के लिए इंद्रिय सामर्थ्य नहीं है। इसमें थोड़े-से शब्दों में परब्रह्म के स्वरूपका साङ्गोपाङ्ग निरूपण किया गया है, इसीलिये इसका नाम 'ब्रह्मसूत्र' है। उत्तरभाग की श्रुतियों में उपासना एवं ज्ञानकाण्ड है; इन दोनों की मीमांसा करनेवाले वेदान्त-दर्शन या ब्रह्मसूत्र को 'उत्तर मीमांसा' भी कहते हैं।दर्शनों में इमका स्थान सबसे ऊँचा है; क्योंकि इसमें जीवके परम प्राप्य एवं चरम पुरुषार्थ का प्रतिपादन किया गया है। प्रायः सभी सम्प्रदायोंके आचार्योंने ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखे हैं। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय हैं जिनके नाम हैं- समन्वय, अविरोध, साधन एवं फलाध्याय। प्रत्येक अध्याय के चार पाद हैं। कुल मिलाकर इसमें ५५५ सूत्र हैं । ब्रह्मसूत्र में शोक निवृत्ति के लिए इन चारों अध्यायों के एकत्व की बात कही गई है। व्यासजी कहते हैं कि सारा संसार ब्रह्ममय होने के कारण उपनिषद में जो विषय आए हैं वह भी सभी ब्रह्ममय है। ब्रह्मसूत्र में बताया गया है कि इस निर्गुण निराकार ब्रह्म को बिना सगुण साकार स्वरूप की कल्पना के समझा नहीं जा सकता है।

पहला अध्याय- समन्वय**:** इस अध्याय में भी चार पाद हैं। प्रथम पाद में ब्रह्म का प्रमाणों द्वारा प्रतिपादन है। आनंदमय शब्द, विज्ञानमय , आकाश, प्राण, ज्योति, तथा गायत्री नाम से श्रुति में परमब्रह्म का ही वर्णन है। दूसरे पाद में वेदांत वाक्यों में परमब्रह्म का निरूपण है। साथ ही हृदय गुहा में स्थित जीवात्मा तथा परमात्मा का प्रतिपादन है। तीसरे पाद में ब्रह्म को अक्षर एवं ओम से प्रतिपादित किया है। ज्योति और आकाश भी ब्रह्म के वाचक है। चौथे पाद में अव्यक्त शब्द पर विचार किया गया है।

दूसरा अध्याय- अविरोध: प्रथमपाद में ब्रह्म कारणवाद के विरुद्ध उठाई हुई शंका का समाधान। जीव और उनके कर्मों की अनादि सत्ता का प्रतिपादन। दूसरापाद, सांख्य मत प्रधान कारणवाद का खंडन। पांन्चरात्र की चर्चा। तीसरा पाद, ब्रह्म और जीव की चर्चा। चौथा पाद, इंद्रियों की उत्पत्ति पंचभूत से नहीं परमात्मा से होती है। प्राण की उत्पत्ति भी ब्रह्म से होती है।

तीसरा अध्याय-साधन: पहलापाद जीव और यम यातना का वर्णन। दूसरापाद, स्वप्न माया मात्र और शुभ और अशुभ का सूचक। कर्मो का फल परमात्मा ही देता है, कर्म नहीं। तीसरापाद, वेदांत वर्णित समस्त ब्रह्मविद्याओं की एकता। चौथापाद, ज्ञान से ही परमपुरुषार्थ की सिद्धि।

चौथाअध्याय- फलाध्याय: पहलापाद ब्रह्मविद्या में निरंतर अभ्यास की आवश्यकता। प्रारब्ध का भोग नाश होने पर ज्ञानी को ब्रह्म की प्राप्ति। दूसरा पाद उत्क्रमण काल में वाणी की अन्य इंद्रियों के साथ, मन की प्राण में और प्राण की जीवात्मा में स्थिति का कथन। तीसरा पाद, विभिन्न लोकों का प्रतिपादन। चौथेपाद, ब्रह्मलोक में पहुंचने वाले उपासकों की तीन गतियों का वर्णन।

ब्रह्मसूत्र जिसे वेदांत दर्शन भी कहते हैं, इसके पहले अध्याय का पहला पाद 'अथतोब्रह्मजिज्ञासा' से प्रारंभ होता है। इसका संपूर्ण ग्रन्थ सूत्ररूप में बद्ध है। इसके अंतिम अध्याय के अंतिमपाद का समापन जिस सूत्र से होता है, वह है "अनावृत्ति: शब्दादनावृत्ति: शब्दात्"। जिसका अर्थ है कि ब्रह्म लोक में गए हुए आत्मा का पुनरागमन नहीं होता।

भारतीय ज्ञान परम्परा

आचार्य शंकर वाणी –

कस्त्वं कोऽहं कुत आयात:, का मे जननी को मे तात:।
इति परिभावय सर्वमसारम्, विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारम्॥

श्रीमद्भगवतगीता

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसम्मोह: प्रनष्टस्ते धनञ्जय॥

हे पार्थ! क्या इस (गीता शास्त्र) को तूने एकाग्रचित्त से श्रवण किया? और हे धनञ्जय! क्या तेरा अज्ञानजनित मोह नष्ट हो गया?॥

नष्टो मोह: स्मृतिर्लब्धा त्वप्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसंदेह: करिष्ये वचनं तव॥

हे अच्युत! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया और मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है, अब मैं संशयरहित होकर स्थिर हूँ, अतः आपकी आज्ञा का पालन करूँगा॥

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मन: ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्॥

संजय बोले- इस प्रकार मैंने श्री वासुदेव के और महात्मा अर्जुन के इस अद्भुत रहस्ययुक्त, रोमांचकारक संवाद को सुना॥

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम्।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयत: स्वयम्॥

श्री व्यासजी की कृपा से दिव्य दृष्टि पाकर मैंने इस परम गोपनीय योग को अर्जुन के प्रति कहते हुए स्वयं योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण से प्रत्यक्ष सुना॥

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम्।
केशवार्जुनयो: पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहु: ॥

हे राजन! श्रीकृष्ण और अर्जुन के इस रहस्ययुक्त, कल्याण कारक और अद्भुत संवाद को पुनःपुनः स्मरण करके मैं बार-बार हर्षित हो रहा हूँ॥

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरे: ।
विस्मयो मे महान् राजन्हृष्यामि च पुन: पुन:॥

हे राजन्! श्रीहरि के उस अत्यंत विलक्षण रूप को भी पुनः-पुनः स्मरण करके मेरे चित्त में महान आश्चर्य होता है और मैं बार-बार हर्षित हो रहा हूँ॥

यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर: ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

हे राजन! जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन है, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है- ऐसा मेरा मत है॥

रामचरित मानस

आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन।
निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन॥

यद्यपि मैं सब प्रकार से हीन (नीच) हूँ, तो भी आज मैं धन्य हूँ, अत्यंत धन्य हूँ, जो श्री रामजी ने मुझे अपना 'निज जन' जानकर संत समागम दिया (आपसे मेरी भेंट कराई)॥

साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी। कबि कोबिद कृतग्य संन्यासी ॥
जोगी सूर सुतापस ग्यानी। धर्म निरत पंडित बिग्यानी ॥

साधक, सिद्ध, जीवनमुक्त, उदासीन (विरक्त), कवि, विद्वान, कर्म (रहस्य) के ज्ञाता, संन्यासी, योगी, शूरवीर, बड़े तपस्वी, ज्ञानी, धर्मपरायण, पंडित और विज्ञानी-॥

तरहिं न बिनु सेएँ मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥
सरन गएँ मो से अघ रासी । होहिं सुद्ध नमामि अबिनासी ॥

ये कोई भी मेरे स्वामी श्री रामजी का सेवन किए बिना नहीं तर सकते । मैं, उन्हीं श्री रामजी को बार-बार नमस्कार करता हूँ। जिनकी शरण जाने पर मुझ जैसे पापराशि भी शुद्ध हो जाते हैं, उन अविनाशी श्री रामजी को मैं नमस्कार करता हूँ॥

जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल
सो कृपाल मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल ॥

जिनका नाम जन्म-मरण रूपी रोग की (अव्यर्थ) औषध और तीनों भयंकर पीड़ाओं (आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक दुःखों) को हरने वाला है, वे कृपालु श्री रामजी मुझ पर और आप पर सदा प्रसन्न रहें ॥

सुनि भुसुंडि के बचन सुभ देखि राम पद नेह ।
बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह ॥

भुशुण्डिजी के मंगलमय वचन सुनकर और श्री रामजी के चरणों में उनका अतिशय प्रेम देखकर संदेह से भलीभाँति छूटे हुए गरुड़जी प्रेमसहित वचन बोले ॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुबीर भगति रस सानी ॥
राम चरन नूतन रत भई । माया जनित बिपति सब गई ॥

श्री रघुवीर के भक्ति रस में सनी हुई आपकी वाणी सुनकर मैं कृतकृत्य हो गया। श्री रामजी के चरणों में मेरी नवीन प्रीति हो गई और माया से उत्पन्न सारी विपत्ति चली गई ॥

मोह जलधि बोहित तुम्ह भए। मो कहँ नाथ बिबिध सुख दए ॥
मो पहिं होइ न प्रति उपकारा। बंदउँ तव पद बारहिं बारा ॥

मोह रूपी समुद्र में डूबते हुए मेरे लिए आप जहाज हुए। हे नाथ! आपने मुझे बहुत प्रकार के सुख दिए (परम सुखी कर दिया)। मुझसे इसका प्रत्युपकार (उपकार के बदले में उपकार) नहीं हो सकता । मैं तो आपके चरणों की बार-बार वंदना ही करता हूँ॥

पूरन काम राम अनुरागी । तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी ॥
संत बिटप सरिता गिरि धरनी । पर हित हेतु सबन्ह कै करनी ॥

आप पूर्णकाम हैं और श्री रामजी के प्रेमी हैं। हे तात! आपके समान कोई बड़भागी नहीं है। संत, वृक्ष, नदी, पर्वत और पृथ्वी- इन सबकी क्रिया पराए हित के लिए ही होती है ॥

संत हृदय नवनीत समाना। कहा कबिन्ह परि कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवइ नवनीता। पर सुख द्रवहिं संत सुपुनीता ॥

संतों का हृदय मक्खन के समान होता है, ऐसा कवियों ने कहा है, परंतु उन्होंने (असली बात) कहना नहीं जाना, क्योंकि मक्खन तो अपने को ताप मिलने से पिघलता है और परम पवित्र संत दूसरों के दुःख से पिघल जाते हैं ॥

नाना कर्म धर्म ब्रत दाना। संजम दम जप तप मख नाना ॥
भूत दया द्विज गुर सेवकाई। बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई ॥

अनेकों प्रकार के कर्म, धर्म, व्रत और दान, अनेकों संयम दम, जप, तप और यज्ञ, प्राणियों पर दया, ब्राह्मण और गुरु की सेवा, विद्या, विनय और विवेक की बड़ाई (आदि)-॥

मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिस्वास ॥

किंतु जो मनुष्य विश्वास मानकर यह कथा निरंतर सुनते हैं, वे बिना ही परिश्रम उस मुनि दुर्लभ हरि भक्ति को प्राप्त कर लेते हैं ॥

सोइ सर्बग्य गुनी सोइ ग्याता। सोइ महि मंडित पंडित दाता ॥
धर्म परायन सोइ कुल त्राता। राम चरन जा कर मन राता ॥

जिसका मन श्री रामजी के चरणों में अनुरक्त है, वही सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) है, वही गुणी है, वही ज्ञानी है। वही पृथ्वी का भूषण, पण्डित और दानी है। वही धर्मपरायण है और वही कुल का रक्षक है ॥

नीति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना ॥
सोइ कबि कोबिद सोइ रनधीरा । जो छल छाड़ि भजइ रघुबीरा ॥

जो छल छोड़कर श्री रघुवीर का भजन करता है, वही नीति में निपुण है, वही परम् बुद्धिमान है। उसी ने वेदों के सिद्धांत को भली-भाँति जाना है। वही कवि, वही विद्वान् तथा वही रणधीर है ॥

राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्बान ।
भाव सहित सो यह कथा करउ श्रवन पुट पान ॥

जो श्री रामजी के चरणों में प्रेम चाहता हो या मोक्षपद चाहता हो, वह इस कथा रूपी अमृत को प्रेमपूर्वक अपने कान रूपी दोने से पिए ॥

एहिं कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ॥
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥

(तुलसीदासजी कहते हैं-) इस कलिकाल में योग, यज्ञ, जप, तप, व्रत और पूजन आदि कोई दूसरा साधन नहीं है। बस, श्री रामजी का ही स्मरण करना, श्री रामजी का ही गुण गाना और निरंतर श्री रामजी के ही गुणसमूहों को सुनना चाहिए ॥

पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥

अरे मूर्ख मन! सुन, पतितों को भी पावन करने वाले श्री राम को भजकर किसने परमगति नहीं पाई ? गणिका, अजामिल, व्याध, गीध, गज आदि बहुत से दुष्टों को उन्होंने तार दिया। आभीर, यवन, किरात, खस, श्वपच (चाण्डाल) आदि जो अत्यंत पाप रूप ही हैं, वे भी केवल एक बार जिनका नाम लेकर पवित्र हो जाते हैं, उन श्री रामजी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥

हे श्री रघुवीर! मेरे समान कोई दीन नहीं है और आपके समान कोई दीनों का हित करने वाला नहीं है। ऐसा विचार कर हे रघुवंशमणि! मेरे जन्म-मरण के भयानक दुःख का हरण कर लीजिए ॥

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥

जैसे कामी को स्त्री प्रिय लगती है और लोभी को जैसे धन प्यारा लगता है, वैसे ही हे रघुनाथजी। हे रामजी! आप निरंतर मुझे प्रिय लगिए ॥

यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्तयै तु रामायणम् ।
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमः शान्तये ।
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥

श्रेष्ठ कवि भगवान् श्री शंकरजी ने पहले जिस दुर्गम मानस-रामायण की, श्री रामजी के चरणकमलों में नित्य-निरंतर (अनन्य) भक्ति प्राप्त होने के लिए रचना की थी, उस मानस-रामायण को श्री रघुनाथजी के नाम में निरत मानकर अपने अंतःकरण के अंधकार को मिटाने के लिए तुलसीदास ने इस मानस के रूप में भाषाबद्ध किया ॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ।
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये ।
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥

यह श्री रामचरित मानस पुण्य रूप, पापों का हरण करने वाला, सदा कल्याणकारी, विज्ञान और भक्ति को देने वाला, माया मोह

और मल का नाश करने वाला, परम निर्मल प्रेम रूपी जल से परिपूर्ण तथा मंगलमय है। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक इस मानसरोवर में गोता लगाते हैं, वे संसाररूपी सूर्य की अति प्रचण्ड किरणों से नहीं जलते ॥

बोध कथा

अहंकार से मुक्ति

अंगिरा ऋषि अपनी विद्वता के लिए प्रसिद्व थे। उदयन उनका एक प्रतिभावान शिष्य था। वे उसके प्रति अत्यन्त स्नेह रखते थे एक बार ऋषि ने महसूस किया कि उदयन के व्यवहार में अहंकार आने लगा था तथा व्यवहार परिवर्तन दिख रहा था। उसमें न सिर्फ अहंकार आने लगा था। बल्कि वह आलस्य का भी शिकार होता जा रहा था। ऋषि इससे दु:खी थे और उदयन को इस से बाहर निकालना चाहते थें उन्हें एक तरकीब सूझी। एक रात वे उदयन से किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे, तभी उन्होंने कहा, वत्स ! सामने रखी अंगीठी में देखो, कोयला दहकने के कारण कितना तेजस्वी लग रहा है। इसे निकाल कर मेरे सामने रख दो, जिससे मैं पास से इसकी तेजस्विता का अवलोकन कर सकूँ। उदयन ने कोयले को निकालकर अंगीटी से बाहर रख दिया। कुछ ही क्षणों में कोयला राख में परिवर्तित हो गया। ऋषि बोले, वत्स देखो, चमकदार कोयला अग्नि के तेज से विमुख होते ही राख बन गया। प्रतिभावान व्यक्ति भी अभ्यास से विमुख होते ही गुण विहीन हो जाता है। उदयन अपने गुरु का आशय समझ गया।

बोध वाक्य : '' चक्षु सम्पन्न व्यक्ति देखेंगे कि भारत का ब्रह्मज्ञान समस्त पृथ्वी का धर्म बनने लगा है। प्रात:कालीन सूर्य की अरुण किरणों से पूर्वदिशा आलोकित होने लगी है, परन्तु जब वह सूर्य मध्याह्न गगन में प्रकाशित होगा, उस सय उसकी दीप्ति से समग्र भूमण्डल दीप्तिमय हो उठेगा।'' - रवीन्द्र नाथ टैगोर

मासिक गीत / गान

अयि भुवन मन मोहनी !
निर्मल सूर्य करोज्ज्वल धरणी
जनक जननी-जननी।।-

अयिनली सिंधु जल धौत चरण तल !
अनिल विकंपित श्यामल अंचल
अंबर चुंबित भाल हिमाचल
शुभ्र तुषार किरीटिनी।।

प्रथम प्रभात उदय तव गगने
प्रथम साम रव तव तपोवने
प्रथम प्रचारित तव नव भुवने
कत वेद काव्य काहिनी।।

चिर कल्याणमयी तुमि मां धन्य
देशविदेश वितरिछ अन्न-
जाह्नवी, यमुना विगलित करुणा
पुन्य पीयूष स्तन्य पायिनी।
अयिभुवन मन मोहिनी। !
(रविन्द्र नाथ ठाकुर)

ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावषिष्यते ।।
ॐ शांति शांति शंति: ।।

----------00----------

आलोक -

- स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन योजना एवं कॅरियर मित्र के उद्देश्यों एवं गतिविधियों की जानकारी दी जाए।
- सुभाषित पंक्तियों और बोध वाक्यों में जीवन का सार होता है, इनमें अगाध जीवनानुभव होता है, इनको समझने से न केवल विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण होगा, अपितु वे इनसे जीवन में मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकेंगे इसलिए सभी विद्यार्थियों को सुभाषित और बोध वाक्यों तथा बोध कथाओं का मर्म समझाते हुए इनको कंठस्थ भी कराया जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को ध्यान में रखते हुए आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संकल्प बढ़ाया जाए। एक साल में सर्टिफिकेट, दो साल में डिप्लोमा एवं तीन साल में डिग्री सहित मल्टीपल एंट्री, मल्टीपल एग्जिट सिस्टम औरचॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस)की जानकारी प्रत्येक विद्यार्थी को दी जाए।
- व्याख्यानों हेतु बाह्य विशेषज्ञों की सहायता के लिए भोपाल कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है। महाविद्यालय के प्राध्यापकों /सहायक प्राध्यापकों के माध्यम से कक्षावार विद्यार्थियों को अभ्यास करवाया जाए ताकि वे अपनी क्षमता एवं रुचि को पहचान पायें।
- विद्यार्थियों को कॅरियर के प्रति जागरूक बनाने हेतु सप्ताह के हर शनिवार को विशेषज्ञों की सहायता से संकायवार प्रेरणात्मक व्याख्यानों का आयोजन ऑनलाइन/ऑफ़लाइन किया जाए तथा संबंधित संकाय में उपलब्ध कॅरियर अवसरों की अनिवार्यतः जानकारी दी जाए।
- संकाय और कक्षावार विद्यार्थियों से प्लेसमेंट हेतु उनकी रुचि, रुझान एवं कौशल की जानकारी लिखित में प्राप्त की जाए तथा महाविद्यालय में इसका संधारण किया जाए। उक्त जानकारी लेते समय जिले, प्रदेश एवं देश में उपलब्ध रोजगार अवसरों/संस्थाओं की प्रोफाइल/जॉब प्रोफाइल की जानकारी भी विद्यार्थियों को दी जाए। प्लेसमेंट हेतु स्थानीय एवं बाह्य रोजगार प्रदाताओं को आमंत्रित किया जाए। प्रकोष्ठ की कॅरियर लायब्रेरी को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।
- प्राचार्यों से आग्रह है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर अपने स्तर से इस हेतु कार्यवाही सुनिश्चित करने का कष्ट करें, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके। प्रत्येक महाविद्यालय में एक कॅरियर बोर्ड एवं कॅरियर मैगज़ीन का होना सुनिश्चित किया जाए। विद्यार्थियों कोरोजगार के अवसरों / सेवाओं की जानकारी अनिवार्यतः दी जाए।
- प्रदेश के सभी जिलों के महाविद्यालयों में निरंतर ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन कॅरियर अवसर मेलों का आयोजन किया जाएगा। समस्त महाविद्यालय अपने जिले में आयोजित होने वाले कॅरियर अवसर मेलों की संपूर्ण जानकारी एवं आयोजन तिथि, संबंधित आयोजक महाविद्यालय से प्राप्त कर विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें ताकि इच्छुक विद्यार्थियों को कॅरियर अवसर मेलों एवं प्लेसमेंट का लाभ प्राप्त हो सके ।
- महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कैंपस प्लेसमेंट के साथ व्यक्तित्व विकास में शासन की शिक्षक- अभिभावक योजना के माध्यम से सतत प्रयत्नशील रहना है। इस हेतु वार्षिक कैलेण्डर में व्यक्तित्व विकास के विषय भी शामिल किये जा रहे हैं ।
- आत्मनिर्भर भारत को दृष्टिगत रखते हुये जो महाविद्यालय ग्रामीण पृष्ठभूमि के हैं एवं जहाँ कृषि या कृषि इतर कार्यों से जुड़े परिवारों के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, ऐसे महाविद्यालय रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को कृषि उपकरणों यथा- वाटरपंप-मोटर, सीड ड्रील, स्प्रिंकलर, ड्रिप इरीगेशन उपकरण के संस्थापन, रख-रखाव एवं मरम्मत की जानकारी के साथ-साथ जैविक खेती, उद्यानिकी, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती, वर्मी कम्पोस्ट आदि की जानकारी/ प्रशिक्षण भी उपलब्ध करायें।

  क्रीड़ा के क्षेत्र में भी आजीविका के काफी अवसर मौजूद हैं, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में स्पोर्ट्स कोटा अंतर्गत । अतः महाविद्यालय में पदस्थ/ कार्यरत क्रीड़ा अधिकारी भी इच्छुक विद्यार्थियों को समय-समय पर क्रीड़ा के क्षेत्र में रोजगार संभावनाओं की जानकारी उपलब्ध कराएं।

(आयुक्त उच्च शिक्षा से अनुमोदित)

जावक क्रमांक 348 / एस.व्ही.सी.जी.एस/22 दिनांक 21.09.2022

निदेशक
स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना